

॥ श्रीः ॥

शिवराजभूषणकाव्य.

मराठी साम्राज्यके सस्थापक

श्रीशिवाजी महाराज छत्रपति यशःसंबलित
उनीके आश्रित

कविराज भूषण विरचित

रा रा काशीनाथ पाडुरग परब द्वारा सपादित
विद्वद्दर्पे श्रीयुत रेही

श्रीगोपाल भट्टात्मज त्रिविक्रम लालाजी
परिशोधित

और उनकी कुछ कवितासँ परिवर्धित
ब्रजभाषानिवद्ध अलंकारग्रन्थ
उसे,

यदुवशीयपुस्तकालयाधीश

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

प्राचीनग्रन्थप्रकाशकने

बड़े परिश्रमसे दुरुस्तर कविके चरित्रमाहित
मुयई.-निर्णयसागर छापखानेमें छपवाय प्रसिद्ध किया

आवृत्ति २ री

किंमत १ रुपया

भारतमातङ्ग सं० श्रीगङ्गालक्ष्मी घनश्यामणी



जन्म संवत् १९०१
षोडश वृषभ १२
शहर बीटा

निर्याण संवत् १९५४
मागशीर्ष शुक्र ९
भानागर

भू निवाम ५२ पर्व १० महीने १२ रोज

॥ श्रीः ॥

अर्पणपत्रिका.



कविकुलचक्रचूडामणि पचनदी पडितवर्य

श्रीगङ्गलालजी घनश्यामजी

आप

भारतमार्तण्ड, श्रीमठेदांतभट्टाचार्य, आशुकवि, शता-
वधानी, घटिकाशत, महर्षि, सप्रदायदुर्ग, श्रौतस्मार्त-
आर्यधर्मोद्धरणधुरीण, सार्वभौमप्रसिद्धपडितरत्न,
विनयवारिधि, इत्यादि अनेक उपपदालंकृत अशा-
श्वत वपूकों त्याग श्रीकृष्णपरमात्माके चरणकम-
लमें प्राप्त होनेसें, हतभाग्य भारतवर्ष जो विर-
हशोकसमुद्रमें निमग्न हुआ है, उसके स्मरणार्थ
महाकविराजभूषणविरचित यह काव्यग्रथ
काव्यशास्त्रमें आपकी अपूर्व तन्मयता अप्र-
तिममार्भिकता और लोकोत्तर प्रतिभा-
शक्ति, चमत्कृतिता, प्रभृतिका अनुभव

लै यह लघुकाव्यग्रंथरूपी पवित्र-

पुष्पाजलि आपकी सेवामें

अर्पण करता हूँ

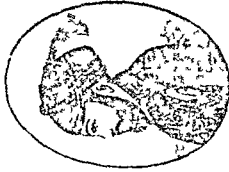
आपका विरही अनुचर,

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

प्राचीनग्रंथप्रकाशक



चादराहा औरगंज



जन्म तारीख १० अक्टोबर मल १६१९ इस्वी
बंगाल तारिख २१ पैमुआरी मा १००७ इस्वी
पक्षणी मल १०२८ मे १११८ तक
हयात कुल ९० वर्ष १७ रोम

महाराजा शिवाजीराम छत्रपति



जन्म वैशाख गुदि २ गक १५४९
स्वस्थ क्षेत्र गुदि १५ गक १६०२
इसवी सन १६२७ से १६८० तक
भू निवाण ५२ वर्ष ११ महीने १३ रोम

कविराज भूषणका वंशवृक्ष

(२) कवि भूषणजी

प्रथमपत्न्या नरेम राजा
छत्र साठ और पीछे न
शिपराज छत्रपती महाराज
के आश्रित थे

(३) कवि मतिरामजी

कुम्माउ नरेम राजा उद्देमचंद
भाउसिंह दाडा, कागपुदीका रा
जा छत्रमाउ शीनारंगे राजा फज्ज
मिहबुदाल और पीछे न गजाश
भनाथ मुल ही उर्फ सभाजी
शिवाजा यापुनइनोंके
आश्रित थे

(९) कवि

विनामणि उर्फ मणि मारु
नागपुरके राजा मवरदशाह भो
मलेक आश्रित थे

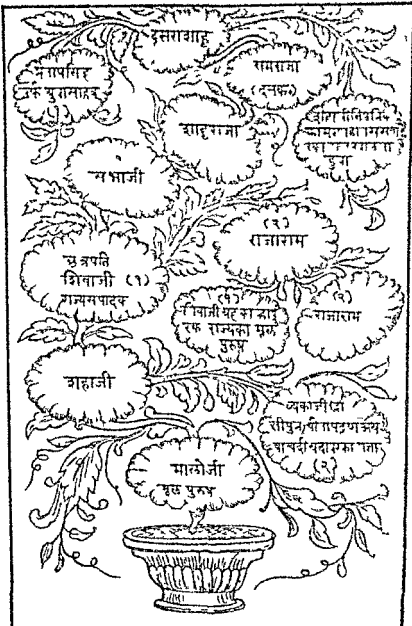
(१०) कवि

जटाशंकर उर्फ नीलकण्ठजी
काइके आश्रित नथे मात्र फुट
करकविता कर रहे थे

करघण गोनी
रत्नकरत्री
रुनोजिया ब्राह्मण



श्रीशिवानी महाराज छत्रपतिका वंशवृक्ष





राजा-भय तथा विनाशक, रामदास गुरुदास ॥ शठपशासन करत, तो कृष्णकविराय ॥ ॥



॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना सहित—

कविराज भूषणकी संक्षिप्त जीवनी.

प्रयोपोद्घातके १९ वे और २० वे पद्योंमें ज्ञात होता है कि वीरका-
व्यप्रसन्नशक्तिसम्पन्न भूषण कविने एक कश्यपगोत्री कन्नौजिया ब्राह्मणका
वश भूषित क्रियाधा नाम आपके पिताका रत्नाकर था अतुलकीतिकलाधर
पुण्यसलिला जाह्नवीकी मेहेरुयी यमुनाके सुखनासतटपर त्रिविक्रमपुर नामक
एक जनपदवास था उसी सौभाग्यशाली ग्रामके हमारे वीरभूषण भूषण थे

कानपुरखण्डमें टिकमापुर जो एक ग्राम है इतिहासोंसे जानाजाता है
कि यही उस त्रिविक्रमपुरका अपभ्रंश और कालव्याघात व्यतिक्रमसे परिव-
र्तित होकर इस रूपमें आगया है जो हो भूषणकवि अपने भाई चिन्ता-
मणि, मतिराम और जटाशकर उपनाम नीलकण्ठ भाइयोंके साथ उसी
त्रिविक्रमपुरमें जन्मे ये अपूर्व कविताशक्तिसम्पन्न पिता रत्नाकरने देवीकी
आराधना करके यही चार पुत्ररत्न पाये थे

चारों भाइयोंमें चिन्तामणि ज्येष्ठ थे वह नागपुरके सूर्यवशी राजाओं
भोसला, मकरदशाहके दरबारमें बहुत वर्षोंतक विराजमानथे उन्होंने
“छन्दविचार, काव्यविवेक, कविकुलकल्पतरु, और रामायण” यह
चार ग्रन्थ निर्माण किये हैं

जिम शाहजहाँ बादशाहकी महिमा सिंहासनभूमि इन्द्रप्रस्थमें
प्रदीप्तमान थी, जिसने इकतीस वर्षतक बृहद्भूमि भारतका शासन कियाथा उस
मुगलवशभूषणने भूषणके ज्येष्ठ भ्राता चिन्तामणिका सन् १६२७ से
१६९८ ईसाई तक बहुत कुछ सत्कार किया इन्होंने अपना नाम बहुधा
पद्योंमें मणिलाल करकभी लिखा है

हमको कवि भूपणकी जीवनी लिखतेसमय समालोचकोंका अपने ऊपर भूपणके भाताओंकी जीवनी विषयक दोषारोपणका भय रहतेभी भूपणके भ्रातरोंका उद्देश्य कियेबिना नष्ट रहजाता, परन्तु विस्तारभयसे ज्येष्ठ भ्राता चिन्तामणिका परिचय करानेकेबाद हम उनके अथ छोटे भाइयोंकी दोचार बातें कहकर भूपणही कविकी जीवनी आरम्भ करेंगे

भूपण कविके छोटे भाई मतिरामभी काव्यकर्ममें उडे चतुर और बलशालीमूर्ख थे इनका कुमायुँके राजा उदोचन्द, भावसिंह, हाडा कोटा, पन्नाके राजा छत्रशाह और सोलकी बगके राजा शम्भू उर्फ सम्भाजीके यहाँ जो शिवाजी महाराजके वीरकुमार (सन १६८० से १६८९) महाराष्ट्र राजगद्दीके शासक थे बहुत कुछ मगान था इनके छलितल्लाम, छन्दमार और रसरान ये तीन ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं सबसे छोटे भाई जटाशकर उपनाम नीलकण्ठजीकी बहुतसी स्फुट कविता देखी और सुनीजातीहै, परन्तु कोई मांगग्रन्थ अभीतक देखनेमें नहीं आया

भूपण कविराजका जन्म शिवमिहसरोजमें सम्बन्ध १७३८ विक्रमाब्द लिखा है, परन्तु कुछ प्रामाणिक नहीं बोध होता क्योंकि इसी शिवराजभूपण ग्रन्थके निर्माणकी तिथि कविराजने ग्रन्थात्ममें १७३० विक्रमाब्दकी लिखीहै इसीप्रकार उनके मरणकालकी तिथिभी नहीं मिलती

पूर्वसे हमारे देशमें जीवनचरित्र लिखनेकी कोई उचित प्रथा नहीं थी उसी कारणसे आज हम भूपणकी जन्ममरण तिथिके लियेभी तरसतेहैं, यदि यही दशा रही तो आधुनिक साहित्यके क्षमताशाली और सुयोग्य लेखकभी हम जानतेहैं कि बीस तीस वर्ष बाद इसी दशामें आजापगे और इसप्रकार भापारसियोंकी युगताके समय उनकी प्काद रचनाओंके छिपाररने वा जलादेनेपर उनके नामतकभी लुप्त होजाँपगे

इधर उधरकी कथा कहानियोंके सुनने देखने और प्काद बचे सुचे लेखोंके पढ़नेसे जानाजाताहै कि भूपण कविकों पहल कविताका कुछभी बोध न था अपने ज्येष्ठ भ्राता चिन्तामणिलिखीपति शाह औरगजेरके दरबारमें सुशोभित और राजकविपदसे परिशोभित देखकरभी आप अध्रद्धालुकी

भौति घरमें पडे रहतेथे उस ममय लोगोमें यह चरचा फैली कि चिन्ता-मणि ऐसे विलक्षण विदुषीबुद्धिके कवि हैं दिल्लीपतिके दरबारमें प्रतिष्ठा पातेहैं चारोंओर अपनी काव्यकौशलताका परिचय देते फिरते हैं और उनके भाई भूपण बोदेकी तरह हूस जने घरमें पडे रहतेहैं

होते २ यह चरचा बढौतक पहुँची फिसीने भूपणके कानतकभी पहुँचायी उनसे किसने कहा? उनके घरहीकी एक भ्रातृपत्नीने कहा, कैमें कहा? सीधे तरहसें नहीं बडे ऐंठ और तानेसे

असलको एकही टेढी और अभद्र बात जैसे तीक्ष्ण लगतीहै, तेजरश्म ताजी घोडेको चानुकसवारका एकही हण्टर जैसा महा हानिकारी और खानिदायक होताहै सतीको लाज्जनप्रकृति और लम्पटकी जवन्म का-मना और छेड उाड जैसे सर्वांगमें बेवचातीहै वचनबद्ध वीरभूपण भूषण-कोभी यह चरचा और ऐंठनका ताना बिपबॉणमा लगा आप घरसें निकल खडेहुए और गुणोंका अनुसन्धान करनेलगे

“शिवउत्रपतिचरित्र” पृष्ठ८८में लिखाहै कि दिल्लीके शाहँ शाह औराजकेयहाँ जिम चिन्तामणिकविका बडा आदर था उसके भाई भूपण जब अपनी भ्रातृपत्नीके वचनबाणसे विद्व दु गयी और धायल होकर निकले तब कुमायँक राजाकेयहाँ गये, और अपनी कवितासें उनको बहुतकुठ प्रसन्न किया राजा कुमायँने प्रसन्न हो एकलाख मुद्रा देकर कहा “ऐसा दाता पृथ्वीमें तुमको नहीं दृष्टिगत होगा” उसकी गर्वोक्ति सुन भूपणने उल्टा होकर कहा “ऐसे दाता तो भूमण्डलमें अनेक हैं” किन्तु आपने ऐसा याचक नहीं देखा या सुना होगा जो अहकारसे दियेहुए एकलक्षको तृणकेसमान समक्षता और उसे स्पर्श करनेमेंभी घृणा करता है

किसी २ ग्रथकारका मत है कि यह भूपणका कुमायँ राजसमागम शिवाजी महाराजके प्रख्यात समागमके पीछे हुआ था और राजाने यह समझकर यह गर्वोक्ति कहीथी कि शिवराज महाराजके यहाँ भूपणके मान प्रतिष्ठाका कोलाहल मिथ्या था कि भूपण धालोभवशही यहाँ आये हैं तत्र भूपणने अपने आगमनका कारण शिवाजी महाराजके यश प्रता-

रका गिरीक्षण बनाकर उमे साजधान किया और एकदक्ष परिव्याग कर शिवाजीके यश विस्तारमे प्रमन होकर वहाँसे चले आये ।

पन्नाके महाराजा छत्रसालसिंहने भूपण काविका बहुत समान किया और छ गास तक अपने दरबारसे जाने नहीं दिया

वार्ताविनोद नामक ग्रन्थमें "शाह और गनेव और कविभूषण" शीर्षक एक लेख प्रकाशित हुआथा उसमें ज्ञात हुआ कि मुगलशाहशाहोंके सममर्मरसे सुन्दर जीय शिगरपर अकबरशाह कर्तृक आरित सुवर्ण कलशको कई वर्षातक स्थायी रखनेवाला बट्टर और गनेवको काविकाका बहुत अनुराग था और पूर्व परिपाटीके अनुसार उमके दरबारमेंभी कविबलोगोंका आदर सम्मान होता था यद्यपि यह अनुराग और आदर सम्मान उसके गानसिक्त जात स्वतः गुण और अछत्रिम नहीं थे न अकरर आदिकी तरह उसका उन कवियोंकी शक्तिपर पूर्ण विश्वासहीथा, तथापि मुगलशाहानि और प्राचीन ग्रन्थानुसार प्रतिष्ठाहातिके भयसे इतना बाध्यसा होगयाथा कि इन कार्योंकेलिये उमका अनुराग स्वाभाविकसाही बोध होताथा कोई हिटू या यवन जब उसकी प्रतिष्ठामें कुछ पत्र पढता तब वह मोछोंपर हँसता और जनस्वभाव सुभ सामाय नियमानुसार कुछ उहें अर्थदानभी करताथा और अपनेको बडा सुविचारी, श्रेष्ठ, बुद्धिमान और विद्वान समझताथा वह किमीका कुछ विश्वास न करके कपटसेही अपनी राय अन्यापनीका परिचालित रखताथा अज्ञाचारका अपा धर्म समझताथा साराश यह कि वह विचारवान, दुरपयोगी अहमय बादशाह था उपकारकीतो स्वममेंभी उसे छीटें न पडो होंगी उसके पूर्वजोंकी सद्गानकनाका स्मरण करके जो कोई उपकार करताथा उसका वह शक्तिभर अपकार करताथा किसीकी विशेष प्रतिष्ठा और कीर्तिसे तो वह जलकर भस्म हो जाताथा उमकी औंधी खोपडीमें यह दुर्विचार निरतर घुसा रहाथा कि जो कोई सुयशी और कीर्तिमान यहाँ लोकप्रिय होगा वह हमारा राज्य छीन लेनेमेंभी समर्प होजायगा तात्पर्य यह कि छोटे मनका वह एक दुर्विचारी बडा बुद्धिमान बादशाह था

हमारा यह कहना अत्युक्ति नहीं कि आत्मस्तुतिमें अप्रसन्न होनेवाले मनुष्य ससारमें नहीं दृष्टिगत होने तौभी सौजन्यशील और निवृत्त मन अपनी बड़ाई सुनना पसन्द नहीं करते सुकीर्ति नहीं है जो सर्वाप्र प्रसिद्ध विद्वान और सुविचारी सत्यवादीके द्वारा पक्षपातपहित हो वही कि छोटासा अच्छा कार्य्यभी छोटी और साधारण बुद्धिमार्गमें महत् प्र तिष्ठाभाजन होजाताहै और बहुतसे मतलबी अप्रतिद्ध अछेडाग-अरन्य अर्थ गौंठनेकेलिये विशेष स्तुति कर बैठतेहैं इसको निष्पा मण्ड (सुशामद) कहतेहैं यह बड़ाही असाध्य और अनिष्टक है जो मनु कीर्ति तो युगयुगान्तरतक अमर करनेवाली एक महत् नीति है जो और खुशामदको निकटवर्ती समझनेवाले बहुतसे मनुष्यों को प्रेरित करे गे कि इनमें कितना अंतर है कवियोंकी निष्पा मण्ड (सुशामद) अहमन्य औरगजेन अपनेको सर्वश्रेष्ठ समझकर यह प्रवृत्ति प्रकृत था कविलोग अपनी युक्तिसें उसकी निष्पा मण्ड (सुशामद) के स्थानमें नौरगजेन, नौरगशाह आदि अहमन्य औरगजेन के रूपमें इन्कर उत्तानपाद बनाजाता था

एकसमय जब वह मयूरसनपर निरुत्तानपाद बनाकर विद्योने अपनी २ युक्तिसें उसकी निष्पा मण्ड (सुशामद) हुआ, परन्तु मण्डलीकी ओर लक्ष्य देकर इस प्रकार कहा

“हम बहुत दिनोंसे देखते हैं कि तुम लोग कवियोंकी सनागोईही करते आतेहो यह प्रवृत्ति तो हमें पसन्द ऐसी नहीं है । ऐसा तो हमें ही नहीं पसन्द है कि उमदा २ और तालीमर्द, लोकिन तुमलोग एसी युगान्तर कालों में कया कोई रास्तगो तुममें कौन ऐसा है जो हमारी कवियोंमें कोई ऐसी निन्दाभी करताहो, दृष्ट

यह कहनाथा, तब यह उसकी सडाफेकी बातें सुनकर कलिके खद्योतकपि जो चन्द्रमाके उदय पहलेही ठीर २ चमकतेथे छिपगये सकपकाकर सत्र अगक होरहे मुहँसे बात न निकली ओठोंपर पपरी उखडआयी

सबको स्रूपकाया देखकर एक जवान कवि तपाकसे उठा और कह नेलगा "ऐ मालिकेजहाँ, शाहोनेशाह खुशामद ऐसीहै जो गुदाकोंभी पसद है तो इस जरेपेनमिकदारकी क्या ताब जो खुशामद पसद नहो कुतरतका वारसाजभी उहीं चीजोंको जाहिर रखताहै जो देखनेमें उमदा, प्यारी और हरदिल अजीज होतीहै मगर उन्हें छिपाताहै, जिनसे इंसानको नफरत पैदा होतीहै इसी खयालसे हम शायरानकोंभी यही इरितपार करनापडा कि बडानी तडाई और नेकीको जाहिर करना और ऐबोंको बन्द रखना मगर जब आप फरमातेहैं कि हममें कोई रास्तगो है या नहीं लिहाजा चन्द अल्फाज गुजारिश करदेना बहुत जरूर हुआ "इसलिये कि रास्त मुजिबेरजाए गुदास्त कसन दीदम कि गुम गुद अज रहे रास्त "

"आठीजनाब मुअल्ला अल्फाव ! रास्त सनागो शायर तो हजारों हैं, इनकी कमी नहीं है, मगर हुजुर सच्ची तारीफके सुननेवालेहीं नहीं नजर-आते अगर सच्ची तारीफना सुननेवाला कोई मर्द सामने हो तो खाकसार रास्तगो हाजिर है"

जवान कविकी लच्छेदार और प्रमाणिक बातोंसे औरगजेब कुछ प्रसन्न तो हुआ परंतु सत्य स्तुतिके विषयमें मनहीमन शोचनेलगा कि नजाने यह क्या २ कहेगा ?

बोडे समयतक शोचकर औरगजेबने कहा "ऐ कविराज भूषण तू अभी मेरी रास्त तारीफ कर मैं खुशीसे सुननेका मुश्ताक हूँ "

क० भू०—"बादशाह मलामत ! मैं जानताहूँ कि जब आपकी रास्तगोयी करूँगा तब मेरा शिर शरीरमें अलग कियाजायगा इस कारण मैं निवेदन करताहूँ कि आप इस आज्ञाको मौकूफ रखें "

शा० औ०—"नहीं कविगज नहीं ! मैं तुम्हारे सब गुनाह गुआफ

करताहूँ तुमसें आज रास्त कहनेमें जो २ तरूसीरें होंगी, सब मुआफ कीजायेंगी ”

क० भू०—“आपका यह कहना उचित है, लेकिन जब मैं आपकी रास्तगोयी करूँगा, तब आपका यह मिजाज कुछ और होजायगा लिहाजा अगर हुजूर अपनी रास्तसना सुननेका इशतयाक रखतेहैं तो हमको फरमान लिख देवें और अमीरोंकी गवाही करा देव तो अलबत्तें खाकसारको रास्तगोयी करनेमें उज न होगा ”

औरगजेबने उस धुनमें भूपणकी इच्छानुमार फरमान लिखवाकर अमीरों और उमराओंकी गवाही करादी भूपणने वह फतवा लेकर अपने पास रक्खा और निडर होकर शात चितसें “किवलेकी ठौर बाप बादशाह शाहजहाँ” आदि कवित्त पदे उसके एक २ शब्द औरगजेबको कटारीकी तरह लगतेथे आनन निच्छति और ल्यौरियोंका बदलना औरगजेबके मनोगत क्रोधका सात्विक रूप दिखादेताथा

भूपणने यह सन ध्यान छोट इस कवित्तको पूरा करके धडाकेके साथ “हाथों+ तशबीन लिये प्रात उठि बन्दगीको” इत्यादि दूसरे कवित्तको ममाप्त किया

कडे शब्दोंकी कटारी, बलती बक्रोक्तिके विपन्न बाणसें प्रचलित औरगजेबके रोम प्रतिरोम तो पहलेही कवित्तसें जन्मयेथे बीच २ में कुछ निडर और निरकुश राजपूतोंका भूपणको धन्य २ कहकर सराहना और उत्साह देना औरगजेबकी प्रज्वलित क्रोधकृशानुमें घोकती आहुति हुआ आँखें प्रज्वलित तीपशिपामी चचल होकर शनिनेत्र होगई अग मस्मीभूत होआया इस कवित्तके अन्तमें कविका औरगजेबको सम्बोधन करके “सौ सौ चूहे खायके बिलाडी धैठी तपके” कहना बादशाहको सबनरहसें असह्य हुआ सर्वांग धरीउठा नेत्रोंसें क्रोधाग्निकी चिनगारियाँ प्रस्फुटित होनेलगी अपने वचनबद्धहोनेकी सीमा लँघकर अहमन्य अहमिती औरगजेबने शट मियांससें कृपाण पिनाली और भूपण सत्कीर्तिवा-

चीका शिरच्छेद करनेकेलिये गरजकर सिंहासनपर उद्यत हुआ बीचके मध्यस्थ विचारवानों और प्रतिष्ठित मन्त्रदाताओं एवं राजपूतोंने नीति और इम कार्प्यमें अधिक अपमानका डर दिखाकर औरगजेवकों शांत किया

औरगजेव शांत तो हुआ, किंतु क्रोधदग्ध हृदयकी ज्वाला शान्त नहीं हुई उमने तलवार म्यानकी और गरजकर कविकेलिये आज्ञा दी

“ऐ भूपण, चलाजा तू मेरे सामनेसे! मुझे मुँह मत दिखा मैं तेरी सूरतका खादार नहीं आज इन मुसाहिबों और पुराने बुजुगोंके कहनेसे तेगी जान बहशताहूँ मगर याद रख ! कि चहु अरसेमें तू जमीन और आस्मानके दोनो तबकसें जरूर अलग कियाजायगा

कविभूपण मानो उमकी बातकों बिना सुने और बिना किसीतरहकी चिन्ता किये निरकुश नाहरकी तरह गयदगतिमें वहासें चलतेहुए और घर पहुँच अपनी देवयानसी वेगवती केसरघोडीकों लेकर वहाँसें चलने की तैयारी करनेलगे

भूपणके पीठदेकर चञ्जानेपर औरगजेवके मनमें नजाने किम भगवद् प्रेरणासें उद्वेग उत्पन्न हुआ अपने कियेपर उदास होकर पश्चात्ताप करनेलगा और अपकीर्तियोंपर शाख पटककर अपने एक हँजी हँजीके पर्ण पारगत करि और कुछ मुसाहिबोंके साथ जुमामस्जिदमें नमाज पढनेकेलिये गया

जब नमाज पढकर औरगजेव शीतल माद त्रिविध पवनसें मन प्रसन्न करनेकी पराकाष्ठामें सडकपर एक बुर्जमें ऐसी इगितसें बैठाथा मानो अभीकी किसी अपनी भूलपर अपने अभिमानके जामेसे बाहर हो निर्मूल ममतापर पश्चात्ताप करताहो

“इतनेमें भूपणकवि अपनी विद्युतगमनी केसरपर चढे उधरसें निकले और शाहकों न नमकर समीपस्थ हँजीगिरीके पके भाटकों नमस्कार किया ”

“औरगजेवने इस अपमानका दुःख आपेमें रखकर धीरेसें उस भाटसें यह पूछनेकेलिये इगित किया कि भूपण बादशाहसें बिगडकर वहाँ जायगा कौन दिह्यीपति शाहशाहके शत्रुको शरण देनेवाला है?”

कविने बादशाहकी आज्ञा पाकर "है रग नौरंगशाहको, और न दूजो रग" इत्यादि दोहेमें पृथ

भूपण सानुभवीस भला औरगजेवका इगित और परोक्षसी आज्ञा कर्हा छिपसकतीहै चट समझगया और बीरोन्मत्त "कितेक देश जीते दलके बल" यह सैया उत्तरमें कहकर अपनी केसरियों एड दबायी कि वह विजयीसी तडपकर उड चली क्योंकि भूपणने इस सैयाका औरगजेवपर भविष्यमें होनेवाला प्रभाव पहलेहीसे अनुभव कररक्खा था

भूपणके युगल कवित्तकटारसें घायल औरगजेवके घाय नमाज आ दिकी परमात्माप्रार्थनामें यद्यपि मुरझागये, परन्तु इस नये विपके बुझाये जॉणने उसका शरीर विषमय करके उसे त्रिक्षित करदिया शिवाजीसे महा शत्रुकी बडाई और अपनी निन्दा साथही सुनकर औरगजेव आपादमस्तक जलउठा और यह शोचकर अपने मनमें बहुतही बुझलाया कि भूपणको उसी सभामे उन मुमाहिरो और राजपूतोसे त्रिक्त होकर क्यों न काटडाला

वह शिवाजीके प्रजल पराक्रममे परिचित था शिवाजीकी जिसदिन दिल्लीमें एकांर तलार चमकी थी कादर यवनोकी सेना जिसदिन बजरग बहादुर शिवाजीराजकी काठिन असिधारसें छेदीगयी उसदिनकी बात औरगजेव भूलनहींगया था वह जानताथा कि जिस अगाध बली शिवा जीने बीजापुर विध्वंस करके सिंहासन दिल्लीपर हाथ फेराथा उसकी उल्लित बीरतामें भूपणकी बीरकविताका होम जब होगा तब उसकी प्रताप और बलती क्रोधाग्निनी लवरें दिल्ली कदरीप्य हमारे सिंहासन शिखरको मर्दन करदेगी

अपनी आगन्तुक दशा और त्रिपदकी शकामें भयभीत प्रगट क्रोधमें कौपती जिहासें उमने आज्ञा दी "जो भूपणको मारडालेगा वा जीता पकड लावेगा उसको दश गौज इनाम मिलेगे जोलोग वहाँ उपस्थित थे जॉध पीठकर भूपणको मारने और पकटनेकी कामनामें केसरघोडीके पीछे हुए

भला यह भूपणकी कामनाप्रद केसर कहा यह गुडिये हौजी २ के चेले ! कहीं पकड सकतेहैं ? वह बेपरवाली केसर परवाली घोडीके स-

मान वेगल टूटती अर्थात् और वही यद् भूगणनामें भूगणकी गणना-
 नेकी कामना करनेवाले दुष्ट पाकर टीक डेती मारतना राक्षसी एक
 मोक्षकी पूर्ण दीर्घके अन्तरण कावनामें गूण दोषों में गौरी बान्ने २
 भूगण अर्थात् बगरीपर लार्थ मग/क/ सुग/ मद्र/ सुहा/भेमें एकचार
 डा पाकर पोनादि औगोंमें भगवत अक्षय होवे

कभी तमोभ मत्त मातगणों कोधनकी कामना करनेकाल में कनाग
 हाकी आगतवा पतिगणा पतिना गणिका के सुवीचन सुखस्व वा
 लों पैसा कुटिल स्वयं विप्रप्रसर लार्थ दुष्ट कामनामें ए मत्त
 होना, टीक २ उरी मग टा/पा/ पाटश काय कर्त्त वगधपर धू
 डालनेवाले शोभ गणकी भाते व्यागनेरक दुष्ट गारदी पर कामना
 हीन होकर विन धावे आँसुओंमें सरक मुगवर अभिमत निष्कारती
 शार्द देव भूगणों जगत्त होवेरा अनुभव करनाहुगा एक वि शयमछोट-
 कर वा "क्या पानी भाग मथा "

हरे ! दुष्ट दुःखार्थ पायी ! नेरी पिशा १ गिगयी, गिरी अक्षय गिरी
 अत्र क्षिपाभीकी शृवाण रगभूमिमें चमकी थी तत्र गिरी

वही घाताविनादका मन्वाक आगे चरकर "गिरीकी महाराज गिर
 भूगण कवि" दीर्घक छेगमें गिगनादे "आरगजेनके मैनिमें अक्षय
 हुआ भूगण मैजिडे से करता मघनवन और पहाडोंकी मपावनी गुपा-
 ओकों हेल्ता शरॉड शाटियोंक, नुग बॉटे जीर पथरीली भूमिया नु म
 शेळता, गानीगों जीर घाटियोंको पार करता शिवाजीकी राजगदी रायग-
 टके पास पहुँचा वही प्राकृतिक पथरीली भूमिके गडहोंमें निर्भर नीर
 देगकर विश्राम करनेकों से चचाया गडहोंका मद २ जल प्रसहित
 होकर एक त्सरेमें समग करना जीर डाके दर्पणादरमें हरिण वृक्षोंकी
 छायाका प्रतिबिम्ब देकर भूगणका मुखाया मग हरा होआया धीरे २
 उरा स्थस्थानमें टहलनेकी तरह चलोग्या गिरी चुने कदम चलकर
 एकदम चीक पटा सहसा देरना है, एक नगर छोडेयी माग धाम्ने थे
 हलकदमी कररहा है सुन्दर मुखमण्डलपर परिश्रम सीकर देरनेमें बोध

होताथा, वह कोई दूरकी राह तै करके आया है कभी उसका दो चार फाल टहलना फिर घोडेको धाप देकर सुहराना, चुचकारना, अभी घोडेकी पीठपरसे उसका उतरना बताये देताथा उस पुरपका उन्नत ललाट, विशाल भुजाएँ और उद्वद्योत आनन देखनेसे वह कोई बडा भाग्यवानसा बोध हुआ तेजस्वीके शुभाननकी उज्ज्वल प्रभा और मस्तकमे देवीभक्तका आरक्त चिह देकर भूपणने ठीक आस्तिक हिन्दू समझा शिरपर बहुमूल्य बाँकी पगडी दिव्य मस्तकको टुनी छवि सम्पादन करतीथी गलेमें हीरे, मोती और सुवर्णकी गगायमुनी माला देखकर चकाचौध लगनातीथी, लखनौ आसाही अगरक्षेके जिसके हाथ फणाकार मुशोभित थे, नीचेसे सुवर्णकी पहुँचियाँ ऊपरतक आन छोडती थी उस ऐश्वर्यशाली श्रीमय पुरपके बायें हाथमें प्राचीन शिल्पकारी भरी झकागोर तलवार देखकर उस पुरपके किस महत कुलके वीरवश और वीरप्रकृतिके होनेका अनुभव होजाताथा भूपणने आर्यनीतिके अनुसार सभ्यतापूर्वक उनको प्रणाम किया उस तेजस्वीनेभी विना किसीप्रकारके आडम्बरके प्रणाम करके पूछा "तुम कौन हो ?"

कवि भूपण—"मै अन्तर्बदका रहनेवाला कन्नौजिया ब्राह्मण हूँ नाम मेरा कवि भूपण और पिताका नाम रत्नाकर है "

तेजस्वी पुरुष—"आप कहाँसे आते हो?"

कवि भूपण—"मै बहुत दिनोंसे दिल्ली दरबार शाह ओरगजेवके यहाँ था इन दिनों मैने उसकी आज्ञानुमार उसका सत्कीर्तन किया, उसने विरक्ति प्रकाश की तब मुझे वह दरवार त्यागकर इधर आना पडा "

तेजस्वी पुरुष—"आपने अब कहा जायेका ठाना है ?"

कवि भूपण—"मेरा चित्तार अब हिन्दुगर्भ और हिन्दु देशका उद्धार करनेवाडे महाराज शिवाजीके दरवारमे जानेका है ?"

तेजस्वी पुरुष—"जब आप कवि होकर उनके दरवारमें जानेकी अभिलाषा करतेहैं तब तो उनकी कीर्तिरूपी कुठ कपिताभी आपने कीहोगी यदि की है तो उसमेंसे कुछ सुनाकर अनुग्रह करेंगे ?"

कवि भूषण—“आपक तो कई प्रश्न होचुके जिनका मैने नम्रतात उत्तर विवेदन किया अरु एकवार मर प्रश्नका उत्तर अनुग्रह करे तो मैं उनही जीनि सुनाना प्रारम्भ करूँ ”

तेजस्वी पुरुष—“आप पुष्टिये मैं प्रार्थनासे उत्तर दूँगा ”

कवि भूषण—“आप धीन हैं ? शिवाजीके दरबारमें क्या दर्जा भोगते हैं ? अथवा उसमें आपका पैसा सम्बन्ध है ?”

तेजस्वी पुरुष—“मैं शिवाजीका मेतापति हूँ मुझे कविता सुननेकी बड़ी लाग्गमा रहाकरती है तिमपरभी अपने स्वाधीकी कविता । मैं राजनीतिके अनुसार उाका छटा अग हूँ ”

कवि भूषण—“मरदार आपसे योग्य वीर यदि हमारी कविता सुननेमें व्रद्धा प्रकाश करें तो हमारा परिश्रम सफल हो अच्छ आप मुनिये” कह कर “ इन्द्र जिमि जम्भपर घाडर सुअम्भपर” अतका “तिमि म्लेच्छ वशपर शेर शिवराज हूँ” कविने यह कवित्त ऐसी गर्जसे कहा कि सुननेवाला पथ प्रचलनसे शिथिल वीर शान्त पुरुष एकएक वीरताके आवेगमें तनताउठा रोगाच होगया औरों आरक्त होजायी, पुन कविने कविता कहनेका इगित किया

कविने फिर पदा, तेजस्वीकी अभिलाषा फिर बढी उसने फिर कहनेका इगित किया कविने फिर पदा इसीतरह उस वीर पुरुषका उत्साह और कवित्त सुननेकी लाग्गमा बढतीगयी भूषण कहतागया

इसीप्रकार भूषण बारबार कवित्त पदकर शिथिल हुए और कवित्त सुननेकी आगा रूद करनेकेलिये उस उत्साही पुरुषमें प्रार्थना की कुछ लोगोंका कहना है कि कविने भावनाकार एकही कवित्तको कहा, परन्तु कुछ एक यह बयान करनेहैं कि हरवार नये कवित्त बनाकर कवि कहते गये, जिनका संग्रह “शिवावावनी” है जो हो बारबार कवित्त सुननेपर भी उस तेजस्वी पुरुषकी तृष्णा शान्त नहीं हुई और भूषणकी प्रार्थनापर भी अपनी अभिलाषा और सुननेकी प्रगट की फिरभी कविने शिथिलताके

मारे वही प्रार्थना की, तब उत्साह भगकर वीरपुरुषको अपनी आज्ञा रो-
कना पड़ी और कविसे यह कहकर कि "आपने मुझे शिवाजीकी कीर्ति
सुनाई, इसका मैं परमबाधित हूँ आपको उनसे दरबारमें भेट करनेके वि-
षयमें सहायता दूँगा" घोड़ेपर चढ़ चलते हुए

दूसरेदिन भूपण अखण्डप्रतापी महाराष्ट्र भोंसलाकुलभूषण शिवाजी म-
हाराजको दरबारमें पहुँचे शिवाजीकी राजगद्दी कुठ प्राचीन तो न थी,
तीभी प्राचीन राजनीतिके अनुकूल राजदरबार देवकर बहुत प्रसन्न हुए
और अपने पूर्वपरिचिन सेनापतिकों खोजनेलगे बहुतकुठ खोजा किन्तु
पता न पाया तब उनकी राजमभाप्रणालिके अनुसार सभामें प्रवेश किया

सभामें श्री-य सुवर्णासिंहासनपर एक तेजस्वी विशालमस्तक पुरुषको
बखालकार विभूषित आसीन देवकर बहुत प्रसन्न हुआ जातेही राजसभा
प्रवेशानुसार भूपणने नमकर कलका सुनायाहुआ पहला कवित्त पद आ-
शीर्वाद किया कवित्त कहना प्रारम्भ करतेही मंत्र मरहठे और द्राक्षण
गुणज्ञ एम सरदारोंकी भूपणकीओर टकटकी लगगयी सभास होनेपर
एक सेनापतिने उठकर भूपणको योग्य स्थान दिखा बैठनेकी सैन की,
और उसीके अनुसार कवि यथायोग्य आसनपर बैठा

कुछक समय पश्चात् भूपणने देखा तो सिंहासनपरका बैठाहुआ मनुष्य
वही बोध हुआ जो कल मार्गमें मिलाथा और जिसने उनसे वाचनवार
आग्रहसे कवित्त सुननेपर भी और सुननेकी आकांक्षा प्रगट कीथी भूष
णको यह जानकर बड़ा आश्चर्य और विकलता हुई, परन्तु पीछेसे यह
समझकर कि मने कल कोई बात किसीप्रकार अनुचित्त वा मर्पादालय-
नकी नहीं की थी समझकर, शान्त हुआ

इस अहताप पश्चात्तापको तीक्ष्णबुद्धि तेजमान महाराज शिवाजीने
भूपणकी आननाकृति देखकर ताडलिया और कविकों निडर करनेके
हेतु कहा "ऐ मतिमा भूपण जी ! म्हेच्छ कुलागारका अब कुछ भय
मन करो और नि शक रहकर मेरे दरबारकी छवि वृद्धि करो हमको तु-
हारे ऐसे वीरसोहीपक व आवश्यकता थी.

कामनादायिनी भगवतीने वह अभिलाषा आर पूरी की अब कुछ सकोच शका न करो म्लेच्छ दरबार और वहाँसे इधर आनेकी व्यवस्था वर्णन करो ”

महाराजकी अभयवाणीसे कविने निर्भय होकर नीचेके लिखे हुए तीन कवित्त कहे —

१ “ जोराकर जैहँ जूमलाहके नरस पर ”

२ “ दाढीके रणयनकी दाहीसी रहत छाती ”

३ “ उत्तरि पलगतें जिन दीयो ना धरापे पग ”

तीनों कवित्तोंको सुनकर मारे शिरोहासके शिवाजीका दरबार गरज-उठा शिवाजी महाराजने बीरतासे अधीरसा होकर कहा “ऐ कविराज-भूषण कल जो तुमने मुझे कविता सुनाई थी, उसे सौबार मुझे सुननेकी और मी प्राम, सी हाथी और सो शिरोपाय देनेकी अभिलाषा थी, परन्तु केवल बावनबार सुनाकर तुम शिथिल हुए इस कारण तुल्ले बावन गँव, बावन हाथी और बावन आपादमस्तक बख्त दिये वह अभी मिलेंगे और आजसे इस शिवाजीके राजकविका पद आपको दियानाता है

कविने नम्रतापूर्वक निवेदन किया —ऐश्वर्यवान् महाराजन् ! मे गँव, हाथी और बख्तकेलिये नहीं आया, परन्तु मुझे आपका शीर्ष्य और आर्य्याभिमान सुनकर आपके आश्रित रहनेकी अभिलाषा है आपके शूर योद्धाओंके हाथमें शत्रु म्लेच्छोंका नाश और सहार देखनेकी कामना है दुष्ट दुराचारियोंका दमन होकर आपके सुशासन और अखण्ड प्रतापको आर्य्यावर्त्तमें प्रदीप्तमान देखनेकी वासना है यही मुझे बड़ा पुरस्कार है स्वदेशाभिमान दर्शनसे विशेष मान्य पुरस्कार मेरी आर्ग्वोंमें दूसरा नहीं आता ”

तत्रापि शिवाजी महाराजने भूषणको मनमाना पुरस्कार और अपने यहाँ चिरकालकेलिये स्थान दिया भूषण उसी समयसे अखण्ड यशधारी अटलक्रीति और महत्वभाजन आर्य्यकुलोजागर शिवाजी महाराजके राजकवि हुए

इस सुन्दर समागम और महत् पदका सुख भोगकर भूपणको कई वर्षोंके बाद फिर अपने घरपर जानेकी इच्छा हुई। आग्रह और निवेदन करनेपर बहुतकुछ मान सन्मान और दान महानके साथ महातेजस्वी शिवाजी महाराजने शीघ्र लौट आनेकी आज्ञा करके भूपणकविकी विदाई की। भूपण शीघ्र लौटनेकी आज्ञा शिरोधार्यरूपर प्रतिज्ञाबद्ध हो घर आये।

अतिसमय मार्गमें पन्नाके राजा छत्रशाल्जी महाराजसे मिले। महाराज छत्रशाल्ने मुना कि शिवाजीके पुरस्कारसे सन्तुष्ट होकर भूपणजी घर जाते हैं। भला मैं किम योग्यहूँ और मेरा क्षुद्रसमाग उनको कहाँ तुष्टिकर होगा। इसीप्रकार शोच विचारकर छत्रशाल्ने अपनेको समानके योग्य न जान भूपण कविकी सवारीके कहारोंके साथ होकर अपने कंधेपर सगरी रखली। भूपणने यह सत्कार देखकर हाहाकार किया और अपनी प्रतिष्ठा जान महाराजकी गुण ग्राहकतामें नीचे लिखा कवित्त पडा —

“साहूकों सराहों कि सराहों छत्रशालकों” इसीप्रकार दश कवित्त कहे जो शिवाबावनीके साथ छत्रशालदशक नामसे हमने दूसरे पुस्तकमें प्रकाश किये हैं। जिन्हे सुनकर महाराज छत्रशाल्जी गदगद हो अपने भाग्यको श्रद्धापूर्वक सराहकर कृतार्थ हुए।

वार्ताविनोदकारहा लिखता है कि जब भूपण घर पहुँचे तो उनके घरमें बड़ा आनन्द मनायागया। लोभके टूटे फुटे शत्रुभी मित्र होकर आजुरे घघाई होनेलगीं, और यह समाचार और आनन्द मगलकी बात दिहली बादशाहके दरबारतक पहुँची।

बादशाहने अपने कवि चिन्तामणिसँ उनके भाई भूपणको दरबारमें हाजिर आनेका आदेश किया। चिन्तामणिने दरबारमें घर जाकर भूपणसे दरबारमें चलनेका आग्रह किया। भूपणने कहा “सुनो हम बादशाहके प्राणनाशक रक्तध्यासे शिवाजीके प्रशसक हैं। यदि हमसे उनकी स्तुति सुनना है तब तो हम आ सकते हैं।”

चिन्तामणिने बादशाहसे भूपणकी प्रतिज्ञा कही। बादशाहनेभी स्वीकारकर आनेका अनुरोध किया। भूपण दरबारमें आये और बादशाहने

उनसे कुठ काव्य कहनेका आग्रह किया तब कविने कहा कि, "आप पहले हाथ धोडालें तब हमारे कवित्ते मुनें" बादशाहने कारण पूँडा, भूपणने उत्तर दिया "हमारे भाई चिन्तामणि आपको नित्य शृंगारकी कवित्तें मुनायाकरते हैं और आपका हाथ शृंगाररसके पर्यश होता है किन्तु मेरे कवित्तोंसे आपका हाथ मूँछोंपर जावेगा "

बादशाहने कहा "अच्छा मैं हाथ धोताहूँ परन्तु यदि मूँछोंपर हाथ न आया तो तुझारा शिर काट लेंगे "

भूपणने प्रमाण किया और बादशाहने हाथ धोया तब भूपणकवि बीररममें पगे कवित्तोंके मत्र जगानेलेगे शिवाजीका यशवर्णन बादशाहको असह्य हुआ तब उमने आज्ञा दी " हग सार्वभौमिक राजा हैं सब राजा हमको कर देतेहैं शिवाजी एक मण्डलका राजा है उसका यश मण्डलीक राजाओंमें वर्णन करो "

तब भूपणकविने कवित्तमें वर्णन किया कि सर्व राजा पृथ्वीके पुष्प वृक्ष हैं और आप भ्रमर हैं उसीके समान पुष्पोंका आप मधु लेते हैं, परन्तु शिवाजी चम्पकवृक्ष हैं, जिनके पास भ्रमर नहीं जासकता ऐसे अभिप्रायका यह कवित्त कहा " अली अवरगजेव चंपा सिवराज हूँ " तब बादशाहने कहा " हाथ जिसलिये धुलवाये वह उद्योग करो "

तब भूपणने छ कवित्तें उरठुष्ट बीररमकी कहीं और सातवाँ कहते २ बादशाहका हाथ मूँछोंपर पहुँचा और चट भूपणने सातवीं कवित्त पुरीकी तब बादशाह बहुत प्रसन्न हुए और बहुतकुछ पारितोषिक देकर भूपणको विदा किया यह समाचार शिवाजी महाराजके उस वृत्तांतवाहकने जो उनकी ओरसे दिल्लीके दरवारमें रहता था, शिवाजीके पास पहुँचाया महाराजने चट आज्ञा लिखकर उन्हें बुलालिया और भूपणकविने मुखपूर्वक वीरता क्षेत्रमें अपनी शक्ति परिचायित कर ससारयात्रा निर्वाह की इनके बनाये हुए शिवराजभूपण, भूपणहजारा, भूपणउल्लास, भूपणउल्लास ये चार ग्रंथ सुनेगये हैं ब्रजभाषाके प्रसिद्ध कवि अन्तरवेदातरगत बनपुरा निवासी कालिदाम अपने हजारा नामके ग्रंथमें इन्हीं कविराज भू-

पणके नवरससपन ७० कवित्तें सनिवेशित कियेहैं (जो कवि सवत् १९४९ में निधमान थे, उपनाम आपका त्रिपाठी या)

इम शिवराजभूषण प्रथके अन्तमे इमकी रचनाका समय चिरुमी सम्बत् १७३० लिखा है और उससे यहभी स्पष्ट है कि शिवाजीमहाराजकी राज्यतिलक शालिवाहन शके १६९६ में हुआ-ना उसके एक वर्ष पहले कविने इस प्रथको निर्माण किया बोध होता है इसम कविने अलकारोंका उत्तम रीतिसे वर्णन किया है और उदाहरणोंमें जो पद्य लिखे हैं वह सर्वतोभाय यशशाली महाराज शिवाजीके गुण और वृत्तक्रम वर्णनसे परिपूर्ण हैं ब्रजभाषाके प्रसिद्ध कवि विहारीलाल और सीतल हमारे इन्ही भूषण कविके वंशज थे यहाँतक कविराज भूषणकी सक्षिप्त जीवनीका वृत्तांत लिख समाप्तिके पूर्व उस सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरके चरणकमलोंमें कोटिशोध यवाद् और प्रणामपुष्पांजलि निवेदन करते हमको महान् आनन्द और उत्साह होता है कि जिसने आज इस दुर्लभ और प्राचीन "शिवराजभूषण" नामक काव्यप्रथकी द्वितीयावृत्ति प्रकाश करनेमें हमें शक्तिमान किया

यह अपूर्व और प्राचीन प्रथकी एक प्रति रीवा और जयपुर महाराजासँ लब्धप्रतिष्ठ महाशय त्रिपाठी श्रीयुत स्यामनाथनीके प्रथमप्रहालयसँ जयपुर महाराजाश्रित महामहोपाध्याय पंडित श्रीदुर्गाप्रसादजी द्वारा मुंबईके प्रसिद्ध विद्वान रा रा काशीनाथ पाटुरग परबको प्राप्त हुईथी

उक्त महाशय परबने वह पुस्तक रा रा जनार्दन बालाजी मोडक (डेकन कोलेज) को प्रकाश करनेकेलिये दिया महाशय मोडकने उक्त पंडित दुर्गाप्रसादजीकी सहायतासे शुद्ध कर "महाराष्ट्र काव्येतिहास सप्तह" के तीसमें खंडमे इसकी सन १८८९ में उपा प्रसिद्ध किया

सच है कि ये तीनों ग्रन्थ (पंडित दुर्गाप्रसादजी, परब और मोडक) जो परिश्रम न करते तो जिसमें आर्यधर्मसंरक्षक महाराजा शिवाजी उत्पत्तिकी अप्रतिम वीरताका वर्णन है ऐसा यह प्रथ प्रसिद्ध न होता

वास्तवमें ये तीना महाशयोंका समस्त महाराष्ट्रप्रजाके उपरही नहीं किंतु आर्यधर्माभिमानी, काव्यज्ञ, रमिक, सुहृदय लोगोंपरभी अवर्णनीय उपकार

हुये हैं, और उन्होंने जो प्रथमावृत्ति प्रकाश करनेमें महार परिश्रम किये वह अवश्य वर्णनीय और प्रशमनीय है -

इस काव्यकी शेष प्रति उक्त महाशय परवने मुझे दी और पूर्ण शुद्धतापूर्वक कविकी जीवनीसमेत द्वितीयावृत्ति प्रकाश करनेको मुझे उत्तेजित किया उसपरमें उम्मेद हो मैंने प्रथसाहित्य जमाकर मेरे मित्र बागू गोपालराम गह्वरनिवासी जो उस बग्न भाषाभषण पत्रके संपादक थे उनसे प्रार्थना की उक्त महाशयने मेरे साहित्यो परसे शुद्ध हिन्दीमें कविकी सक्षिप्त जीवनी लिख भेजनेका परिश्रम ले मुझे कृतार्थ किया वास्ते उनका भी मैं बड़ा उपकृत हु, अतएव इस अवसरपर उक्त महाशयोंके उपकार कठोरवसे प्रसिद्ध करनेमें मुझे बड़ा आनन्द होता है

इस वीररसभरित प्रथकी द्वितीयावृत्ति कुछ दुरूस्तीपूर्वक उठानेकी मुझे पहलेहीसे बड़ी उत्कठा थी, लेकिन उक्तप्रथ ब्रजभाषानिबद्ध और अलंकारिक होनेसे कौइएक सस्त्रुतज्ञ और ब्रजभाषाके उ० कविकी तन्नाशमें था, कारण ऐसे अलंकारबद्ध कृतोंके प्रथका उत्तम कविके निरीक्षणसे उद्धार हो तो प्रशस्नीय हो

ईश्वरीतरमें जामनगर (काठियावाड प्रदेशमें एक राजधानी) निवासी श्रीयुक्त गोपालभगवान् त्रिविक्रमलालजी जो सस्त्रुत और ब्रजभाषाके काव्यालंकार बगैरेमें अच्छे कवि और मर्मज्ञ हैं उनका मुझई आगमन हुआ आपसे मेरा परिचय हुये बाद प्रथको दिग्गज द्वितीयावृत्ति शुद्ध करनेकी प्रार्थना की, आपने कृपा करके स्वीकार किया

उक्त लालजीने ब्रजभाषा और अलंकारों तथा पिंगल प्रभृतिके नियमानुसार काव्य में जो कुछ दृष्टिदोष दृष्टिगोचर हुये उन्हें शुद्ध कर समग्र प्रथ तपासनेका परिश्रम ले इस प्रथके साथ आपकी कवित्वशक्तिका नमन करते वास्ते प्रथानमें शिवराजदृष्टिपत्रक और नीचे रखीभई कविता बंगादी बोधयथाद पुरस्सर यहाँ नियोजित कर आपका बड़ा उपकार मानता हू

(छप्पय)

चन्दत अमित उच्छ्राव, येँ सघाट सरजन ॥

येतहाँक हय चढेँ, हीरा रय होत महाधन ॥

दिह्रीदल रलभलें, हल अवरगशाह मन ॥

जार्यधर्म थिर थपें, कहें द्विजदेव सयं धन ॥

उगमगत धरा धरकत हियो, परे फाल परपच्छपर ॥

सिवराज धीर सिरजा जग, दैत स्वच्छकर मुच्छपर ॥१॥

(भूमिकाका-कवित्त)

कविगन भूपन महान कविभूपनको । विरचित "शिवराज-भूपन" ललित ग्रथ ॥ लक्ष्मीदास तनें यदुवशी परशसी शुभ । गोवर्द्धनदास दिया भोधन विने अनत ॥ भूपनकी धानी शिवाकीरति समानी जाम । निररि त्रिविक्रम यथामति कवित्त पथ ॥ शोध्यो वृत्त रिपय विचार अर्थ भूपणयो । तदपि भई जो होय भूल ताहि सोधो सत ॥ १ ॥

यहाँतक प्रस्तावना सहित सक्षिप्त जीवनीकी समाप्तिकर आगे कुछ अलंकारोंका उपक्रमभी पाठक महाशयोंकी सेनाभ पवित्र पुष्पाजलीरूप अर्पण करता हूँ —

अलंकारोंका उपक्रम

बनस्वभाव सुलभा परिमोहिनी रमणीका स्वाभाविक सौन्दर्य हेम और हीरे मोतीके अलंकारोंका आश्रय पानेमें जिसप्रकार उबिमम्पन्न और परिवर्द्धित होताहै नक्षत्रगण और राकेस जिसप्रकार प्रकृति देदीस दिवाकरकी दमकसे सुभ्रोज्ज्वल और ज्योतिर्मय होकर चमकते हैं, स्वाभाविक उत्कृष्ट काव्यभी उसीप्रकार अलंकारमम्पन्न होकर सर्वांगमुन्दरपदकी प्रतिष्ठा पाताहै

ज्योतिर्मय सुरितग्ध सुधाकर विना जिसप्रकार भास्कर गतविभात्री भयावन लगतीहै सर्व व्यजन परिपक जिसतरह लवण विना आस्वादनहीन रहनाताहै उसीप्रकार जिस अलंकारके विना काव्य नीरस और उसठ लगता है, उस अलंकारके मतिअपदातादि कवियोंने दो भेद ठहराये हैं पहला शब्दालंकार दूसरा अर्थालंकार और उन्हीं काव्यवेत्ताओंका प्रमाण-बचनभी है कि शब्दालंकारका तारतम्य अर्थालंकारके समुच्च अक्षम है

इस ग्रथके उपोद्घातमें २९ और अलंकारोंके लक्षणमें १०७ पद्य हैं

जिनमें १७१ उदाहरणाक मिलानेसे ३०७ सत्र सग्या होतीहै शेषमें वि
पयोंकी अनुक्रमणिका के १८ अ वरचनाकालका १ और १ उपसहारका
मिगके ३२७ पद्य इस अथमें सन्निवेशित है १०७ पद्योंमें कविनें मुख्य २
एकसीपाच अलंकारोंका वर्णन किया है दोहा, सबैया, हरिगीत, छप्पय,
कवित्त और चचरीक आदि ६ प्रकारके छंद इस ग्रन्थमें पाठकोंको मिलेंगे
और छंदोंके लक्षणभी पाठकोंकी ज्ञापकताके लिये इसमें लिखादियेगये ह

अलंकारशास्त्रके प्रसिद्ध मर्मज्ञ और भवभूषित कायप्रकाशका कर्त्ता
मम्मट जो ई० सन १०७५ से ११२५ तक साहित्यवाटिकामें भूषित
था, शब्दालंकारको चक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, चित्र और पुन
रक्तवदाभास ये ६ भागोंमें और अर्थालंकारको ६१ भागोंमें विभक्त करता
है अत्रकारण रुद्रटने (जो ईसवी सनके नवें शतकमें हुआ,) पुनरक्तवदा
भास, त्यागकर शेष ५ प्रकारके शब्दालंकार जो ६६ प्रकारके अर्थालं
कार वर्णन किये ह किन्तु साहित्यदर्पणके कर्त्ता विश्वनाथ कविराजने
मम्मट आदिके छह शब्दालंकारको लँघकर "भाषासम" नामक सात
वाँभी निर्माण करके लगभग ७० अर्थालंकार खींच डाले हैं विचित्रबुद्धि
विचक्षण चामन जो ई०स० ७७५ से ८२५ तक भूतलमें सुशोभित था
उसने केवल यमक और अनुप्रास दो शब्दालंकार और २५ ही अर्थालं
कारोंसे साहित्य जगतको सूत्रबद्ध करडालाहै सारास यह कि
अर्थालंकार और शब्दालंकारकी भेद सरया कवियोंकी उक्ति गाम्भीर्यके
अनुसार यथाक्रम भिन्न २ देखनेमें आती है

हमारे इस शिखरात्तभूषणके जीवनाधार भूषण कविने इस ग्रन्थमें
१०५ अलंकार छेक, पुनरक्तवदाभास, यमक, लाटानुप्रास, और चक्रो-
क्ति ये ५ शब्दालंकार बनाये हैं, उनमें छेक और लाटानुप्रास यह अनु-
प्रासही शायदा है जिनकी उचित गणनापर केवल ४ ही शब्दालंकार
मुख्य कहेजासकतेहैं कुल १०५ अलंकारभेद सग्यामसे उपरके ५
शब्दालंकार शेष करनेमें १०० अर्थालंकार इस ग्रन्थमें हुए उनमेंसे
अक्रमातिशयोक्ति, अत्यनातिशयोक्ति, चचआतिशयोक्ति, भेदवातिशयोक्ति

और रूपकातिशयोक्ति, यह ५ अतिशयोक्तिकी शाखा है कैतवापन्हृति, छेजापन्हृति, पर्यस्तापन्हृति, भ्रान्तापन्हृति और हेःपन्हृति यह ५ अपन्हृतिके भेद हैं मालोपमा और ललितोपमा यह उपमाके भेद हैं आशुत्तदीपक और माल्यदीपक यह दो दीपकके भेद हैं, परिकराकुर यह परिकरका पेटाभेद और विरोधाभास यह निरोधका भेद है - यह १६ मुख्य अलंकार नहीं किंतु अलंकारकी शाखाप्रतिशाखाएं हैं जिन्हें १०० मेंसे निकालदेनेपर शेष ८४ मुख्य अर्थालंकारलक्षण काव्यशक्तिसम्पन्न भूषण कविकी विचारशक्तिमें हुए

उनके १०५ अलंकारोंकी विधिपूर्वक नामावली हम अनुक्रमणिकामें प्रकाश करचुकेहैं

मम्मटरुत काव्यप्रकाशके ६१ मेंसे उत्तर, विशेषोक्ति, सूक्ष्म, संसृष्टि और हेतुमाला यह ५ इम ग्रंथमें नहीं हैं, अर्थात् शेष ५६ अर्थालंकार इम ग्रंथमें विद्यमान हैं भावार्थ यह कि इस ग्रंथमें मम्मटके ग्रन्थमें २८ अर्थालंकार अधिक हैं, परन्तु कागवेनु, चित्र, गुम्फ, प्रश्नोत्तरमाला, भाविकछवि और सामान्यविशेष हैं इस कारण २३ अलंकारोंकाही अन्तर रहा, जिनका निर्वाह मम्मटके सिद्धान्तानुकूल उन्हीं ६१ में होताहै

उपर्युक्त, कामधेनु, चित्र आदि ५ अलंकार जैसे मम्मटके ग्रन्थमें नहीं हैं, वैसे सूक्ष्म, संसृष्टि और हेतुमाला प्रभृति यह ५ इस शिवराजभूषणमें नहीं हैं भावार्थ यह कि दोनों ग्रंथोंके मुख्य अर्थालंकार समानही बोध हुए, काव्यप्रकाश सन्निवेशित ६ शब्दालंकारोंका वर्गीकरणभी हम अनुक्रमणिकाके अन्तमें बताचुकेहैं, अब इस शिवराजभूषण ग्रन्थमेंके घृत्तोंके उदाहरण इम ग्रंथकर्ताके ज्येष्ठभ्राता कभिराज चित्तमणिके छंदविचार-पिंगल नामके ग्रन्थपरमें अर्थसहित नीचे लिखतेहैं

(दोहा लक्षण—दोहा)

तेरह कल पहले चरण, दुजे ग्यारह जान ॥

याही विधि उत्तर अर्थ, यों दोहा पहिचात ॥ १ ॥

अर्थ—पहले चरणमें जिसके १३ कल अर्थात् मात्रा और दूसरेमें ११ हो, फिर तीसरे और चौथेमेंभी यथाक्रम १३ और ११ मात्रा हो, इस प्रकार २४ कलका उत्तरार्ध और २४ कलका पूर्वार्ध दोहा जानना चाहिये

(मदिरादि सवैया लक्षण—दोहा)

सात भगण मदिरा कहे, गुर मिलि सुन्दर जानि ॥

सात भगण गुर लघु मिलै, तो चकोर उरजानि ॥२॥

सात भगण गुरयुगलयुत, सो कहि मत्तगयन्द ॥

आठ भगण जामें परं, सो किरीटि कहि छन्द ॥ ३ ॥

अर्थ—जिसके प्रत्येक पदमें ७ भगण हो उसको मदिरा सवैया कहते हैं यदि ७ भगणके बाद १ गुर आवे तो सुन्दर और ७, भगणके बाद अतमें १ गुर और १ लघु हो तो चकोर और ७ भगणके बाद २ गुर हो तो मत्तगयन्द और ८ भगणके प्रत्येक पद हां तो किरीट—उद्द समजना चाहिये

(हरिगीत लक्षण—दोहा)

प्रथम पच कल छ कल पुनि, तीन पच कल देहु ॥

गुरू अन्त हरिगीत यों, जानि सज्जनो लेहु ॥ ४ ॥

अर्थ—हरिगीतके प्रत्येक पदमें प्रथम ५ मात्राका १ समुदाय, पीछे ६ मात्राका आर आगे ५ मात्राके ३ समुदाय और पीछे अन्तमें १ गुर होता है, अर्थात् हर एक चरणमें २८ मात्रा उपर्युक्त प्रकारसे होता है

(छप्पय लक्षण—दोहा)

ग्यारह तेरह पर विरति, चौपद छप्पय माह ॥

पद्मह तेरह चरण युग, चरणत पद्मगनाह ॥ ५ ॥

अर्थ—छापै अर्थात् पदपदी इस उद्दमें ६ पाद रहते हैं, यह निश्च होता है इन ६ मेंसे पहिले ४ पाद में ११ वीं और बहोसे १३ वीं मात्रा पर विश्रांतिस्थान होता है इससे इन ४ पादोंमेंके प्रत्येक पादमें २४ मात्रा होती है, यह स्पष्ट होता है छापैके अतनाचे २ पादमें प्रत्येक पादमें १५ वीं

और वहाँसे १६ वें मात्रापर विराम होताहै अर्थात् इस अतके २ पादमें २८ मात्रा रहती हैं

(घनाक्षरी [कचित्त] लक्षण—दोहा)

सोरह पडह वरन पर, होत जहाँ विधाम ॥

इकतिस अक्षर अत गुरु, कहत घनाक्षर नाम ॥ ६ ॥

सोरह सोरह पर जहाँ, विरति अत लघु होय ॥

सो रूपक घनाक्षरी, वत्तिस वत्तिस जोय ॥ ७ ॥

अर्थ—कचित्त इस छंदका घनाक्षरी दसरा नाम है इस छंदके प्रत्येक पादमें ३१ अक्षर रहते हैं प्रथम १६ वें अक्षरपर और वहाँसे १५ वें अक्षरपर विराम होताहै प्रत्येक पादमें ३२ अक्षर होकर १६ अक्षरपर विराम हो तो उस छंदको रूपकघनाक्षरी कहतेहैं

(चचरीक (छंद) लक्षण—दोहा)

प्रथम विरति दशचारपे, फिर धारहपे होय ॥

चचरीक तासों कहत, सकल सयाने लोय ॥ ८ ॥

अर्थ—जिसके १ चरणमें प्रथम १४ मात्रापर और फिर १२ मात्रापर विश्राम होय ऐसे ४ चरण वाले छंदको चचरीक कहते हैं

वृत्तोंके लक्षण लिखनेमें लघु गुरु और गणोंका नामनिर्देश हुआ है तास्ते उनोंके लक्षणभी उसी पिगलके आधार नीचे लिखायेजाते हैं

(लघु लक्षण—दोहा)

सबै कहावत वर्ण लघु, शुद्ध एक कल जानि ॥

गुरुहकों लघु करि पडे, लघुही होत सुजानि ॥ ९ ॥

अर्थ—एक मात्राका वर्ण को लघु कहाजाता है, और भाषामें कोईकोई जगो गुरुकोभी लघु कर कर पढाजाय तो उसकीभी सज्ञा लघुही होती है

(गुरु लक्षण—दोहा)

सजोगीतें प्रथम जो, दीरघ बिंदु समेत ॥

सो गुरु अकहु मत्त कहैं, चरन अत कहु पेत ॥ १० ॥

अर्थ—सयुक्तअक्षरके आदिका अक्षर, दीर्घ अक्षर, अनुस्वारवाला, और दीयमात्राका घर्ण गुरु कहलाता है वहीं वहीं यानी विकल्पमें कवित्तम अंतका अक्षर लघु होय तोभी उसकी गुरु मन्ना कही जाती है

(अक्षरगण प्रस्तार)

५ ५ ५ मगण । ५ ५ यगण ५ । ५ रगण ॥ ५ सगण ५ ५ ।
तगण । ५ । जगण ५ ॥ भगण । । । नगण

अर्थ— ३ गुरु जिसमें हों उसे मगण कहते हैं आदि लघुको यगण कहते हैं मध्य लघु रगण कहाता है अत गुरुको मगण कहते हैं, और अत लघुका तगणकी सजा देतेहैं और मध्य गुरु जगण कहाता है आदि गुरुवालेको भगण कहतेहैं और ३ लघु जिसमें हों उसे नगण कहते हैं इस प्रकार ये घर्णप्रस्तारके आठ गण हैं

(मात्रागण प्रस्तार)

। । । । तगण ॥ ५ सगण । ५ । जगण ५ ॥ भगण ५ ५ मगण

अर्थ— ४ लघु जिसमें हो उसे नगण कहते हैं २ लघु १ गुरु हो वो सगण कहाताहै आदि लघु मध्य गुरु अन्य लघुको जगण जानों आदि गुरु और २ लघु भगण और २ गुरुको मगण समझना चाहिये

छंद, लघु, गुरु, लक्षण और घर्णगण, मात्रागणके, प्रस्तार हम जर्ष सहित उपर दिखला चुके, वास्तवमें यह विषय ग्यास पिंगलका है

हमारा विचार इही कविराज भृपणनीके प्येष्ठ भ्राता कविकुलमुकुटमणि चिंतामणिका बनायाहुआ “छंदविचार” नामका पिंगल का ग्रन्थ कि जिम्में ये विषय बहोत विद्वत्तापूर्णक विस्तारसे लिखागया है उसे छपा प्रसिद्ध करेकी मनीशा है अनएव सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, जगदीश्वर में हमारी अन कर्णसे यही प्रार्थना है कि वो हमका उस ग्रंथके प्रकाश करनेमें शक्तिमान करे तथास्तु रमजलकारमर्मन पाठकगणोंका अनुचर

गोवर्धनदाम लक्ष्मीदाम,

प्राचीनप्रथ प्रकाशक



अनुक्रमणिका.

(अलंकारनामसूची)

अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक	अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक
१	अक्रमातिशयोक्ति . .	२६	२३	उपमेयोपमा	६
२	अतद्गुण	८५	२४	उल्लास	७९
३	अन्यतातिशयोक्ति	२८	२५	उल्लेख	१२
४	अत्युक्ति .	९९	२६	एकावली	६२
५	अधिक	५७	२७	कामधेनुचित्र	१०६
६	अन वय	३	२८	काव्यलिङ्ग	७४
७	अनुमान	१०२	२९	कैतवापहृति	२१
८	अनुज्ञा	८१	३०	गुफ	६१
९	अन्योन्य	५८	३१	चचलातिशयोक्ति	२७
१०	अपहृति	१६	३२	छेक	१०३
११	अप्रस्तुतप्रशंसा	४२	३३	छेवापहृति	२०
१२	अर्थांतरन्यास	७५	३४	छेजोक्ति	९३
१३	अर्थापत्ति	७३	३५	तद्गुण	८३
१४	अवज्ञा	८०	३६	तुल्ययोगिता	३०
१५	असंगति	५१	३७	दीपक	३१
१६	असंगत	५०	३८	दृष्टांत	३४
१७	आवृत्तदीपक	३२	३९	निदर्शना .	३५
१८	आक्षेप	४५	४०	निरक्ति	१००
१९	उत्प्रेक्षा	२२-२३	४१	परिकर	४०
२०	उदात्त	९८	४२	परिकराकुर	४०
२१	उत्पीडित	८७	४३	परिणाम	११
२२	उपमा	१-९	४४	परिवृत्ति ..	६६

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका	पृष्ठांक	अनुक्रमणिका	पृष्ठांक
४१ परिभ्रमण	६७	७१ सन्ततोपमा	८
४६ पर्यन्तापहृति	१८	७२ छाटानुप्रास	१०३
४७ पर्याय	६९	७३ उग	८२
४८ पर्यायोक्ति	४३	७४ लोकोक्ति	९३
४९ विहित	९०	७५ वक्रोक्ति	९४
५० पुनरुक्तवदाभास	१०९	७६ विकल्प	६८
५१ पूर्वरूप	८४	७७ विचित्र	९४
५२ मतिवस्तूपमा	३३	७८ विनोक्ति	३८
५३ प्रतीप	४-५	७९ विमात्रना	४८-४९
५४ मन्वनीक	७२	८० विरोध	४६
५५ मश्रोत्तर	९१	८१ विरोधाभास	४७
५६ महर्षण	९९	८२ विशेष	९९
५७ प्रौढोक्ति	७६	८३ विशेषक	८९
५८ भाविक	९६	८४ विषम	९२
५९ भाविकछानि	९७	८५ विषादन	९६
६० भद्रकातिशयोक्ति	२५	८६ व्यतिरेक	३६
६१ अम	३४	८७ व्याघात	६०
६२ आतापन्हृति	१९	८८ व्यापस्तुति	४४
६३ मालादीपक	३३	८९ व्याजोक्ति	९२
६४ मालोपमा	७	९० श्लेष	४१
६५ मिथ्याभ्यवसिति	७८	९१ सम	९३
६६ मीलित	८६	९२ समाधि	६९
६७ यथासत्य	६४	९३ समासोक्ति	३९
६८ दमक	१०४	९४ समुच्चय	७०-७१
	९-१०	९५ सहोक्ति	३७
			८८

अनुक्रमांक	नाम	पृष्ठांक	अनुक्रमांक	नाम	पृष्ठांक
९७	सामान्यविशेष	. २९	१०२	स्मृति	१३
९८	सार	. ६३	१०३	स्वभावोक्ति	. ९९
९९	संकर	१०७	१०४	हेतु	१०१
१००	संदेह	.. १९	१०५	होवापन्हति	१७
१०१	सभावना	७७			

(उपोद्घात और उपसहारमके पद्योकी सूची)

१ आनदसों सुदरिनके० . १८	१६ देसनि देसनिते गुनी० २४
२ उदित होत सिवराजके० ११	१७ द्विज कनीज कुठ कदयपी० २९
३ एक प्रभु ताको (उपसहार) १	१८ पुनाग कहूँ कहूँ नागकेसर० २१
४ एते हाथी दिए भालमऊ० ९	१९ भूपनि भनि ताके भयो० ८
५ कहूँ केतकी कदली करों० २०	२० भूपन भनत जिह परसिके० १७
६ कितहू विसालप्रवाल० . १९	२१ भूपन सब भूपननिमे ऊपमै० २३
७ कुल सुख चित्रकूटपति० २८	२२ भनिमय महल सिरराजके० १५
८ जय जयति जय (उपोद्घात) १	२३ महावीर ता वसमै भयो एक० ४
९ जा दिन जनम लीनो भूपर० १२	२४ मुकुतानिकी झालरिनि० १६
१० जापर साहितनै सिवराज० १४	२५ यातै सरजा यिरदभी शोभि० ७
११ तरनि जगतजलनिधितरनि० २	२६ राजतहै दिनराजको वस० ३
१२ तहाँ राजधानी करी जीति० २३	२७ लसत विहगम बहुत बहुत० २२
१३ ता कुलमै नृपशुद सब भये० ५	२८ सदा दानकिरवानमै जाके० ६
१४ दृच्छिनके सब दुग जीति० १३	२९ सिवचरित्र लखि यों कह्यो० २६
१५ दशरथके जो राम भो० १०	३० सुकविनहूकी कृपा कछु० २७

(उदाहरणपद्योकी सूची)

१ अनों भूतनाथ मुडमाल० १४९	४ अरितिय भिड़िनिसों कहैं० ७०
२ अटल रहे हैं दिग्गअत० ५०	५ अरिनके दल सैन सगर० १६९
३ अति मतचरे जहाँ द्विरदै० १०४	६ अहमदनगरके थानकिर० १३६

अनुक्रमांक	नाम	पृष्ठांक	अनुक्रमांक	नाम	पृष्ठांक
७	आचारज भूपन मनबड्यो	०७९	३३	कामिनि कतसो जामिनी	४९
८	आजु यहिसमे महाराज	१५५	३४	काल करत कलिकालभै	२५
९	आदि बडी रचना है विर	९९	३५	काहुके कहे सुनेते जाही	१४८
१०	आनि मिल्यो अरि यो	१३८	३६	कुद कहा पयवृद कहा	६
११	आयो आयो सुनतही	४३	३७	कोऊ वचत न सामुहे	१२४
१२	आगत गोसलखाने एसे	२२	३८	को कविराज विभूषन हो	६०
१३	आवतही दरवार बिल्लाने	३	३९	कोट गड दैके माठ मुलरु	१०३
१४	इद्र निमि जभपर वाडन ज्यो	०९	४०	को दाता को नर बडो	१४०
१५	इद्र निज हेरत फिरत	१३३	४१	गनघटा टमटै महाधन	१५०
१६	उदैभाँन राटोर गो	१२३	४२	गत बलखान दलेल हुर	१६१
१७	उद्धत अपार तुबदुदुभी	४३	४३	गेरिमिसिठ ठाढे सिवा	११७
१८	एकसभै सजिकै सब सेय	२७	४४	चदत सुरग चतुरग मानि	४७
१९	एकै कहै कल्पद्रुम है	१८	४५	चमकनी चपरा न फिरत	२३
२०	ऐसे बाजिराज देत महारा	१७१	४६	चाहत निरगुन सगुनको	५४
२१	और गढोई नदी नद सिब	३९	४७	चित्त अनचैन औसू टम	२५९
२२	औरग यो पछिताय मा	८१	४८	छाशरही जितही तितही	५
२३	औरनिके अनगाढे कहा	१२१	४९	छूटत चटपस आमगास	५९
२४	औरनिके जाचे कहा नहि	१६७	५०	जसनके रोग यो जलस	८०
२५	औरनिको जो जनमु है	५६	५१	जाइभिरौ न भिरी भचिहो	७४
२६	और नृपति भूपन कहे	४६	५२	जावाल घार सिमाखरी	८३
२७	कछु न भयो कतो लज्यो	८६	५३	नाहिर नैहान सुनि सुनि	१२२
२८	करि मुहीम आप कहे	१४६	५४	जाति रही अररगभै सुभै	१०१
२९	फाठिजुग जटधि अगार	१२	५५	जेई चहो तेई गही सम्रा	१००
३०	फविगनको दारिद दुरद	१५७	५६	जेते हे पहार भुनगाइ	११
३१	कवितरुवर सिर सुनस	४५	५७	जे हुदाव पिबगनी	१४४
			५८	तिभिरवमहर रनर	२८

अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक	अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक
५९	तिहु भुवनमें भूवन भनै०	९७	८५	ध्रुव जो गुरता तिनिको०	१७०
६०	तुम सिवराज ब्रजराज अ०	२०	८६	नृपसभानमें आपनी हो०	११९
६१	तुरमती तहँगाने तीतुर०	१६६	८७	पगरनमै चल यों लसें०	११६
६२	तुही साँच दुजराज है०	६३	८८	पावमकी इकराति भली०	१३५
६३	तुतां रात्थोदिन जग जागत०	७३	८९	पीप पहारनि पास न जा०	२१
६४	तेरो तेज सरजा समथ्य०	८	९०	पीरी पीरी हुनै तुम देत ही०	७२
६५	तैं जैसिहाहि गढ दए सिव०	८७	९१	पुनावारी सुनिके अमीर०	१२८
६६	तो करसों छिति छाजत दाँ०	९२	९२	पैज प्रतिपाल भूमिभारको०	१९
६७	त्रिभुवनमें परसिद्ध यफु०	५८	९३	पजहजारिन बीच खडा कि०	८१
६८	दक्खिनधरन धीरधरन०	१०३	९४	पपा मानसर आदि अग०	१२५
६९	दक्खिननायक एक तुही०	७६	९५	बचैगा न समुहानै बहलो०	६४
७०	दानव आयो दगा करि०	३२	९६	बडो डी लखि पीलको०	६२
७१	दानसमै द्विज देखि मेर०	१४७	९७	बासवसे त्रिसरत भिन्नम०	४०
७२	दारन दैयत हिरनाकुस०	१५८	९८	वीर बडे बडे मीर पठान०	७७
७३	दारहि मारि गुरादको बाँ०	८९	९९	बेहर बरार बाघ बाँदर०	१६५
७४	दिहिय दलनि गजाइ०	१६०	१००	बैर कियो सिव चाहतु०	१०७
७५	दीनदयाल दुनी प्रतिपा०	१३०	१०१	ब्रह्मके आननतैं निक०	१२६
७६	दुग्गबलय सरजा प्रबल०	२९	१०२	ब्रह्म रचै पुरघोत्तम पोषत०	९४
७७	दुरजनदार भजि भजिये०	३४	१०३	भूपन तीपन तेज तरनि०	१७
७८	दुवन सदन सबके बदन०	३७	१०४	भूपन भनि सगही तनही०	६६
७९	देखत उचाई उदरति पाग०	३८	१०५	मच्छह कच्छमें कोल नृ०	५५
८०	देवत सरूपको सिहात न०	६८	१०६	मदजलधरन द्विरदबल०	५१
८१	देत तुरी गुनगीत सुने०	५२	१०७	मा कावि भूपनको मित्र०	९८
८२	देस दहबट्ट कीने लूठिके०	११८	१०८	महाराज सियराजके०	१५६
८३	देसनि देसनि नारि नरेस०	१०६	१०९	महाराज सियराज चढत०	८२
८४	द्वारनि मतग दीसै अगनें०	१५२	११०	महाराज सिवराज तुन०	३५

अनुक्रमांक	नाम	पृथांक	अनुक्रमांक	नाम	पृथांक
७	आचारज भूपन मनबल्यो०७९		३३	कामिनि फतसौं जामिनी०	४९
८	आजु यहिसमै महाराज०	१५५	३४	काल करत कलिबालमै०	२५
९	आदि बडी रचना हे विर०	९९	३५	काहूके कहे सुनेते जाही०	१४८
१०	आनि मिन्यो अरि यो०	११८	३६	कुद कहा पयवृद कहा०	६
११	आयो आयो सुनतही०	४३	३७	कोऊ वचत ७ सामुहे०	१२४
१२	आवत गोसलराने एसे०	२२	३८	को कविराज विभूपन हो०	६०
१३	आवतही दरवार विलगने०	३	३९	कोट गडदेके माठमुलका०	१०२
१४	इद्र जिमि जभपर वाड्य ज्यो०	९	४०	को दाता को नर बडो०	१४०
१५	इद्र निड हेरत फिरत०	१३३	४१	गजवटा समडे महाघन०	१५०
१६	उदैभौंन राठोर गो०	१२३	४२	गत बलखान दलेल हुव०	१६१
१७	उद्धत अपार कुवदुदुभी०	४२	४३	गौरामिसिल ठाढे सिवा०	११७
१८	एकसमै सजिके सब सैन्य०	२७	४४	चढत तुरग चतुरग साजि०	४७
१९	एके कई कल्पद्रुम हे०	१८	४५	चमकनी चपला न फिरत०	२३
२०	ऐसेवाजिराजदेतमहारा०	१७१	४६	चाहत निरगुन सगुनको०	५४
२१	और गढोई नदी नदसिर०	३९	४७	चित्तअनचैन औंसू डम०	२५९
२२	औरग यो पछिताय मन०	८१	४८	छाडरही जितही तितही०	५
२३	औरनिके अनगाढे कहा०	१२१	४९	छूटत उल्लास आमरास०	५९
२४	औरनिकेजाचेकहानहि०	१६७	५०	जमनके रोज यो जलस०	८०
२५	औरनिको जो जनमु है०	५६	५१	जाइभिरौ न भिरे बचिहौ०	७४
२६	और नृपति भूपन कहे०	४६	५२	जाबलि वार सिगारखुरी०	८३
२७	कछु न भयो बेतो लन्यो०	८६	५३	जाहिर जँहान सुनि सुगि०	१२२
२८	कारि मुहीम आए कहे०	१४६	५४	जीति रही अजरगमै सर्वे०	१०१
२९	कलिजुग जलधि अपार०	१२	५५	जेई चही तेई गही सरजा०	१००
३०	कविगनको दारिद टुरद०	१५७	५६	जेते है पहार भुवमद्धि०	१६
३१	कवितरवर सिव सुजस०	४५	५७	जे सुहात सिवराजको०	१४४
३२	वाजमही सिवराज बली०	११७	५८	तिमिरबसहर अरनकर०	२८

अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक	अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक
१९	तिहु भुवनमें भूयन भौ०	९७	८५	ध्रुव जो गुरता तिनिको०	१७०
६०	तुम सिवराज ब्रजराज अ०	२०	८६	नृपसभागमें आपनी हो०	११९
६१	तुरमती तहेंगाने तीतुर०	१६६	८७	पगरनभै चल यों लस०	११६
६२	तुही साँच दुजराज है०	६३	८८	पावमकी इकरानि भली०	१३५
६३	तुती रायोंदिन जग जागत०	७३	८९	पीय पहारनि पाम न जा०	२१
६४	तेरो तेज सरजा समध्य०	८	९०	पीरी पीरी हुनै तुम देत ही०	७२
६५	तैं जैसिहहि गढ दप्प सिव०	८७	९१	पूनावारी सुनिकै अमीर०	१६८
६६	तो फरमों छिति ठाचत दों०	९२	९२	पैज प्रतिपाल भूमिभारको०	१९
६७	त्रिभुवनमें परसिद्ध यक्ष०	५८	९३	पजहजारिन बीच खडा कि०	८५
६८	दक्खिनधरन धीरधरन०	१०३	९४	पपा मानसर आदि अग०	१२५
६९	दक्खिननायक एक तुही०	७६	९५	यचैगा न समुहानै बहलो०	६४
७०	दानव आयो दगा कारि०	३२	९६	बडो डील लखि पीलको०	६२
७१	दानसभै द्विज देखि मेर०	१४७	९७	बासवसे बिसरत विक्रम०	४०
७२	दारन दैयत हिरनाकुस०	१९८	९८	बीर बडे बडे मीर पठान०	७७
७३	दारहि मारि मुरादको यों०	८९	९९	बेहर बरार बाघ बाँदर०	१६५
७४	दिल्लिय दलनि गजाइ०	१६०	१००	बैफ कियो सिन चाहतु०	१०७
७५	दीनदयाल दुनी प्रतिपा०	१३०	१०१	ब्रह्मके आननतैं निक०	१२६
७६	दुग्गबलय सरजा प्रमल०	२९	१०२	ब्रज रचैपुरुषोत्तम पोपत०	९४
७७	दुरजनदार भजि भजिवे०	३४	१०३	भूरा तीपन तेज तरनि०	१७
७८	दुवन सदा सबके बदन०	३७	१०४	भूयन भनि सबही तबही०	६६
७९	देखत उचाई उदरति पाग०	३८	१०५	मच्छु कच्छमें कोल नृ०	५५
८०	देवत सरूपको सिहात न०	६८	१०६	मदजलधरन द्विरदबल०	५१
८१	देत तुरी गुनगीत सुने०	५२	१०७	मन कवि भूपनको सिव०	९८
८२	देस दहवट कीने लूटिके०	११८	१०८	महाराज सिवराजके०	१५६
८३	देमानि देसनि नारि नरेस०	१०६	१०९	महाराज सिवराज चडत०	८२
८४	द्वारनि मतग दीसै अगने०	१५२	११०	महाराज सिवराज तुव०	३५

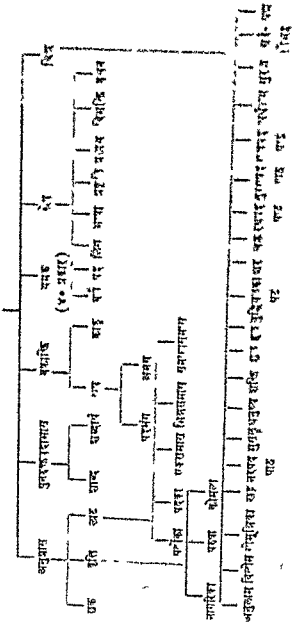
अनुक्रमांक	नाम	पृथांक	अनुक्रमांक	नाम	पृथांक
१११	महाराजसिवराजतुवबैरि०	९०	१३७	साहित्तै मरजाके कीर०	८८
११२	महाराज सिवराज तेरे बै०	७१	१३८	साहित्तै सरजाके भय०	२६
११३	माँगि पठायो सिवा क०	१०८	१३९	साहित्तै सरजा तुवद्वार०	४
११४	मानसरवासी हसवसन०	११४	१४०	साहित्तै सिवराज भूषन०	१५
११५	मिलत हीं कुरूप चकत्ताकी०	१	१४१	साहित्तै सरजा सिवाकी०	११
११६	मुड कटत कहुरुडनट०	१६४	१४२	साहित्तै सरजा सम०	११३
११७	मोरग जाहुके जाहु०	१०५	१४३	साहित्तै सिवराजकी०	७८
११८	मगनमनोरथके प्रथमहि०	४४	१४४	साहित्तै सिवराज ऐसे०	१५४
११९	या पुनामै मति टिकी०	१५३	१४५	साहित्तै सिवसाहि नि०	३३
१२०	यो कवि भूपन भापतु०	१२९	१४६	साहित्तै उमराव जि०	१४१
१२१	या सिरको छहरावत०	१२७	१४७	साहित्तै सिद्धक सिपा०	३१
१२२	यो सिवराजकी राज अडो०	७	१४८	साहित्तै मन समरथ्य जासु०	१३
१२३	राज वरीं सिवाजीसो०	११०	१४९	साहित्तै सो रन गाढिके०	५७
१२४	लिय जिन दिह्डीयो०	१६३	१५०	साहित्तै सरजा सिवा०	१३२
१२५	छिए धरि मुहकमसिह०	१६२	१५१	साहित्तै भिस्त सुजोधसो०	३
१२६	छूयो गान दौराजौरावर०	३६	१५२	सिव सरजाकी जगतमै०	१३१
१२७	ले पानाली मियासरजा०	८४	१५३	सिव सरजाकी सुधिक०	१४३
१२८	लोमम सरीन्वी आयु०	११५	१५४	सिव सरजाके कर लसैं०	२४
१२९	लोगनिसो भनि भूषन०	१३९	१५५	सिव सरजाके बैरको०	१२०
१३०	घटसत निदरत हसत०	१०	१५६	सिव सरजा तुव सुचस०	१३४
१३१	शयनमै साहित्तै मुद०	१११	१५७	सिव सरजा तुव हाथको०	९१
१३२	धीनगर नयपाल जुमिला०	४१	१५८	सिव सरजा भारी भुज०	४८
१३३	श्रीसरजा मन्हेरिक्के जु०	१२८	१५९	सिव सरजासो जग जुरि०	९३
१३४	श्रीसरजा सिव तो जस०	७५	१६०	सिवा औरगहि जिति०	५३
१३५	साहित्तै ले जीनिए नि०	११२	१६१	सिवा बैर औरगवदन०	१४२
१३६	साहित्तै तेरे बैर बैरि०	१४५	१६२	सिवा औरगहि निन जाव०	१४

अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक	अनुक्रमांक	नाम	पद्यांक
१६३	सीता सग सोहति लछ०६७		१६८	सूरसिरोमनि सूरकुल०	६९
१६४	सुजसु दान अरु दान०२६		१६९	सोभमान पर जग किए०	६१
१६५	सुनि सुउजीरन यों कयो०३०		१७०	सकरती किरपा सरजा०	६५
१६६	सुदरता गुरुता प्रभुता०१०९		१७१	हिंदुनिसौं तुरकिनि कहै०	६९
१६७	सूत्रि साजि पठावत०१५१			शिवराज दृष्टिपचक (नवीन)पृष्ठ५२	

(कवि ममटके काव्यप्रकाशमेंके ६१ अर्थालकारोंकी सूची)

१ अतद्गुण	२१ दीपक	४१ विशेष
२ अनिशयोक्ति	२२ दृष्टांत	४२ विषम
३ अधिक	२३ निदर्शना	४३ व्यतिरेक
४ अनवय	२४ परिहार	४४ व्याघात
५ अपन्हुति	२५ परिवृत्ति	४५ व्याजस्तुति
६ अनुमान	२६ परिसम्बन्ध	४६ व्याजोक्ति
७ असंगति	२७ पर्याय	४७ श्लेष
८ अयोय	२८ पर्यायोक्ति	४८ सम
९ अपस्तुतप्रशसा	२९ प्रतिवस्तूपमा	४९ समासोक्ति
१० अर्थोत्तरन्यास	३० प्रतीप	५० समाधि
११ आक्षेप	३१ प्रत्यनीक	५१ समुच्चय
१२ एकावली	३२ भाविक	५२ सहोक्ति
१३ उत्तर	३३ आतिमान्	५३ सामान्य
१४ उदात्त	३४ मीलित	५४ सार
१५ उपमा	३५ यथामरय	५५ सूक्ष्म
१६ उपमेयोपमा	३६ रूपक	५६ सकार
१७ उत्प्रेक्षा	३७ धिनोक्ति	५७ सदेह
१८ काव्यलिङ्ग	३८ विभावना	५८ समृष्टि
१९ तद्गुण	३९ विरोध	५९ श्रुति
२० तुल्ययोगिता	४० विशेषोक्ति	६० स्वभावोक्ति
		६१ हेतुमाला

गुणालंकारोंका वर्गीकरण



समाप्त

भूषणकविकृत

शिवराजभूषण.

उपोद्घात

(उप्पै)

जय जयति जय आनिसकृति, जय कालि कपर्दिनि ।
जय मधुकैटभउलनि देवि, जय महिपविमार्दिनि ॥
जय चमुड जय, चडमुडमडासुरखडिनि ।
जय सुरक्त जय रक्तजीज, त्रिङ्गुलत्रिहडिनि ॥
जय जय निसुभसुभदलनि, भनि भूषण जयजय मननि ।
सरजा ममथ्य सिरराज कहं, देहि विजय जय जगजननि १

(दोहा)

तरनि जगतजलनिधितरनि, जै जै आनठओक ॥
कोककोकनठसोरुहर, लोरुलोकआलोक ॥ २ ॥
राजत है दिनराजको, वस अरनि-अवतम ॥
जामै पुनि पुनि अत्रतरे, कसमथन प्रभु अस ॥३॥
महावीर ता असमै, भयो एक अवनीस ॥
लियो निरद सीसादिया, दियो ईसको सीम ॥४॥
ता कुलमे नृपवृद सन, उपजे वसतत्रिलद ॥
भूमिपाल तिनमै भयो, वडो भालमकरद ॥ ५ ॥
सदा दानदिरवागमे, जाके आनन अम ॥
माहि निजाम सखा भयो, दुग्गदेवगिरिसम ॥६॥
यातै सरजा निरद भो, सोभित सिंघप्रमान ॥
रामूसिला सु भौसिला, आयुपमान सुमान ॥७॥

भूपनि भाँ ताके भयो, भुजगृषा रूप साहि ॥
रात्यौदिन सकित गँ, साहि मँ जगमाहि ॥८॥

(काचिन)

एते हाथी णि भालमनरदजू के, नद जेते गनि सकनि निरगिट्ठीकी
न निया । भूपन भनत जारी माहिनी सभाके देखे, काँग जीर
सब छितिपाल छितिम छिया ॥ साहस अपार हिदमानको अधार
धीर मकल सिसोल्या मपूत कुल्को णिया । जाहिर जहाँ भयो
साहिजू गुमानधीर, माहिाको मरन निपाहिनीको तनिया ॥ ९ ॥

(दोहा)

दशरथके जो राम भो, वमद्योके गोपाल ॥
सोई प्रगद्यो साहिने, श्रीमिवराज भुवाल ॥१०॥
उदित होत सिरराजके, मुदित भए द्विजदेव ॥
कलजुग हट्यो मिट्यो सकल, म्लेच्छनिमो अहमेन ॥११॥

(रुचित्त)

जा दिन जनम लीगो भूपर भूसिला भूप, तारी दिननीत्यो अरिउरके
उछाह को ॥ छत्री छत्रपतिनको जीत्यो भाग अनयास, जीत्यो ना
मकरनमें करन प्रवाह को ॥ भूपन भनत वालगीला गढ कोट जीते,
साहिने मिनाजी करि त्यह चक्र चाह को । गोलकुडा गीजापुर जीत्यो
छरिकाइहीम, ज्यानी आए नीत्यो दिह्यीपतिपातगाह को ॥ १२ ॥

(दोहा)

दच्छनके सन दुग्ग गिति, दुग्ग साहइपिलास ॥
सिरसेनक सिरगढपति, कियो राजगढ त्रास ॥१३॥

(राजगढबर्नन—सचैया)

जापर साहितनै सिरराज, सुरेमनी ऐसी सभा मुभ साजे ।
याँ कति भूषा जपत है, लखि सपतिकों अलकापति लाजे ॥
तामधि तीनिहँ लोककी दीपति, ऐमो बडो गढराज तिराजे ।
वारि पतालसी माची मही, अमरावतिनी छवि ऊपर लाजे १४

(हरिगीत)

मनिमय महल सिपराजके, इमि राजगडमे राजही ।
 लखि जक्ष किनर सुर असुर, गधर्ष होसनि माजही ॥
 उत्तग मरकतमदिरनि मधि, बहु मृत्ग सु पाजहीं ।
 धनसमर मानहुँ घुमडिकरि धन, धनपटलगल गाजहीं ॥ १५ ॥
 मुकुतानिकी झालरनि मिलि, मनि लाल उज्जा छाजहीं ।
 सभ्याममै मानहु नखतगन, लाल अबर राजही ॥
 जहाँ तहाँ ऊरध उठे हीरा, किरनघनसमुदाय हैं ।
 मानौ गगन तबू तन्यो, ताके सपेत तनाय है ॥ १६ ॥
 भूषा भनत जिह परसिकै, मनि पुहुपरागनकी प्रभा ।
 प्रभुपीतपटकी प्रगट पावत, सिधुमेघाकी सभा ॥
 मुख नागरिनके राजहा कहु, फटिक महलन सगमै ।
 लसि अमल कोमल कमल, मानहु गगनगग तरगमै ॥ १७ ॥
 आनदसौ सुदरिनके कहु, इदुवदन उडोत है ।
 नभमरितके प्रफुलित उमुदकुल, कमल निकसित होत है ॥
 कहु वावगी सर रूप राजत, जद्धमनिसोपान है ।
 जहँ हस सारस चक्रपाक, बिहार करत गुमान है ॥ १८ ॥
 कितहू विसाल प्रवालजालनि, जटित अगनभूमि है ।
 जहँ ललितनागनि द्रुम लतनि, मिलि रहे झिलिमिलि झूमि है
 चपा चमेली चार चदन, चारिहू विसि देखिण ।
 लवली लवग इलानि केरे, लाखहों लगी देखिण ॥ १९ ॥
 कहँ केतकी बदली करौदा, रुद अरु करवीर है ।
 कहँ टाख दारिम सेन कटहर, तृत अरु जरीर है ॥
 कितहू कदम कदम कहँ, हिताल ताल तमाल है ।
 पीयूष ते भीठे फले, कितहूँ रसाल रसाल है ॥ २० ॥
 पुनाग कहँ कहँ नागकैसरि, कितहूँ बकुल असोव है ।
 कहँ ललित अंगर गुलान पाटल, पटल बेला थोक है ॥

चित्तं निगरी भाषया, मिताग्रहार कर्तुं स्मै ।
जहँ भौंति भौंति तिरग रग, विहग आत्मो र्मै ॥२१॥

(छप्पै)

स्मृत विहगम गहुत, बहुत बहु भौंति वागमरै ।
फोपिळ भीर यपोत, वैलि कल्कल कस्त तई ॥
मजुल गहरि मपूर, बहदुल गतक चकोरगा ।
पियत मपूर मकरद, करत शकार भूगघा ॥
भूपन सुवातु फल पूल जुत, छटु रिनु वमत वमंत जहँ ।
शमि राजदुग्ग राजत रभिर, अलि तुभिया तिरराज कर्हँ ॥२२॥

(दोहा)

तहँ राजधानी करी, जीनि मरुळ नुरवाँनि ॥
मियमरजा रधि गनमै, रीनो सुजसु जहँ ॥२३॥
देमनि देमनि त गुनी, आवत जाचा ताहि ॥
तिमै आयो एक वधि, भूपा कहियतु जाहि ॥२४॥
द्विज कनौज पुल वदयपी, रतनाकरसुत धीर ॥
वमत त्रिविक्रमपुर मदा, तरनितनू तातीर ॥२५॥
मियचरित्र ललि यो भया, वनिभूपनके चित्त ॥
भौंति भौंति भूपानिसौ, भूपित करौं कवित्त ॥२६॥
सुकविनट्टकी कृपा कछु, समुक्षि वनिारो पय ॥
भूपन भूपामय करत, सियभूपनमय ग्रथ ॥२७॥
उल सुलस चित्रकूटपति, साहसमीळ ममुद्र ॥
वनिभूषण पदवी दर्श, हृदयरामसुत रद्र ॥२८॥
भूपन सत्र भूपनगिमें, उपमै उत्तम चाहि ॥
याँतै उपमै आदिदै, धरात सकल सराहि ॥२९॥

ग्रंथारंभ.

(उपमा—दोहा.)

जहाँ दुहुनकाँ देखिये, सोभा चनत समान ॥
 उपमा भूपन ताहि काँ, भूपन कहत मुजान ॥१॥
 जाको घरनन कीजिए, सो उपमेय प्रमान ॥
 जाकी सरवर कीजिए, ताहि कहत उपमान ॥२॥

(उदाहरण—कवित्त)

मिलतहा कुरूप चरुताको निरखि कीन्हो, सरजा सुरेसज्यों उचित
 ब्रजराजकों । भूपनको मिसि गैरमिसिल परेकियेको, किए म्लेछ
 मुरछित करिकै गरानकों ॥ अरे ते गुसलखाने ग्रीच ऐसे उम-
 राय, लै चले मनाय महाराज सिजराजको । दावेदारको लखि
 रिसानो दीहदलराय, जैसे गडदार अडदार गजराजको ॥ १ ॥

(सवैया)

साइसभिस्त मुजोधनसो, ओ दुसासनसो जसवत निहान्यो ।
 द्रोणसो भाऊकरन करनमो, और सपैदल सौंदल भान्यो ॥
 ताहि विगोइ सिवा सरजा भनै, भूपन ऐलिफतैयो पछान्यो ।
 पारथके पुरुपारथ भारथ, जैसे जगाय जयद्रथ मान्यो ॥ २ ॥

(कवित्त)

आवतही दरवार बिललाने ठरीदार, जापताकरनहार हारे तन म-
 नके । भूपन भनत भौसिलाके आगे आवतही, बाजे भये उमराय
 बेजक कराके ॥ साहि रत्नो जदि सिज साहि रह्यो तनि और,
 चाहि रह्यो चकि बने ध्योत अनजनके । ग्रीपमको भानुसो खुमा-
 नको प्रताप देखि, तारे सम तारे गए मूदि तुरकनके ॥ ३ ॥

(अनन्वय-दोहा)

जहाँ करत उपमेयको, उपमैयै उपमान ॥
ताहि अनन्वै कहतहैं, भूपन सब मतिमान ॥३॥

(उदाहरण—सवैया)

साहितनै सरजा तुव द्वार, प्रतीदिा दानकि टुदुभि वाजे ।
भूपन भिच्छुक भीरनको, अति भोजहुते बडि मौजनि साजे ॥
रावनको गन राजनिको गन, साहिनमै नहि यों छत्रि ठाजे ।
आजु गरीबनिनाज महीपर, तोसो तुँली सिमराज विराजे ॥४॥

(प्रतीप-दोहा)

जहँ प्रसिद्ध उपमानको, कवि वरनत उपमेय ॥
तहँ प्रतीप उपमा कहत, भूपन गाय प्रमेय ॥४॥

(उदाहरण—सवैया)

ठाइ रही जितही तितही, अतिही छत्रि छीरधिरग करारी ।
भूपन सुद्ध सुधानके सोधनि, सोधतसी धरि ओप उज्यारी ॥
यों तमतोमहि चात्रिके चद, चहँ दिसे चौँदनि चारु पसारी ।
ज्यौ अफजहहि मारि महीपर, कीरति श्रीसिवराज बगारी ॥५॥

(दोहा)

जहँ वरनत उपमेयते, हीनो करि उपमान ॥
तामों कहँ प्रतीप हँ, भूपन सुकवि मुजान ॥ ५ ॥

(उदाहरण—सवैया)

कुद कहा पयमृद कहा अरु, चद कहा सरजा जसु आगै ।
भूपन भागु वृसानु कहा, व सुमानु प्रताप महीतल पागै ॥
राम कहा द्विजराम कहा, बलराम कहा रनमै अनुरागै ।
वाज कहा मृगराज कहा, अति साहसम सिवराजके आगै ॥६॥

यों शिवराजको राज अडोल, कियो सिय जो व कहों धुन धू है ।
कामनादानि सुमान लखे न, कट्ट दिववृक्ष न देगऊ है ॥
भूपन भूपनमै कुलभूपन, भौसिला भूप धरे सन भू है ।
मेरु कळ न कळ दिगदति न, कुडलि कोल कळ न कळ है ॥७॥

(उपमेयोपमा—दोहा)

जहाँ परस्पर होत है, उपमेयौ उपमान ॥
भूपन उपमेयोपमा, ताहि बखानत जान ॥ ६ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

तेरो तेज सरजा समथ्य दिनकरसो है, दिनकरसोहै तेरे तेजके
निकरसा । भौसिला भुवाल तेरो जस हिमकरसो है, हिमकर-
सोहै तेरे जमुके अकरसो ॥ भूपन भनत तेरो हियो रतनाक
रसो, रतनाकरो है तेरे हिय सुख करसो । साहिके सपूत सिय
साहिदानि तेरे कर, सुरतरुसों है सुरतरु तेरे करसो ॥ ८ ॥

(भालोपमा—दोहा.)

जहाँ एक उपमेयके, होत बहुत उपमान ॥
ताहि कहत भालोपमा, भूपन सकल सुजान ॥७॥

(उदाहरण—कवित्त)

इद्र जिमि जभपर बाडन ज्यो अभपर, रावन सदभपर रघु
कुलराज है । पौन वारिवाहपर सभु रतिनाहपर, ज्यो सह
खनौहपर राम द्विजराज है ॥ दाना द्रुमदडपर चीत्ता मृगगु-
डपर, भूपा वितुडपर जैसे मृगराज है । तेज तमअमपर
काह जिमि कसपर, त्यो मल्लच्छनमपर सेर मियराज है ॥ ९ ॥

(ललितोपमा—दोहा)

जहें समताको दुहुनकी, लीलादिक पद होत ॥
ताहि कहत ललितोपमा, सकल कविनके गांत ॥ ८ ॥

(उदाहरण—दोहा.)

बहमत फिरत हगत जदैं, छत्रि अनुगरित प्रखानि ॥
सगु मित्र इमि औरऊ, लीलादिक १८ जाति ॥ १० ॥

(कविस)

साहित्यो सरना मियारी मभा जामधि हँ, मेरवागी सुरकी ममाकीं
विदरति है । भूपन भात जाके एक एक सिरर त, केतिर उ-
दोत दिनकरके तसी हँ ॥ जोह को हसति जोति हीरमतिमदि
गनि, कदरतिगै छत्रि जुहकि उघरति है । ऐमो उँको दुसग महा-
कली मियारो जाम, खलतावली बहमिदिपावनी धरति है ॥ ११ ॥

(रूपक—दोहा)

जहाँ दुष्टनको भेदु नहि, बरनत सुकरि सुजान ॥
रूपक भूपन साहिको, भूपन कहत प्रमान ॥ ९ ॥

(उदाहरण—छप्पै)

कलिजुग जलधि अपार, उद्ध अधरम्म उर्मिमय ।
लच्छति लच्छमलिच्छ, कच्छ अरु मच्छ मगरचय ॥
नृपति तनीनतृद, होत जाको मिलि नीरस ।
भनि भूपन सग भुम्मि घेरि, किनिय सु अप्प बस ॥
हिदवान पुण्यगाहक रनिक, सुनिगाहक जय साहि सुन ।
पतवार निरद किरवान धरि, जसु जिहाज मियराज तुव १२
साहिनमनसमरथ्य, जासु अपरग साहि सिर ।
हँ जासु अब्बाउ, साहि जाको, विलास यिरु ॥
एदलसाहि उतुन्न, जासु भुजजुग भूपन भनि ।
पाइ म्लेच्छ उमराय, काय तुरखान और गनि ॥
यह रूप अत्रनि अवतार धरि, जिदि जालिम जग बडियन ।
सरजा सिय साहम लग्ग गहि, कलिजुग सोइ खल खडियन १३

भोसिला भूप घली भुवको भुज, भारी भुजगमसौ भरलीनौ ।
साहितनै कुलचढ सिवा, जसचदमों चद कियो अनि छीनों ॥ १७ ॥

(उल्लेख-दोहा)

कै बहुतैके एक जहँ, एक वस्तुको देखि ॥
बहु विधिकर उल्लेख हैं, सो उल्लेखि उलेखि ॥ १७ ॥

(उदाहरण—सवैया)

एकै कहँ कल्पद्रुम हे, इमि पूरतुहँ सगकी चितचाहै ।
एकै कहँ अवतार मनोजमो, यों तामै अति सुदरता है ॥
भूपन एकै कहँ महि इदु यों, राजु पिराजतु वाढ्यो महा है ।
एकै कहँ नरमिघ है सगर, एकै कहँ नरसिंघ सिवा है ॥ १८ ॥

(कवित्त)

पैज प्रतिपाल भूमिभारको हमाल चहँ, चक्रको अमाल भयो दडत
जहानको । साहिनको साल भयो ज्वारको जगाल भयो, हरको कृ
पाळ भयो हारके मिधानमो ॥ वीररस रयाल सिवराज भुवपाल
तुव, हाथको विस्ताल भयो भूपन वखानको । तेरो करवाल भयो
दक्षिणको ढाल भयो, हिदको दिवाल भयो काल तुरकानको ॥ १९ ॥

(स्मृति-दोहा)

समसोभा लखि आनकी, सुधि आवत जेहि ठौर ॥
स्मृति भूपन तासों कहत, भूपन कवि सिरमोर ॥ १३ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

तुम सिवराज ब्रजराज अवतार आजु, तुमही जगतकाज पोपत भरत
हौ । तुझैं छौंडि यार्त काहि भिनती सुनाऊ मैं, निहारे गुन गाऊँ
अव ढीलक्यों धरत हो ॥ भूपन भनत वह कुलमै भयो न पर,
गुमाहक छुटाण अत्र चित्त क्यों हरत हौ । और ब्राह्मननि देखि
करत सुदामा सुधि, मोहि देखि काहे सुधि भृगुकी करत हौ ॥ २० ॥

(भ्रम-दोहा.)

आन बातको आनमै, होत जहीं भ्रमु आनि ॥
तासों भ्रमु सब कहत है, भूपन कविमत जानि ॥ १४ ॥

(उदाहरण—सचैया)

पीय पहारनि पास न जाहु यौ, तीय बहादुरसों कह सोपै ।
कोन वचैहै नयात्र तुझे, भनै भूषण भोसिला भूपके रोपै ॥
वदि कियो इही साइखलाँ, जसवतसे भाउकरनसे दोपै ।
सिंघ मियाजिके गीरनसो, गो अमीरनि वाचि गुनीजन घोपै ॥२१॥

(सदेह-दोहा)

कै यह कै वह यों जहाँ, होत आनि सदेह ॥
भूपण सो सदेह है, यामे नहीं सदेह ॥ १५ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

आपत गुसलखाने ऐसे कटू त्योरठाने, जान्यों अवरगजूके प्राननको
लेवा है । रसखोट भय एतै अगोट आग्रेमें सातै, चौकी नाके आइ
घरकीनी हद्द रेवाहै ॥ भूपन भनत यह चहू चक्क चाह कियो, पा-
तसाह चकत्ताकी छातीमह छेया है । जान्यो न परतु ऐसे काम है
करतु कोऊ, गधरव देवा है कै सिद्ध है कि सेवा है ॥ २२ ॥

(अपन्हुति-दोहा)

आन बात आरोपिए, साँची बात दुराइ ॥
सुद्ध अपन्हुति तिहि कहत, भूपन सब कविराइ ॥१६॥

(उदाहरण—कवित्त)

चमकती चपला न फिरत फिरगै भट, इद्रको न चाप तरु वैरप स
माजको । धाप धुरगान छाप धुरके पटल मेघ, गाजियो न बाजियो
है दुदुभि दुयाजको ॥ भौसिलाके डरनि डरानी रिपुरानी कहै,
पिय भजो देखि उदो पायमकी साजको । घनकी घटा न गजघ-
टनि सनाह साजै, भूपन भात आयो सेन सितराजको ॥ २३ ॥

(हेत्वापन्हृति—दोहा)

जहाँ जुगतिसेँ आनको, कहियँ आन छपाइ ॥
हेतुअपन्हृति कहत है, तासँ कप्रिसमुदाइ ॥१७॥

(उदाहरण—दोहा)

सिव मरजाके धरलसे, सो न होइ किरवाँन ॥
भुज भुजगेस भुजगनी, भपति पौन अरिप्रान ॥२४॥

(पर्यस्तापन्हृति—दोहा)

वस्तु गोइ ताको धरम, आन वस्तु मै रोपि ॥
परजस्तापन्हृति कहत, कप्रि भूषा मतिओपि ॥१८॥

(उदाहरण—दोहा)

काल धरत कलिकालमें, गहि तुरकनको फाल ॥
काल धरत तुरकानको, सिमसरजा कखाल ॥ २५ ॥

(भ्रातापन्हृति—दोहा)

सक आपनी होत ही, जहँ भ्रमु कीजै दूरि ॥
भ्रातापन्हृति कहत है, तह भूषन कप्रि भूरि ॥१९॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितनै सरजाके भयसँ भगाने भूप, मेरुके लुकाने ते लहत जाइ
ओक हैं । भूपन तहाँक मरहटपतिके प्रताप, पावत न कल अनि
कौतुक उदोत है ॥ सिव आयो मित्र आयो सकरके आगमन,
मुनिके पगन ज्यो लगत अरिगोत हैं । सिव सरजा न यह
सिव है महेस तन, यो के उपदेस धरलकसे होत हैं ॥ २६ ॥

(सवैया)

एक समै सजिके सब सैन, सिक्कारकों आलमगीर सिधाण ।
आगत है सरजा समन्यो, इकओरतै गौलनि बोल जताण ॥
भूपन भो भ्रमु औरगके, सिम भौसिला भूपकी धाक धुकाण ।
धाइके सिंध कछो समुझाइके, रौलनि जाइ अचेत उठाण ॥२७॥

(छेकापन्हुति—दोहा.)

जहाँ औरकी सक करि, साँच छपावत बात ॥
छेकापन्हुति कहत हैं, भूपन मतिअवदात ॥२०॥

(उदाहरण—दोहा)

तिमिरवसहर अरुनकर, आयो सजनी भोर ॥
सिन सरजा चुपरहि सखी, सूरज सुर सिर मौर ॥२८॥

(कैतवापन्हुति—दोहा.)

जहँ कैतवछलव्याजमिस, इनसों होत दुराव ॥
कहत कैतवापन्हुतिहि, भूपन कवि सदभाव ॥२१॥

(उदाहरण—दोहा)

दुग्गनलय सरजा प्रनल, जन जीत्यो रनमौहि ॥
ओरग कहैं दिजानसो, सपन मुनागत ताहि ॥ २९ ॥
सुनि सु उजीरन यों कझो, सरजा सिव महाराज ॥
भूपन कहि चकता सकुचि, नहि सिकार अगराज ॥३०॥

(कवित्त)

साहिनके सिठक सिपाहिनके पातसाह, सगरमै सिंघकैसे जिनके सु-
भाउ है । भूपन भनत सिवसरजाकी धाकै ते वे, काँपत रहत चित्त
गहत न चाउ है ॥ अफजल्की अगति साइस्तराकी अपति, बहलो-
लकी त्रिपति सो डरे उमराउ है । पको मतौ करिकै मलेच्छ म-
नसब छोडि, मक्काहीके मिमि उतरत दरियाउ है ॥ ३१ ॥

(उत्प्रेक्षा—दोहा)

आन बातको आनमै, जहँ सभावन होड ॥
वस्तु हेतु फलजुत कहत, उत्प्रेक्षा है सोइ ॥२२॥

(उदाहरण—सचैया)

दानव आयो दगा करि जावली, दीद भयारो महामद भान्यो ।
भूपन बाहुनली सरजा हि सुँ, भेटिवेकों निरमक पधान्यो ॥

वीरुवे घाय गिरे अफजद हि, ऊपर ही सियराज निहान्यो ।
दायियों घैठयो गरिद अरिदहि, मानो मयद गयद पछान्यो ॥३२॥
साहितनै सियगाहि निमामे, निर्माकालयो गडगिह सुधानो ।
राठिराबाँ संहार भयो, भिरिबे गिरशर गियो उदभानो ॥
भूपन यो घममा भो भूतल, घेरत लोयनि मानो महानो ।
ऊँचे सुउज्ज छटा उचटी, प्रगटी परभा परभातनी जानो ॥३३॥

(कवित्त)

दुरजादार भनि भनिने सत्कार खडी, उत्तर पहार डरि सियराजी न-
रिद तैं । भूपन भात विनभूषण यान सने, भूपन पिया सत्र है
नाहनिके निदतैं ॥ बालक थायाने पाट घीचनी पिली, बुझि-
छाने मुखमोल अमल अरिद तैं । इगजल फज्जल कलित
वज्यो मानां दूजो, श्रोतहं तरनितनूजाको बलिद तैं ॥ ३४ ॥

(दोहा)

महाराज सियराज तुय, सुधाधरल धुववित्ति ॥
छविछटानिसौं छुहनिसी, छितिअगन दिगभित्ति ॥ ३५ ॥

(कवित्त)

लूठ्यो खान दौरा जोरावर सफजग, अर लखोकार तलपराँ मनहु
अमाल है । भूपन मनत लूठ्यो पूणामै माइलप्राण, गडनिमे लूठ्यो
त्यो गढोइनिने जाल है ॥ हेरि हेरि कूटि सलहेरि बीच सरदार,
घेरि घेरि लूठ्यो सत्र षटक कराल है । मागो ह्य हाथी उमराव
करि साथी, अतरग डरि सियराजीपे भेजत रसाल है ॥ ३६ ॥

(दोहा)

दुवन सदन सत्रके वदन, सिय सिय आठों जाम ॥
निज वचिनेको जपत जनु, तुरुको हरको नाम ॥ ३७ ॥

(दोहा)

मानौ इत्यादिक बचन, आवत नहि जिहि ठौर ॥
उत्प्रेच्छा गनि गुपतिसौं, भूपन भनत अमोर ॥ २३ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

देखत उचाई उदरतिपाग सूधी राह, घोपहूमै चढेते जे साहस
निकेत है । सिनाजी हुकुम तेरो पाइ पैदल निसल, हेरि परनासेह
जीते जिनु खेत है ॥ साजन भदौही भारी कुहूकी अध्यारी चढि,
दुग्गपर जात मावलागल सचेत है । भूपन भनत ताकी
वातमै विचारी तेरे, परताप रविकी उज्यारी गढ लेत है ॥ ३८ ॥

(दोहा)

और गढोई नदी नद, सिवगढपाल दन्याव ॥
दौरि दौरि चहु और ते, मिलत आनि यह भाव ॥३९॥

(रूपकातिशयोक्ति—दोहा)

ग्यान करत उपमेयको, जहँ केवल उपमान ॥
रूपकातिसयउक्ति तहँ, भूपन कहत सुजान ॥२४॥

(उदाहरण—कवित्त)

धासवसे बिसरत बिक्रमकी कहा चली, बिक्रम लखत धीर बखत
पिलदके । जाके तेजवृद सिनाजी नरिदम सरद, भालमकरद
कुलचद साहिनदके ॥ भूपन भनत जाके वैरी वनिताननेन
होत अचरिज घर घर दुखददके । कनकलतानि इदु इदु-
निमें अरविद, झरँ अरविदनि तै वुद मकरदके ॥ ४० ॥

(भेदकातिशयोक्ति—दोहा)

जहँ तहँ जानहि भाँतिके, बरनँ बात कछुक ॥
भेदकातिसयउक्ति सो, भूपन कहत अचूक ॥२५॥

(उदाहरण—कविरूत)

श्रीरंग नयपाल जुमिलाके छितपाल, भेजत रसाल चौर गूढ
 बुली बाजकी । मेरार बृढार मारवार औ बुढेलखड, झारखड बाँधी
 धनी चारुरी इलाजकी ॥ भूपन जे पूरन पछाँह नरनाह ते वै,
 ताकत पनाह दिह्यीपति सिरताजकी । जगतको जेतनार जीत्यो
 अवरगजेन न्यारी रीति भूतल निहारी सिरराजकी ॥ ४१ ॥

(अक्रमातिशयोक्ति—दोहा)

जहाँ हेतु अरु काज मिलि, होत एक ही साथ ॥
 अक्रमातिसयउक्ति सो, कहि भूपन कविनाथ ॥ २६ ॥

(उदाहरण—कविरूत)

उद्धत अपार तुन दुदुभीधुकार साथ, लघै पारावार वृद बेरी
 बाल बनके ॥ तेरे चतुरगके तुरगनके रगे रज, साथही उडात
 रजपुज है परनके ॥ दच्छिनके नाथ सिरराज तेरे हाथ चढे,
 धनुखके साथ गढ कोट दुरजनके । भूपन असीसें तोहि करत
 कसीसें पुनि, बाननके साथ डूटे प्राण तुरकनके ॥ ४२ ॥

(चचलातिशयोक्ति—दोहा)

जहाँ हेतु चर चाहिमै, काज होत ततकाल ॥
 चचलातिसयउक्ति सो, भूपन कहत रसाल ॥ २७ ॥

(उदाहरण—दोहा)

आयो आयो सुनतही, सिय सरजा तुन नाँउ ॥
 बैरिनारिहगजलनिसो, बूडि जात अरिगाँउ ॥ ४३ ॥

(अत्यतातिशयोक्ति—दोहा)

जहाँ हेतु ते प्रथम हों, प्रगट होत है काज ॥
 अत्यतातिसयोक्ति सो, कहि भूपन कविराज ॥ २८ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

मगनमनोरथके प्रथमही दानी तोहि, कामतरु कामधेनुसो गना-
यतुहैं । याते तेरे गुन सत्र गाइ को सकतु कवि, बुद्धिअनुसार तऊ
कछु गाइयतुहै ॥ भूपन कहे यों साहितनै सिमराज निज, वखत
बढाइ करि तोहि ध्याइयतुहे । दीनताकों डारि ओ अधीनता
निडारि दीह, दारिठको मारि तेरे द्वार आइयतुहै ॥ ४४ ॥

(दोहा)

कवि तरुनर सिम सुजस सर, सींचे अचरज मूल ॥
सफल होत है प्रथम हीं, पाठे प्रगटे फूल ॥ ४५ ॥

(सामान्यविशेष—दोहा)

कहिंवे जह सामान्य है, कहैं तहाँ जु विशेष ॥
मो सामान्यविशेष हैं, बरनत सुकवि अशेष ॥२९॥

(उदाहरण—दोहा)

ओर तृपति भूपन कहै, करैं न सुगमा आज ॥
साहितनै सिम सुजस तो, करै कठिनऊ काज ॥४६॥

(तुल्ययोगिता—दोहा)

तुल्यजोगिता धरम जहैं, बरननको है एक ॥
कहू अवरननको कहत, भूपन सुकवि विनेक ॥३०॥

(उदाहरण—कवित्त)

चढत तुरग चतुरग साजि सिमराज, चढत प्रताप दिनकर अति
जगमै । भूपन चढत मरहट्टिके चित चाव, खग खलि चढत
है अरिनके अगमै ॥ भोमिलाके साथ गढ कोट है चढत,
अरिजोट है चढत एकु मेरुगिरिश्रृगमै । तुरकानगन व्योमजान
है चढत, निनमान है चढत बन्धु अवरगमै ॥ ४७ ॥

(१८)

(दोहा)

सिख सरजा भारी भुजनि, भुयभरधन्यो सभाग ॥
भूपन अत्र तिर्चित है, सेमनाग दिगनाग ॥४८ ॥

(दीपक—दोहा.)

बन्य अचन्यनको धरमु, जहँ वरनत हँ एक ॥
ताको दीपक करत हँ, भूपन सुकायि विनेक ॥३१ ॥

(उदाहरण—सचैया)

कामिनि कतसों जामिनि चरसों, दामिनि पायस मेघ घटामों ।
वीरति दानमों सुरनि पानसा, प्रीत नई सनमाग मदासों ॥
भूपन भूपनसों तरनी, नलिनी नव पूषा देव प्रभासों ।
जाहिर चारिहँ आर जहाँन, लसै दिंदनाग सुमाग सिवामों ॥४९ ॥

(आवृत्तदीपक—दोहा)

दीपकपदके अर्थ जहँ, फिरि फिरि करत बखान ॥
आवृत्तदीपक कहत है, भूपनरविमत जान ॥ ३२ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

अटल रहे हँ दिग्ग अतकिने भूप धरि, रैयतिको रूप निज देस
पेम करिकै । राना रघो अटल गहाँना धरि चाकरीको, बाग तजि
भूषा बनत गुन भरिकै ॥ हाडा राठोर औ कच्छवाहे गोर और रहे,
अटल चक्ताकी चमाऊ धरि हरिकै । अटल सिवाजी रघो विह्वी-
को निदरि धीर, धरि पेड धरि तेग धरि गड धरिकै ॥ ५० ॥

(सचैया)

मद जलधरन द्विरदल लागत, बहु जलधरन जलद छत्रि साजई ।
भूमिधरन फनपति त्रिलसत अति, तेजधरन श्रीपम रति छजई ॥
सगधरन सोभा तहँ राचत, रचि भूषा गुनधरन समा जई ।
दिलिदलन दच्छिनदिसि थभन, पेडधरन सिवराज तिराजई ॥ ५१ ॥

(प्रतिवस्तूपमा—दोहा)

वाक्यनको जुग होत जहाँ, एक अर्थ समान ॥
जुदो जुदो करि भापिये, प्रतिवस्तूपमा जान ॥३३॥

(उदाहरण—सवैया)

देत तुरी गुनगीत सुनेनि, देत वरी गुनगीत सुनाये ।
भूषा भावत भूप न आा, जहाँ खुमानकी कीरति गाये ॥
मगनको भुनपाल धने पै, निहाल करै सिघराज रिझायै ।
और रितेँ वरमें सरमें पै, बढै नदिया नद पावस आयै ॥९२॥

(दृष्टात—दोहा)

पदसमूह जुग अर्थ जहँ, प्रतिविवितसां होत ॥
ताहि कहत दृष्टात है, भूपन सुमति उदात ॥ ३४ ॥

(उदाहरण—दोहा)

सिव औरगहि जिति सकै, ओर न राजा राउ ॥
हृथिमथ्यपर सिघनिनु, ओर न घाले घाउ ॥ ९३ ॥
चाहत निरगुन सगुनको, ग्यानवत गुनधीर ॥
यहीभाँति निरगुन गुनिहि, सिवा निजजत वीर ॥ ९४ ॥

(निदर्शना—दोहा)

सहस्र वाक्य जुग अरथको, करिये एक अरोप ॥
भूपन ताहि निदरसना, कहत बुद्धिदै ओप ॥३५॥

(उदाहरण—सवैया)

मच्छहु कच्छमे कोल नृसिंधमै, वामनमें भनि भूपन जो है ।
जो प्रसराममै जो रघुराममें, जो व कछो बलिरामहु को है ॥
दौधमें जो अरु जो कलकी मह, निरम हूवेकौ आगे सुनो है ।
साहस भूमिअधार सोई अब, श्रीसरजा सिघराज भै सो है ॥ ९५ ॥

(दोहा)

औरनिको जो जामु है, सो जाको यक रोज ॥
 औरनिको जो राज सो, सिन सरजाकी मौज ॥ १६ ॥
 साहिनमों रन मॉडिकै, कीनो मुकति निहाल ॥
 सिन सरजाको ख्याल है, औरनिको जजाल ॥ १७ ॥

(व्यतिरेक-दोहा)

सम छवि वाले दुहुनिमै, जहँ वरनत बढि एक ॥
 भूपन कविकोधिद सकल, ताहि कहत पितरेक ॥ १६ ॥

(उदाहरण-छप्पै)

त्रिभुवनमै परमिद्ध यहु, अरि बलि बह रडिय ।
 यहि अनेक अरिनल, त्रिहडि रनमडल मडिय ॥
 भूपन बह रितु एक, पटुमि पानिपहि उडावत ।
 यह छहु रितु निसदिन, अपार पानिप अधिकानत ॥
 सिवराज साहिसुव सथ्य नित, लरस हथि ह्य लरस रह ।
 यकहि गयद यक हि तुरग, निमि सुरेंद्र सरिनर करइ ॥ १८ ॥

(सहोक्ति-दोहा)

वस्तुनिको भासत जहाँ, जनरजन सह भाय ॥
 तहाँ सहाँकति कहत हैं, कविकोधिदसमुदाय ॥ १७ ॥

(उदाहरण-कवित्त)

छूटत उलास आमखास एकसग छूटे, हरम सरम एनरग रिउ
 ढगही । नैननत नीर छूटे घीर ठूटे एकसग, छूटे सुल मुपरचि
 त्योहीं त्रिनुरगही ॥ भूपन यखँने सिवराज मरदाने तेरे, धाक
 विललाने न गहत बल अगही । दच्छिनना सूना पाइ दिह्लीके
 अमीर तजें, उत्तरकी आम जीउआस एकसगही ॥ १९ ॥

(विनोक्ति—दोहा)

प्रस्तुत जहँ कटु वात विन, हेतु वर्न्यको होइ ॥
ताहि कहत विनउक्ति है, भूपन कविमत जोइ ॥३८॥

(उदाहरण—सचैया)

को कविराज निभूपन होत, विना कवि साहितनैको कहायै ।
को कविराज सभाजित होत, सभा सरजाके विना गुन गायै ॥
को कविराज भुवालनि भावतु, भौसिलाके मनमै विन भाये ।
को कविराज चढै गजराज, सिवाजीकी भौज मही विनु पाये ॥६०॥

(दोहा)

सोभमान पर जग किए, सरजा सिवा खुमान ॥
साहिनसों विनडर अगड, विन गुमानको दान ॥६१॥

(समासोक्ति—दोहा)

वर्नन कीजै आनको, ज्ञान आनको होय ॥
समासोक्ति भूपन कहत, कविभूपन सबकोय ॥ ३९ ॥

(उदाहरण—दोहा)

बडो डील लखि पीलको, सत्रनि तज्यो बनथान ॥
धनि सरजा तू जगतमै, ताको ह्यौ गुमान ॥ ६२ ॥
तुही साँच दुजराज है, तेरी कला प्रमान ॥
तोपर सित्र निरपा करी, जान्यो सकल जहाँन ॥६३॥

(परिकर और परिकराकुर—दोहा)

साभिप्राय विशेषननि, भूपन परिकर जानि ॥
साभिप्राय विशेष तै, परिकरअकुर मानि ॥४०॥

(उदाहरण—कवित्त)

प्रचैगा न समुहानै जहलोलखौं अयाने, भूपन प्रखानै दिल आनि

मेरा घरजा । तुजतै सराई तेरा भारें सलहेर पाम, घदी निया
साथका न कोइ नीर गरजा ॥ साहिनको साहिमी औरगहूके टीने
गड, जिमका तू चाकर ओ जिमकी है परजा । साहिना ललन
अफजलका मलन, दिछीदलका दलन सिपराज आया सरजा ॥६४॥

(दोहा)

सूरसिरोमनि सुखुल, भूपा सिप मकरद ॥
क्यौ करिकै ओग जितै, कुलि मलेच्छकुलचद ॥ ६५ ॥
भूपन भणि सगही तमहि, जीत्योहो जुरि जग ॥
क्यौ जीततु सिपराजसौ, अय अधक अवरग ॥ ६६ ॥

(श्लेष-दोहा)

एक वचनमें होत जहँ, बहु अर्थनिको ग्यान ॥
श्लेष कहत हैं ताहिको, भूपन सकल सुजान ॥४१॥

(उदाहरण—कावित्त)

सीता सग सोहति लछमन सदाइ जाको, भूपर भरत नाम भाई
नीति चारु दे । भूपा भनत कुलि मूरकुलभूपन है, दासरथी सग
जाके भुज भुव भारु है ॥ अरि लख तोर जोर जाके साथ वानर
है, सिंधु रह बाँधे जाके दलको न पार है । तेगहिकै भेट जाँउ
राकस मरद जान्यो, सरजा सिपराजी रामहीको अवतार हैं ॥ ६७ ॥
देवगत सरूपको सिपात ग मिलन बाज जग जीतिवैको जामे रीति
छल बलकी । जाके पास आवै ताहि निर करत गेगि, भूपन भ
नत जाकी सगति न फलकी ॥ कीरति कामिनी राख्यो सरजा सि
वाको एक, वसकै मके न वसकरनी सकलकी । चचल घरस एक
काहूपै न रहै दारी, निनुका समाग सूबादारी दिछीदलकी ॥६८॥

(अप्रस्तुतप्रशंसा—दोहा)

प्रस्तुति लीन्हे होइ जहाँ, अप्रस्तुतपरसम ॥
अप्रस्तुतपरसस मो, कहत सुकविअवतस ॥ ४२ ॥

(उदाहरण—दोहा)

हिंदुनिसों तुरफिनि कहै, तुमकों सदा सतोसु ॥
नहिन तिहारे पतिन पर, सित्र सरजाको रोसु ॥ ६९ ॥
अरितिय भिछिनिसों कहै, घन बन जाइ यकत ॥
सिव सरजासों वैर नहि, सुखी तिहारे कत ॥ ७० ॥

(पर्यायोक्ति—दोहा)

वचननकी रचना जहाँ, बर्ननीय परजानि ॥
परजायोक्ति कहत है, भूपन ताहि बखानि ॥४३॥

(उदाहरण—कवित्त)

महाराज शिवराज तेरे वैर देखियतु, घर बन ढेरहे हरम हवसी-
नके । भूखन भनत दामनगर जंगरपर, तेरेवैर वाहबहै रधिर-
नदीनके ॥ सरजा समध्यवीर तेरे नेर बीजापूर, तैरी वैरानि-
कर चीह न चुरीनके । तेरे वैर देखियतु आगरे दिल्लीमें
मिनु, सिदुरके मिंदु मुखरदु जवनीनके ॥ ७१ ॥

(व्याजस्तुति—दोहा)

निंदासँ स्तुति कढति जहाँ, स्तुतिमें निंदा होइ ॥
व्याजस्तुति तासों कहत, भूपन कनि सब कोइ ॥ ८४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

पीरी पीरी हुँनै तुम देतहो मगाय हमै, सुवरन हमसों परखिकरि
लेत हो । एक पलहीमें लाखै रसनिनों तैत लोग, तुम राजा-
वैकै लाखै देवेको सचेत हो ॥ भूपन भनै यों महाराज शिवराज
वडे, दाँनी दुनीऊपर बहाए कौन हेत हो । रीझि हसि हाथी हमें
सवबोज देत, कहा रीझकर हाथी एक तुमही तौ देत हो ॥७२॥
तौतौ रात्योदिन जग जागत रहत बोज, जागत रहत रात्योदिन
घनरत है । भूपन भात तू पिराजै रजभन्धो बोज, रजभरे देहनि

दरीम विचरत हैं ॥ तूं सुरगनको विदारि बिहरत यो सूर, मढलै
निदारि सुरलोक निहरत हैं । काहे ने मियाजी गाजी तेरोई
सुजस होत, तोसों धरिवर सरिवर मी करत है ॥ ७३ ॥

(आक्षेप—दोहा.)

पहिले कहिण वात कछु, तामों पुनि प्रतिषेध ॥
ताहि कहत आछेप हैं, भूपन सुकवि सुमेध ॥ ४५ ॥

(उदाहरण—सवैया)

जाइ भिरौ न भिरे वचिहौ, भैं भूपन भौसिला भूप सिवासौ ।
जाइ दरी न दुरौ दरियाँ, तजिकै दरिया उलघौ लघुतासौ ॥
सीछन काज उजीराको, कढे घोल यों एदिलसाहि सभामों ।
छटिगयो तो गयो परनालो, सलाहरी राह गहौ सरजासौ ॥ ७४ ॥

(विरोध—दोहा)

द्रव्यक्रिया गुनमें जहाँ, उपजत काजविरोध ॥
तासों कहत विरोध है, भूपन सुकायि सुबोध ॥ ४६ ॥

(उदाहरण—सवैया)

श्रीसरजा सिन तो जस सेतसों, होत हैं साहिनके मुराकारे ।
भूपन तेरे अरुन्न प्रताप, मपेद लखे बुनरा नृपसारे ॥
साहितनै मुखकोप अगिनमों, वैरी जैरे सब पानिप्यारे ।
एन अचभन होत बडो, तिन ओट गहें अरि जात न जारे ॥ ७५ ॥

(विरोधाभास—दोहा)

जहँ विरोधसो जानिये, साध विरोध न होइ ॥
ताहि विरोधाभास कहि, धरनत है सज कोइ ॥ ४७ ॥

(उदाहरण—सवैया)

दखिन्ननायक एक तुही, भुजभामिनिभो अनकूल वहे भावै ।
' दीनन्याल न तोसो दुनी, अरु म्लेच्छने दीनहि मारि मिटावै ॥

श्रीसिवराज भनै कवि भूपन, तेरे सरूपही कोउ न पावै ।
सूरके बसमै सूरसिरोमनि, ब्धैकरि तूँ कुलचढ कहावै ॥ ७६ ॥

(विभावना—दोहा)

भयो काज विनहेत हूँ, वरनैँ हँ जिहि ठौर ॥
तहँ विभावना होतिहै, भापत कविसिरमौर ॥ ७८ ॥

(उदाहरण—सवैया)

वीर बडे बडे मीर पठान, सरो रजपूतनको गनु भारो ।
भूपन आइ तहाँ सिपराज, लियो हरि औरगजेव्रको गारो ॥
दीनो कुब्जाव दिलीपतिको, अरु कीनो उजीरनको मुह कारो ।
नायो न माथहि दच्छिननाथ, न साथमँ सेन न हाँथ हथ्यारो ॥ ७७ ॥

(दोहा)

साहितने सिपराजकी, सहज देव यह पेन ॥
अनरीझे दारिद हैरै, अनखीझे अरिसैन ॥ ७८ ॥

(द्वितीयविभावना—दोहा)

जहाँ प्रगट भूपन भनत, हेतु काज तै होइ ॥
सो विभावना औरऊ, कहत सयाने लोइ ॥ ७९ ॥

(उदाहरण—दोहा.)

आचारज भूपन बढ्यो, श्रीसिवराज खुमान ॥
तुव कृपान धुव धूमतै, भयो प्रताप कृसान ॥ ७९ ॥

(असभव—दोहा)

अनहूवेकी बात कछु, प्रगट भई सो जानि ॥
जहाँ असभव वरनियै, सोई नाम बखानि ॥ ८० ॥

(उदाहरण—कवित्त)

जसनके रोज यों जलूम गहि वेठ्यो जोव इद्र भावै सोऊ लगै

औरगकी परजा । भूपन भात तहँ गरज्यो गियाजी गाजी, जिाकी
 तुनु देसि को न हिंय लरजा ॥ ठान्यो न सलाम भान्यो माहि को
 इलाम भूम, धामके न मान्यो रामसिंह हको थरजा । जातौं पेट
 करि भूप यचै न दिगत ताके, दस तोरि समत तरतैं आयो सरजा ॥८०॥

(दोहा)

औरग यों पठिवाय मन, करतो जतन अनेक ॥
 सिना रेङ्गो दुरग सन, यो जनि गिति षक ॥ ८१ ॥

(असगति—दोहा.)

हेतु अनतहीं होत जहँ, काजु अनतहीं होउ ॥
 ताहि असगति कहत है, भूपनसुमति समोइ ॥५१॥

(उदाहरण—कथित्त)

महाराज मिरराज चढत तुगपर, मीना जात किर गनीम
 अतियलकी । भूपन चलत सरजाजी सेन भूमिपर, छाती दरकनि
 सरी अरिल खलनकी ॥ कियो दौरि घाउ अरीरा उमरावपर,
 गर्द कटि गक सगरेई दिल्लीदलकी । सूरति जराई यीनो दाहु
 पातसाह उर, स्वाही जाय सन पातसाही मुख शलकी ॥ ८२ ॥

(विषम—दोहा.)

कहाँ बात यह कहौं बह, यों जन करत बसान ॥
 ताहि विषम भूपन कहत, भूपनसुकवि सुजान ॥ ५२ ॥

(उदाहरण—सत्रैया)

जाबलि वार सिंगारपुरी, औ जयारिको रामके नैरिको गाजी ।
 भूपन भौसिला भूपतिनैं, सन मारियों दूरि किये जिमि पाजी ॥
 बैर कियो सरजासों खवासग्यों, क्यों उरसैन विजैपुर घाजी ।
 घापुरो पदिलसाहि कहौं कहौं, दिल्लीको दावनगीर सिवाजी ॥८३॥
 लै परनालौ सिना सरजा, वरनाटकलौ सन देस निगूचे ।

वैरिनके भगे बालकवृद्ध, भने कवि भूपन दूरि पहुँचे ॥
 नाँघत नाँघत घोर घने, बन हारि परे यो कटे मनो कूँचे ।
 राजकुमार कहाँ सुकुमार, कहाँ विकरार पहार वे ऊँचे ॥ ८४ ॥

(सम-दोहा)

जहाँ दुहँ अनुरूपको, करिये उचित बखान ॥
 भूपन सम तासो कहत, भूपन सकल सुजाँन ॥९३॥

(उदाहरण—सवैया)

पजहजारिन बीच खराकिय, मे उसका कछु भेद न पाया ।
 भूपन यो कहि औरगजेब, उजीरनिसाँ मुहसाह रिसाया ॥
 कम्मरकी न कटारि दर्ई, इसलामनै गोसलरजाँन बचाया ।
 जोर सिवा करता अनरथ, भली हुइ हथ्य हथ्यार न आया ॥ ८५ ॥

(दोहा)

कछु न भयो के तो लच्यो, हान्यो सकल सिपाह ॥
 भली करै सिजराजसो, औरग करै सलाह ॥ ८६ ॥

(विचित्र-दोहा)

जहाँ कहत है जतन फल, चित्त चाहि विपरीत ॥
 भूपन ताहि विचित्र कहि, बरनत सुकवि सुप्रीत ॥९४॥

(उदाहरण—दोहा)

तै जैसिहहि गड दए, सिवसरजा जम हेत ॥
 लीन्हे कैयौ प्रसमँ, वार न लागी देत ॥८७॥

(प्रहर्षण-दोहा)

जहँ मनवाछित अर्थते, प्रापति कछु अधिकाइ ॥
 ताहि प्रहर्षन कहतहँ, भूपन जे कविराइ ॥९५॥

(उदाहरण—कविस्त)

साहितनै सरजाकी कीरनिसोँ चान्योँ ओर, चाँदनी वितान छिति-

ठोर छाड़यतु है । भूपन भनत ऐसो भूपति भोसिला को है, जाके
द्वार भिलुक सदाई भाइयतु है ॥ महादानी सिमाजी खुमानजी ज
हानपर, दानके प्रमान जाके यों गनाइयतु है । रजतुकी हौस किए
हेम पाइयतु जासो, ह्यनिकी हौस त्रियै हाथी पाइयतु है ॥ ८८ ॥

(विपादन—दोहा)

जहँ चितु चाहे अरथको, उपजै काज विरुद्ध ॥
ताहि विपादन कहत है, भूपन बुद्ध विबुद्ध ॥ ९६ ॥

(उदाहरण—सवैया)

दारहि मारि मुरादको बाँधिकै, सगर साह सुजा त्रिचलाए ।
भूपनवै गसि दिछिदि टोलति, औरउ देस घने अपनाए ॥
वैर कियो सरजा सिमसो यक, औरगके न भये मनभाए ।
फौज पठाइहुती गढ लेनकों, गाँठिहुके गढ कोट गँवाए ॥ ८९ ॥

(दोहा)

महाराज सिवराज तुव, वैरी तजि रसरुद्र ॥
बचिवेको सागर तिरे, बूडे सोकसमुद्र ॥ ९० ॥

(अधिक—दोहा)

जहाँ बडे आधार तें, वरनत बढि आधेय ॥
ताहि अधिक भूपन कहत, जानि सुगाँह प्रमेय ॥ ९७ ॥

(उदाहरण—दोहा)

सिव सरजा तुम हाथको, नहि वसान करि जान ॥
जाको बासी सुजसु सन, त्रिभुवनम न समान ॥ ९१ ॥

(अन्योन्य—दोहा)

अन्योन्या उपकार जहँ, यह वर्णन ठहराइ ॥
ताहि अन्योन्या कहत है, अलकार कविराइ ॥ ९८ ॥

(उदाहरण—सवैया)

तो करसों छिति छाजत दौन है, दौनहुसो अति तो कर छाजै ।
तैहि गुनीकि बढाइ सजै अरु, तेरि बढाइ गुनी सत्र साजै ॥
भूपन तोहिसों राजु विराजतु, राजसों तूँ सिवराज विराजै ।
तो नलसो गढकोट गजै अरु, तूँ गढकोटनिके बल गाजै ॥ ९२ ॥

(विशेष—दोहा)

वरनत है आधेयको, जहँ विनु हूँ आधार ॥
ताहि विशेष बखॉनिही, भूपन कविसिरदार ॥९१॥

(उदाहरण—दोहा)

सिप सरजासों जग जुरि, चद्रावत रजतत ॥
राउ अमरगो अमरपुर, समर रहो रजतत ॥९३॥

(व्याघात—दोहा.)

और काज करता जहाँ, करै औरई काज ॥
ताहिकहत व्याघात है, भूपन कवि सिरताज ॥९०॥

(उदाहरण—सवैया)

ब्रह्म रचै पुरपोत्तम पोषत, सकर सृष्टि सधारनहारे ।
तूँ हरिको अवतारु सिवा, नृपकाज सवारै सभै हरिवारे ॥
भूपन यों अवनी जवनी कहैं, कोउ कहे सरजासों हहारे ।
तूँ सबको प्रतिपालनहार, बिचारे भतार न मारि हमारे ॥९४॥

(गुफ—दोहा)

पूरव पूरव हेतु कै, उत्तर उत्तर हेत ॥
या विधि धारा वरन कवि, गुफ कहत वानेत ॥९१॥

(उदाहरण—सवैया)

सकरकी किरपा सरजापर, जोर घडी कवि भूपन गाई ।

ता किरपासों सुबुद्धि बढी भुव, भौसिला साहितनेकी सवाई ॥
रोज सुबुद्धिसौ दान बढ्यो, अरु दानसों पुन्यसमूह सढाई ।
पुन्यसो धाढ्यो सिवाजि खुमान, खुमानसों धाढि जहाँनभलाई ९५

(दोहा)

सुजसु दान अरु दान धन, धन उपजे विरवान ॥
सो जगमै जाहिर करी, सरजा सिवा खुमान ॥ ९६ ॥

(एकावली—दोहा.)

प्रथम वरनि जहँ छोडिये, जहाँ अरथकी पॉति ॥
वरनत एकावलि अहे, कवि भूपन इहि भॉति ॥६२॥

(उदाहरण—हरिगीत)

तिहु भुवनमै भूपन भनै, नरलोक पुन्य सु साजमै ।
नरलोकमै तीरथ लसैं, महि तीरथोकि समाजमै ॥
महिमा बढी महिमैं भली, महिमै महाराज लाजमैं ।
रजलाज राजति आजु हे, महाराज श्रीसिवराजमै ॥ ९७ ॥

(मालादीपक और सार—दोहा)

दीपक एकावलि मिले, मालादीपक होइ ॥
उत्तर उत्तर उतकरप, सार कहतहैं सोइ ॥६३॥

(उदाहरण दीपकको—कवित्त)

मन कवि भूपनको सिवकी भगति जीत्यो, सिवकी भगत जीति सा
धुजन मयानै । साधुजन जीते या कठिन कलिकाल, कलिकाल जीते
महावीर राजनि महिमाने ॥ जगतमें जीते महात्री महाराजनिते,
महाराज वावनह पातसाहि लेवाने । पातसाहि वावनौ दिष्टीके पात-
साहि, दिष्टीपातसाहि हिदुपनि पातसाहि सिवानै ॥ ९८ ॥

(उदाहरण सारको—सवैया)

आदि बढी रचना है विरचिकी, जामे रखो रचि जीज जडो है

ता रचनामै सुजीव बडो अति, काहेते ता उर ग्यान गडो है ॥
जीवनिमै नरलोग बडो, कवि भूपन भापत पेज अडो है ।
है नरलोगमें राज बडे, सत्र राजनिमै सिनराज नडो है ॥ ९९ ॥

(यथासख्य—दोहा)

क्रमसौं कहि तिनके अरथ, क्रमसौं बहुरि मिलाइ ॥
यथासरय तासो कहत, भूपन जे कविराइ ॥ ६४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

जेई चहो तेई गहौ मरजा सिवाजी देस, सत्रै दले दुवन हते जे
बडे उरके । भूपन भनत भौसिलासों अत्र सनमुख, कोऊ ना ल-
रैया है धरेया धीर धुरके ॥ अफजलखान रसामै जमान फतेखान,
कूटे लूटे जूटे जे उजीर वीजापुरके । अमर मुजान मोहकम बह-
लोलखान, साँडे छाँडे डाँड उमराय दिल्लीसुरके ॥ १०० ॥

(पर्याय—दोहा)

जहाँ अनेकनिमै रहे, अस्थिर है करि एक ॥
ताहिकहत परयाय है, भूपन सुकवि विवेक ॥ ६५ ॥

(उदाहरण—दोहा)

जीति रही अपरगमै, सत्रै छत्रपति छाँडि ॥
तजि ताहको अत्र रही, सित्र सरजा कर भौँडि ॥ १०१ ॥

(कवित्त)

कोट गढ देकै माल मुलकमें वीजापुरी, गोलकुडावारो पीठेहीकों
सरकतु है । भूपन भनत भौंसिला भुवाल भुजनल, रेवाहीके पार
अनरग हरकतु है ॥ पेसकसे भेजत इरान फिरगानपति, उनहके
उर याकी धाक धरकतु है । साहितने सिवाजी खुमान या जहाँ-
नपर, कौने पातसाहके न हिये परकतु है ॥ १०२ ॥

ता निरपासौ सुसुद्धि बढी भुज, गौसिला साहितनेकी सगई ॥
रोज सुसुद्धिसौ दान बढ्यो, अर दानमौ पुन्यसमूह सदाइ ।
पुन्यमो घाढ्यो भिवाजि खुमान, खुमासो घाटि जहाँनभलाई ९६

(दोहा)

सुजसु दान अर दान धन, घा उपजे किरवा ॥
सो जगमै जाहिर करो, सरना सिमा सुमा ॥ ९६ ॥

(एकावली-दोहा)

प्रथम घरनि जहँ छोडिये, जहाँ अरथकी पाँति ॥
वरनत एकावलि अहँ, कवि भूपन इहि भाँति ॥६२॥

(उदाहरण—हरिगीत)

तिहु भुवनमै भूपन भनै, नरलोक पुन्य सु साजमै ।
नरलोकमै तीरथ लसै, महि तीरथोकि समाजमै ॥
महिमा बडी महिमै भली, महिमै महाराज लाजमै ।
रजलाज राजति आजु है, महाराज श्रीसिनराजमै ॥ ९७ ॥

(मालादीपक और सार-दोहा)

दीपक एकावलि मिले, मालादीपक होइ ॥
उत्तर उत्तर उतकरप, सार कहतहँ सोइ ॥६३॥

(उदाहरण दीपकको—कवित्त)

मन कवि भूपनको सिगकी भगति जीत्यो, सिगकी भगत जीति सा
धुजन सयानै । साधुजन जीते या कटिन कलिकाल, कलिकाल जीते
महारीर राजनि महिसानै ॥ जगतमे जीते महारीर महाराजनिते,
महाराज घावनहू पातसाहि लेवानै । पातसाहि बावनौ दिह्रीके पात
साहि, णिछीपातसाहि हिंदुपति पातसाहि सिगानै ॥ ९८ ॥

(उदाहरण सारको—सवैया)

आदि बडी रचना है विरचिकी, जामै रह्यो रचि जीव जडो है

ता रचनामै सुजीय बडो अति, काहेते ता उर ग्यान गडो है ॥
जीवनिमें नरलोग बडो, कवि भूपन भापत पैज अडो है ।
है नरलोगमै राज बडे, सत्र राजनिमै सिनराज बडो है ॥ ९९ ॥

(यथासख्य—दोहा)

क्रमसौ कहि तिनके अरथ, क्रमसौ चहुरि मिलाइ ॥
यथासरय तासो कहत, भूपन जे कविराइ ॥ ६४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

जेई चहौ तेई गहो सरजा सिनाजी देम, सत्रै दले दुवन हते जे
बडे उरके । भूपन भनत भौसिलासों अत्र सनमुख, कोऊ ना ल-
रैया हे धरेया धीर धुरके ॥ अफजलखान रसामै जमान फत्तेखान,
कूटे लूटे जूटे जे उजीर त्रीजापुरके । अमर सुजान मोहकम बह-
लोलखान, खाँटे छाँडे डाँड उमराय दिलीमुरके ॥ १०० ॥

(पर्याय—दोहा)

जहाँ अनेकनिमें रहे, अस्थिर है करि एक ॥
ताहिकहत परयाय है, भूपन सुकवि विवेक ॥ ६५ ॥

(उदाहरण—दोहा)

जीति रही अत्रगमें, सने छत्रपति छाँडि ॥
तजि ताहकों अत्र रही, सिन सरजा कर मौँडि ॥ १०१ ॥

(कवित्त)

कोट गढ दैके माल मुलकमें धीजापुरी, गोलजुडावारो पीठेहीको
सरकतु है । भूपन भनत भौसिला भुनाल भुजगल, रेगहीके पार
अवरग हरकतु है ॥ पेमकसें भेजत इरान फिरगानपति, उनहके
उर याकी धाक धरकतु है । साहितनै सिनाजी खुमान या जहाँ
नपर, कौने पातसाहके न हिये सरकतु है ॥ १०२ ॥

(परिवृत्ति—दोहा)

एक वातकों दे जहाँ, आन वात को लेत ॥
ताहि कहत परिवृत्ति है, भूपन मुकवि सुचेत ॥६६॥

(उदाहरण—कवित्त)

दच्छिनधरन धीरधरा खुमान गढ, लेत गढ धरनिताँ धरमु
दुवारु दे । साहि ररनाइको सपूत महानाहु लेत, मुलुक महान
छोनिसाहिनकों मार दे ॥ सगरम सरजा सिनाजी अरिसैननिको,
सारु हरि लेत हिदवान सरमार दे । भूपन भौमिला जय जसके
पहार लेत, हरजूको हारु हरगनकों अहार दे ॥ १०३ ॥

(परिसख्य—दोहा.)

अनत वरजि कछु वस्तु जहँ, वरनत एकहि ठौर ॥
ताहि कहत परिसख्य है, भूपन कवि दिलदौर ॥६७॥

(उदाहरण—कवित्त)

अति मतनारे जहाँ द्विरे निहारियतु, तुरगनमैही चचलाई
परकीति हे । भूपन भनत जहाँ पर लगे वाननिमें, कोरु पच्छिनिहि
माहँ निछुरन रीति हे ॥ गुनिगन चोर जहाँ एक चित्तहीके लोक,
प्रथै जह एक सरजाकी गुनप्रीति हे । कपु बदलीमै बैर वृक्ष बद-
लीमै सिवराज, अदलीके राजमै यों राजनीति है ॥ १०४ ॥

(विकल्प—दोहा)

कै यह कै वह कीजिये, जहँ कहनाउति होइ ॥
ताहि विकल्प बखान ही, भूपन कवि सब कोइ ॥६८॥

(उदाहरण—सवैया)

मोरग जाहु नि जाहु कुभाँउ, सिरीनगौर हु कवित्त बनायै ।
वाँधव जाहु नि जाहु अमेर किं, जोधपूर नि चितोरहि धायै ॥

जाहु कुतुब्य कि एदिलपे कि, दिलीसहुपे किमिजाहु बुलायै ।
 भूपन गाइ फिरौ महिमै बनहै, चित चाह सिवाहि रिझायै ॥१०९॥
 देसनि देसनि नारि नरेमनि, भूपा यों सिल देहि दयासों ।
 मगन हो मन दत्त गहाँ तिन, कत तुझै है अनत महासों ॥
 कोट गहौ कि गहौ बनओट कि, फौजकि जोट सहौ प्रभुतासों ।
 और करो किन कोट कराह, सलाह पिना वचिहो न सिपासों १०६

(समाधि—दोहा)

और हेतु मिलिकरि जहाँ, होत सुकर अति काज ॥
 ताहि समाधि वखानहाँ, भूपन जे कविराज ॥६९॥

(उदाहरण—सवैया)

बैरु कियो मित्र चाहतु हो, तवलौ अरि बाण्यो कटार कठेठ्यो ।
 योहि मलेच्छहि छोडे नहीं, सरजा मन तापर रोसमे पैठ्यो ॥
 भूपन क्यों अफजल्ल बचै, अटपाउके सिंहको पाँउ उमेठ्यो ।
 वील्लुके घाय धौं क्योंइ धरक है, तौलगि धाय धराधर वैठ्यो ॥१०७॥

(समुच्चय—दोहा.)

एक वारगी जहाँ भयो, बहुत जानिको बध ॥
 ताहि समुच्चय कहत है, भूपन देखि प्रबध ॥७०॥

(उदाहरण—सवैया)

मौंगि पठायो सिपा कछु देसु, उजीर अजाननि बोल गहे ना ।
 दोरि लियो सरजा परनालो यों, भूपन जो दिन दोउ लगे ना ॥
 धाँकसो खाक बिजेपुर भो, मुख आइगो खान खवासके फेना ।
 भै भरकी करकी हरकी धरकी, उर एदिलसाहिकी सेना ॥ १०८ ॥

(दोहा)

वस्तु अनेकनिको जहा, चरनत एकहि ठौर ॥
 ताहि समुच्चय कहत है, कोऊ कपिसिरमोर ॥७१॥

(उदाहरण—सवैया)

सुंदरता गुरता प्रभुता भनि, भूपन होतिहे आदर जामै ।
सज्जनता औ दयालुता दीनता, कोमलता झलकै पर जामै ॥
दान कृपानहुको करिगो, करिवो अभैदानहुको वर जामै ।
साहिनसों रनटेक निनेक, इते गुन एउ सिवा सरजामै ॥१०९॥

(प्रत्यनीक—दोहा)

जहँ जोरावर सत्रुके, पच्छीप कर जोर ॥
प्रत्यनीक तासों कहत, भूपन बुद्धिअमोर ॥७२॥

(उदाहरण—सवैया)

राज धरौ सिपाजीसों लरौ सन, सेयद मीर पठान पठाइकैं ।
भूपन वे गढ कोट निहारे, यहाँ तुम क्यौ मठ तोरे रिसाइकैं ॥
हिदुनकेपनिमो न वसानि, मताप्रत हिदुगरीजन आइकैं ।
लीजे बलक न दिहिके गालम, आलम आलमगीर कहाइकैं ११०

(अर्थापत्ति—दोहा)

वह जीत्यो तौ यह कहा, यों कहनाप्रति होइ ॥
अर्थापत्ति बग्यानहीं, ताहि मयाने लोइ ॥ ७३ ॥

(उदाहरण—रुचिस)

सयनमै साहिनको सुनरी मिसाने ऐम, सरजासों बैर जिनि करौ
महाप्रली है । पेमरुसैं भेजत मिलाइनि परतनाल, सुनिकै जिहा-
जनि हनै करनाट थली है ॥ भूपन भनत गढ कोट माल मुलकदै,
सिपामों सलाह राखिय तो बात भली है । जाहि देत दड तुम ड-
रिके असड सोई, दिही दलमलीतौ तिहारी कहा चली है ॥१११॥

(काव्यलिंग—दोहा)

हैं डिढाइवे जो अरथ, ताको करत डिढाड ॥
काव्यलिंग तासों कहत, भूपन जे कविराड ॥७४॥

(उदाहरण—कवित्त)

साइत लै जीतिण तिलाइतिको साहि कीजे, बलक तिलाइतिके
वदि अरिडारै । भूपन भनत कीजे उत्तरी भुवाल बस, पूरवको
लीजिये रमाल गजठात्र रे ॥ दच्छिनक नाँहसों सिपाह निज बेरु
करि, अग्रगसाहिजू कहाइये न वारै । कैसे सिमा मनु गढ
देत अग्रगै गढ, गाटे गढपती गढ लीने ओर रावरे ॥ ११२ ॥

(अर्थान्तरन्यास—दोहा)

काग्रो अरथ ताहीलियै, वही अरथ जहँ होई ॥

सो अर्थान्तरन्यास है, भूपन कहि सजकोई ॥ ७५ ॥

(उदाहरण—सवैया)

साहितनै मरजा समरथ, करी करनी धरनीपर नीकी ।
भुलियो भोजसे विक्रमसे ओ, भई बलि बिनकी कीरति फीकी ॥
भूपन भिच्छुक भूप भये, भलि भीख लै केवल भौसिलाहीकी ।
नैमिकि गीश धनेम करे, लखि ऐसिये रीनि सदा सिमजीकी ॥ ११३ ॥

(प्रौढोक्ति—दोहा)

जहँ उत्तरप अहेतुको, वरनत है करि हेत ॥

प्रौढउक्ति तासों कहत, भूपन कायि विरदैत ॥ ७६ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

मानसरयासी हस प्रसन समान होत, चदनसो घन्थो घनसारी
न घरीनहै । नारदकी सारद्री हाँमीभे कहाँमी सम, सरद्री
सुरसरी कौत पुडरीनहै ॥ भूपन बात छन्थो छीरविभे नोह
लैत, फेनलपट्टागै पेरानतनी करी कहै । वैलासभ ईस ईममीस
रजनीम यहाँ, अग्रीम सिपाके ७ जतको मरीकहै ॥ ११४ ॥

(मभाप्रना—दोहा.)

जु यों हाँइ सी हाँइ यों, यह मभाघन होइ ॥

मभायना, भूपन कायि सबकोइ ॥ ७७ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

लोमससरीरिणी आयु होइ कौनऊ उपाउ, तापर कवच नो वरन
 वारो धरिये । तापर जो हृजिण महसनाहु तापर, सहमगुनसाहस जो
 भीमहूतै करिये ॥ भूपन कहैं यों अवरगजूसों उमराव, नाहक
 कही तौ जाय दच्छिनमै मरिये । चलैना करू इलाज भोजियतु
 वेही बाजु, ऐसी होइ साजु तौ मित्रासों जाइ लरिये ॥ ११९ ॥

(मिथ्याध्यवसिति—दोहा.)

झूठ अर्थकी सिद्धिको, झूठो वरनत आन ॥
 मिथ्याध्यवसिति ताहिकां, भूपन कहत सुजान ॥७८॥

(उदाहरण—दोहा)

पगनमै चल याँ लसैं, ज्यौ अग्रपग ऐन ।
 धुममो धुमसो मेरुसो, सिमरजाको घेन ॥११६॥

(उल्लास—दोहा)

एकदिके गुन दोष तैं, ओरेके गुन दोष ॥
 वरनत हँ उल्लास सो, सकल मुकवि करि तोष ॥७९॥

(उदाहरण—सवैया)

काज मही सिमराज बली, हिदयान बढाइवेनै उर ऊँटै ।
 भूपन भू निरम्लेच्छ करी, चहै म्लेच्छनि मारिवेको रन कूटै ॥
 हिंदु बचाइ बचाए इही, अमरेस चढानतलौ कोठ टूटै ।
 चद अलोकनि लोक सुखी, यहिकोव अभाग जोसोक न छूटै ॥११७॥

(दोषेण गुणो यथा—कवित्त)

देस दहनइ कीनै लूटिके सजाने लीनै, वचे न गढोई कतु गढ
 सिरताजके । तोरादार सकल तिहारे मनसजदार, डाँडे जिनके
 सुभाय जगदैं मजाजके ॥ भूपन भनत पातसाहिको यौ लोग
 सन, बचन सिरायत सलाहकी इलाजके । डावरेकी बुद्धि व्है
 के बावरे न कीजै बैरु, रावरेके बैरहोत काज सिमराजके ॥११८॥

(गुणेन गुणो यथा—दोहा)

नृप सभानमें आपनी, हौंन बडाई काज ॥
साहितनै सिवराजके, करत कवित कविराज ॥११९॥

(दोषेण दोषो यथा—दोहा)

सिव सरजाके बेरुको, यह फल आलमगीर ॥
छूटे तेरे गढ सनै, कूटेगण उजीर ॥ १२० ॥

(अवज्ञा—दोहा.)

ओरेके गुन दोष तें, ओरेके गुनदोष ॥
जहाँ अवज्ञा ताहि सों, कहत सुकवि मतिपोष ॥८०॥

(उदाहरण—सवैया)

औरनिके अनगाढे कहा अरु, वाढे कहा नहि होत चहा है ।
औरनिके अनरीझे कहा अरु, रीझे कहा न मिटावत हा है ॥
भूपन श्रीसिवराजहि मागिए, एक महीपर दानि महा है ।
माँगन औरनिके दरजार, गण तौ कहा न गए तौ कहा है ॥१२१॥

(अनुज्ञा—दोहा)

जहाँ सरस गुन देखि कै, करे दोषकी हौंस ॥
ताहि अनुज्ञा कहत है, भूपन कवि इहि रौंस ॥८१॥

(उदाहरण—कवित्त)

जाहिर जहाँन सुनि सुनि दानके वसान, महादानि साहितनै गरी-
वनियाजके । भूपन जवाहिर जलूस जरयाफ जोति, देखि सिव सर-
जाकी सुकप्रिसमाजके ॥ तपु करि करि कमलापतिसों मागतयो,
लोग सन करि मनोरथ ऐसी साजके । बैपारी जहाजके न राजा
भारी राजके, भिखारी हमै कीजै महाराज सिवराजके ॥ १२२ ॥

(लेश—दोहा)

जहाँ बरनत गुन दोषकै, कहे दोष गुनरूप ॥
भूपन ताको लेश कदि, गावत है कविभूप ॥८२॥

(उदाहरण—दोहा)

उदैमान राठवार गौ, धीरजु गढ धरि पेंड ॥
 प्रगंठे फल ताको लया, परिगो सुरपुर पेंड ॥१२३॥
 कोऊ वचत न सामु हे, सरजामों रन माजि ॥
 भलि कीनी पिप्र समरते, जीव वचायो भाजि ॥१२४॥

(तद्गुण—दोहा.)

जहाँ आपनो रग तजि, गहै ओर कौ रग ॥
 ताको तद्गुन कहत है, भूपन बुद्धिउत्तग ॥८३॥

(उदाहरण—कवित्त)

पया मानसर आदि अगन तलाय लागे, जिनकी परनिमै अकथ्य
 जूथ गथके । भूपन यों माज्यो राउगढ सिपगज रहै, देव चनि
 ताहिक बनाइ राजपथके ॥ तिनजल अमलकान आसमान
 मेव्हे, लेतह विराम जहाँ इदु आ उडु थके । मल उत्तग मनि
 जोनिनके सग आनि, बेयो रग चकहा गहत ररिथके ॥१२५॥

(पूर्वरूप—दोहा)

प्रथमरूप मिटिजात जहा, फेरि वैसई होतु ॥
 भूपन पूरवरूप सो, कहत ताहि कप्रिगोतु ॥८४॥

(उदाहरण—मवैया)

ब्रह्मके आननतै तिकसी, अतिशेजु पुनीत तिहँपुर मानी ।
 राम जुधिष्ठिरके वरने, यल्माइहुँ व्यासके सग सुहानी ॥
 भूपन यों कप्रिके कविराजनि, राजनिने गुन पाप निसानी ।
 पुन्यचरित्र सिमा सरजें, नरन्हाइ पत्रि नई वर बानी ॥१२६॥
 यों सिरको छहरायत छार है, जात उठे असमान नभूरे ।
 भूपन भूधरऊ धरनै, जिनके धुनि धवनि यों बलरूरे ॥
 ते सरजा सिपराज दिये, कप्रिराजनिको गजराज गरूरे ।
 सुडनिसो पहिले जिन सोरिनिके फेरि महामदमों नद पूरे ॥१२७॥

श्रीसरजा सलहेरिके जुद्ध, घने उमरावनिके घर घाले ।
 कुभ चणवत सैठ पठान, कप्रधनि धावत भूधर हाले ॥
 भूपन यों शिवराजकी धारु, भये पियरे अरुने रगपाले ।
 लोहै कटे लपटे अति लोहु, भण मुह मीरनके पुनि काले ॥१२८॥
 यों कप्रि भूपन भापतुहै, यकतो पहिले कलिकालकि सैली ।
 तापर हिदुनकी सत्र राह सु, ओरगसाह करी अति मेली ॥
 साहितने शिवके डरसौ, तुरको गहि वारिधिकी दिसि पैली ।
 वेद पुराननकी चरचा, अरचा दुज देवाकी पुनि फेली ॥१२९॥

(अतद्गुण—दोहा)

जहँ सगतिमै औरको, गुन कछुयो नहि लेत ॥
 ताहि अतद्गुण कहत है, भूपण सुकवि सुचेत ॥८५॥

(उदाहरण—सचैया)

दीनदयाल दुनी प्रतिपालक, जे करता निरम्लेच्छ महीके ।
 भूपन भूधरि उद्धरियो, सुने और जिते गुनके सत्र जीके ॥
 या कलिमै अत्रतार लियो तउ, तेई सुभाग मिनाजि पलीके ।
 साइ धर्यों हरि ते तरुप पै, काज करै सिगरे हरिहीके ॥१३०॥

(दोहा)

शिवसरजाकी जगतम, राजति कीरति नौल ॥
 अरितियद्वगजन हरे, तऊ धोलकी धौल ॥१३१॥

(कवित्त)

साहिनद सरजा सिवाके सामुख आइ, कोऊ प्रविजाइ न गनीम
 भुजवलमै । भूपन मनत भौमिलाकी दलदौर सुनि, धाकही
 मरत म्लेच्छ औरगके दलमै ॥ रात्योदिन रोपति रहति जपनी है सोगु,
 पन्थोई रहतु दिछी आगरे सकलमै । कज्जलकलित असुवा-
 निके उमग सग, दूनो होत रोज रग जमुाके जलमै ॥ १३२ ॥

(मीलित-दोहा)

महान यन्तुमं मिळि जहों, हांत न नेनु उमाड ॥
मीलित तामों कहत न, भूपन जे परिराड ॥८६॥

(उदाहरण—कवित्त)

इद्र तित हेतवन्निग्न गाष्ट्र अरु, इद्रको अजुज हेरे दुग्गधि
पणीपको । भूपन मनत तुम परिराका हसहेरे मिगि हेरे हमको
पछोर रमनीपरी ॥ गाश्ती मिथराज फनी करी हे तेनु, होत
हे अ । ते देा कोटियो गेगियरी । पाया न हेरे तेरे जनी
हेराने तित, गिरिका गिरिम हेरे गिरिजा गिरिमकी ॥ १३१ ॥

(उन्मीलित-दोहा)

महान यन्तुमं मिले पुनि, जानत कानहु हेन ॥
उन्मीलित तामों कात, भूपन सुकवि गुचेत ॥८७॥

(उदाहरण—दोहा)

तिगगरजा तुम गुजमगै, मिले धौल छवितूल ॥
धौल यास्त जाणियनु, हम चमेगीदूल ॥ १३४ ॥

(सामान्य-दोहा.)

भिन्न रूप जहें सहसमं, भेदु न जान्यो जाइ ॥
साहि कहत सामान्य है, भूपन कविसमुदाइ ॥८८॥

(उदाहरण—सवैया)

पावसरी इकराति भलीति, महानली मिह सिवा तमनेतें ।
म्लेच्छ हजारिनिधी मरगे, दसही भरदृष्टिके शमनेतें ॥
भूपन हालि उठे गड भूमि, पठान कवधतिके धमनेतें ।
गीरतिके अवगाग गण मिलि, भूपनिसों चपला चमनेतें ॥१३५॥

(विशेषक—दोहा.)

भिन्न रूप जहँ सहस्रमें, लहिए कछुक विशेष ॥
ताहि विशेषक कहतहै, भूपन सुमति उलेख ॥८९॥

(उदाहरण—कवित्त)

अहमदनगरके थान किरवान लेकैं, नवसेरीखानसो खुमान
भिन्यो बलतै । प्यादेनसों प्यादे पखरेतनिसों पखरेत, वखतरवारे
वखतरवारे हलतै ॥ भूपन मनत यो समान घमसान भयो,
जान्यो ना परतु कोन आयो कौन दल तै । समनेप ताके तहों सरजा
मिवाके वाँके, वीर जाने हँकेदेत मीर जाने चलते ॥ १३६ ॥

(पिहित—दोहा)

परके मनकी जानि गति, ताकों देत जनाइ ॥
कछु क्रिया करि कहतहै, पिहित ताहि कविराइ ॥९०॥

(उदाहरण—दोहा)

गैरिमिसिल ठाढे सिगा, अतरजामी नाम ॥
प्रगट करी रिस साहिकों, सरजा करि न सलामा ॥१३७॥
आनि मिल्यो अरि यों गह्यो, चखनि चकत्ता चाउ ॥
साहितनै सरजा सिवा, दियो मुच्छपर ताउ ॥ १३८ ॥

(प्रश्नोत्तर—दोहा)

कोऊ पूछँ बात कछु, कोऊ उत्तर देत ॥
प्रश्नोत्तर तासों कहत, भूपन बुद्धिनिकेत ॥९१॥

(उदाहरण—सवैया)

लोगनिसों भनि भूपन यों कहै, खान सवास कहा मिए दैही ।
आवत देमनिलेत सिगा, सरजे मिलिहो भिरहौ वि भगौही ॥
पदिलकी सभा घोलिउटी यों सलाह करौ न करैं भजिजैही ।
लीहौ बहा तरिकैं अफजल, कहा लरिकैं तुमहँ अउ लैही ॥१३९॥

(दोहा)

को दाता को नर उडो, को जगपालन हार ॥
कवि भूपन उत्तर लियो, सिमनृप हरिअपतार ॥१४०॥

(व्याजोक्ति-दोहा)

आन हेतसौ आपनो, जहाँ छिपावत रूप ॥
व्याजउकति तासों कहत, भूपन सब कविभूप ॥ ९२ ॥

(उदाहरण—सवैया)

साहिनके उमराव जितेऊ, सिमा सरजा सब लूटिलए हैं ।
भूपन ते मिनगैलत व्हैकैं, फकीरवहै देम निदेम गए हैं ॥
लोग कहै तुझै दक्खिन जेयि, सिमोदिया रावगे हाल ठये हैं ।
देत रिसाइकैं उत्तर यों, हमही दुनियाते उदास भए हैं ॥ १४१ ॥

(दोहा)

सिवा वैर ओरगनडा, लगीरहै नित आहि ॥
कनि भूपन वृझे सदा, कहे देत दुख साहि ॥१४२॥

(लोकोक्ति और छेकोक्ति-दोहा)

कहनावति जो लोककी, लोकउकति सो जाँनि ॥
जहाँ कहत उपमानहै, छेकउकति सो माँनि ॥९३॥

(लोकोक्ति उदाहरण—दोहा)

सिम सरजाकी सुधि करौ, भली न कीनी पीव ॥
सुनावहै दक्खिन चले, धरेंजात कर्ह जीव ॥ १४३ ॥

(छेकोक्ति उदाहरण—दोहा)

जे सुहात सिमराजकों, वे कवित्त रसमूल ॥
जे परमेसुरकीं चढै, तेई आछे फूल ॥ १४४ ॥

(वक्रोक्ति-दोहा)

जहँ श्लेषकै काकुसौं, अरथ लगावे और ॥
वनउकति तासों कहत, भूपन कवि सिरमौर ॥९४॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितने तेरे बैरु बेरिनको कांतुकसों, बूझत फिरत कहौ कोह रहे
तचिहौ । सरजाके डर हम आए इतै भाजि तौ व, सिव सोइ
एहि याही ठौरतें उकचिहौ ॥ भूपन भनत वे कहैकै हम सिव
कहै, तुम चतुराईसों कहत बात रचि हौ । सिव जापै रुठयो तौ
निपट कठिनाई तुम, बेर त्रिपुरारिके त्रिलोकमे न वचिहौ ॥१४९॥

(दोहा)

करि मुहीम आए कहे, हजरति मनसन टैन ॥
सिवसरजा सों जग जुरि, ऐहै बचिकै है न ॥१४६॥

(स्वभावोक्ति—दोहा)

साँचो त्योंही वरनियै, जैसो जातिमुभाय ॥
ताहि सुभावोक्ति कहै, भूपन जे कविराय ॥९५॥

(उदाहरण—कवित्त)

दानसमै द्विज देखि मेरहू कुनेरहूकी, संपत्ति लूटाइवेको हियो
ललकतुहै । साहिके सपूत सिव साहिके घटनपर, सिवकी कथा-
निमै सनेह झलकतुहै ॥ भूपन जहाँन हिंदवानिके उबारिवेकौ,
तुरकानि मारिवेकौ वीर बलकतुहै । साहिनसों लरिवेकी चरचा
चलति आति, सरजाके दृगनि उछाह छलकतुहै ॥ १४७ ॥
काहूके कहै सुनेतै जाहीओर चाहै ताही, ओर इकटक घरी चारिक
चहतहै । भूपन भनत कहैतैं कहत घात, कहैतैं पियत खात
ऊँची साँसति जहतहै ॥ पोढेहै तौ पोढे धँढे धँढे खरे खरे हम,
कोहै कहा करत यों भ्यान न गहतहै । साहिके सपूत सिव साहि
तेरे बैर ऐसे, साहि सत्र रात्योदिन मोचनु रहतहै ॥ १४८ ॥

(भाविक—दोहा)

भयो होनहारो अरथ, घरनत जहँ परतच्छ ॥
ताकों भाविक कहतहै, भूपनकवि मतिस्वच्छ ॥९६॥

(उदाहरण—कवित्त)

थजौ भूतनाथ मुडमाल लेत हरसत, भूतनि अहार लेन अजहँ
 उछाह है । भूपन भनत अजौ काटे करपालनिके, वारे जुजरनि
 परी कठिन कराह है ॥ सिंघ सिंघराज सलहेरके समीप ऐमो,
 कीछो वतलैंन लिछीलको सिपाह है । नदी समडल रहेलनि
 रुधिर अजौ, अजौ रथिमडल रहेलनिपी राह है ॥ १४९ ॥
 गजघटा उमहै महावनघटामी घोर, भूतल सडल मदनलमों
 पटनुहे । भूपन उदत भौसिलाभुनालकों यों तेज, जेतो सत्र
 वारहो तरनिमै बढनुहे ॥ बेला छाडि उछलत मातौ नीरनिधि मन,
 मुदित महेसभौज गौचतु लहतहै । मिवाजी सुगान दल दौरत
 जहँन पर, आनि तुरगानि पर प्रलौ प्रगटनुहे ॥ १५० ॥

(भाविकछवि—दोहा)

जहँ दूरस्थित वस्तु को, देखत बरनत कोइ ॥
 भूपन भूपनराज यह, भाविकछवि सो होइ ॥१७॥

(उदाहरण—सवैया)

सूरनि साजि पठावत हँ, निज फौज लसै मरहइनि फेरी ।
 औरग आपनि दुगग जमाति, मिलोकत तैरेहि फौज दरेरी ॥
 साहितन सिय साहि भई, भनै भूपा यों तुन धौक घनेरी ।
 रातिहुँ घोस दिलीसनके तुव, सेनकि सूरनि सूरनि घेरी ॥ १५१ ॥

(उदात्त—दोहा)

अति सपति बरनत जहाँ, तासों कहत उदात्त ॥
 कै आनै सु लखाइये, बडी आनकी वात ॥१८॥

(उदाहरण—कवित्त)

द्वारनि मतग दीसै अगने तुरग हासै, वनीजन धारन असीसै
 जसरतहै । भूपा बलौ जरवाफके सम्याने ताने, शालरि

मोतिनके शुड झुरतहै ॥ महाराज सिवाके निवाजे कविराज
ऐसे, साजिके समाज जिहि ठोर विहरतहैं । लालकरै प्रात तहाँ
नीलमनि करै राति, इहिँभाँति सरजाकी चरचा करतहै ॥ १९२ ॥

(दोहा)

या पूनामें मति टिकौ, खानमहादुर आइ ॥
छाँई साइस्तखानकों, दीनी सिवा सजाइ ॥ १९३ ॥

(अत्युक्ति—दोहा)

जहाँ सूरतादिकनकी, अति अधिकाई होइ ॥
ताहि कहत अतिउक्ति है, भूपन जे कविलोइ ॥ १९४ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

साहितनै सिवराज ऐसे देत गजराज, जिन्है पाइ होत कविराज
वेफिकिरि है । झूमति झलझलानि झलै जरवाफिनकी, जकरे ज-
जीर जोर करत किरिरि है ॥ भूपन भवर मननाँत घननाँत घट,
पग झननाँत मनौ घनरहे धिरि है । जिनकी गरज सुनि दिग्गज
वेआव्र होत, मदहीके आन गरकान होत गिरि है ॥ १९४ ॥
आजु यहि समै महाराज सिवराज तुही, जगदेव जनक जजाति
अप्रीकसो । भूपन भनत तेरे दान जलनिधि मै, गुनिनको दा-
रिद गयो वहि खरीकसो ॥ चदकर किंजलक चाँदनी पराग उडु,
वृद मकरद बुद पुजके सरीकसो । कुदसम कयलास
नाकगगनाल तेरे, जस पुडरीकको अकास चचरीकसो ॥ १९५ ॥

(दोहा)

महाराज सिवराजके, जेते सहज सुभाइ ॥
औरनिको अतिउक्तिसे, भूपन कहत धनाइ ॥ १९६ ॥

(निरुक्ति—दोहा)

नामनिकों निज बुद्धिसों, कहियै वात बनाइ ॥
तासों कहत निरुक्ति है, भूपन जे कविराइ ॥ १०० ॥

(उदाहरण—दोहा.)

कविगनको दारिदुरद, यहाँ दल्यौ क्षमान ॥
याते श्रीसिवराजको, सरजा कहत जहाँन ॥१९७॥

(हेतु—दोहा)

या निमित्त यहई भयो, यों जहाँ वर्नन होइ ॥
भूपन हेतु बखानहाँ, सकल सयाने लोइ ॥१०१॥

(उदाहरण—कवित्त)

दारुन देयत हिरगाकुस निदारवेकों, भयो नरमिह रूप तेजु
पिकरारहै । भूपन भनत लोही रावनके मारिवेकों, रामचद्र
भयो रघुकुलसिरदारहै ॥ कसके कुटिल बलवसनि निदरिवेकों,
भयो जदुराइ बसुदेवको कुमारहै । पृथ्वीपुरूहत साहिके सपूत
सिवराज, म्लैछनिके मारिवेको तेरो अवतारहै ॥ १९८ ॥

(अनुमान—दोहा)

जहाँ काज तें हेतु कै, जहाँ हेतु तें काज ॥
जानि परत अनुमान सों, कहि भूपनकविराज ॥ १०२ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

चित्त अनचेन ओंस उमगत नेन देखि, बीनी कहैं बैन मियो
कहियतु काहिनै । भूपन भनत वृक्षे आए दरवार ते, कपत बार-
बार क्यों सम्हारत न माहिनै ॥ सीनो धक्धकतु पसीनो आयो देह
सम, हीनो भयो रूप न चितोत वामै दाहिनै । मित्राजूकी सक मान
गएहौ सुखाइ तुझै, जानियतु दक्खिनको सूना कन्यो साहिनै ॥ १९९ ॥

(छेक और लाटानुप्रास—दोहा)

स्वरसमेत अक्षरकि पद, आवत सहस प्रकास ॥
भिन्न अभिन्ननि पदनि कहि, छेक लाटअनुप्रास ॥ १०३ ॥

(छेक यथा—अमृतध्वनि.)

दिलिय दलनि गजाइ करि, सिव सरजा निरसक ।
 लूटिलियो सूरति सहर, बकककरि अति डक ॥
 उकककरि अति, डकककरि, अससककुलि सल ।
 मोचचकित, भरोचचलिय, निमोचचखजल ॥
 तट्टट्टइमन, कट्टट्टिकसोइ, रट्टट्टिलिय ।
 सददिसिदिसि, मददविभइ, रददिलिय १६०
 गत बलसान दलेल हुव, सानवहादुर मुद्ध ।
 सिव सरजा सलहेरि डिग, कुद्धद्धरि किय जुद्ध ॥
 बुद्धद्धरि किय, जुद्धद्धरि अरि, अद्धद्धरि करि ।
 मुड्डुडरि तहँ, रुड्डुडकरत, डुडडुगभरि ॥
 खेदिहरवर, छेदिइयकरि, मेइइधि दल ।
 जगगगतिसुनि, रगगगलि, अवरगगगतनल १६१

लिय धरि मुहकमसिंह कहँ, अरु विसोर नृप कुम्भ ।
 सिवसरजा सग्राम किय, भुम्मम्मधि करि धुम्म ॥
 भुम्मम्मधि करि, धुम्मम्मडि रिपु, जुम्मम्मलि करि ।
 जगगगरजिउ, तगगगरव, मतगगगन हरि ॥
 लकखकखन रन, दकखकखलनिअ, लकखकखत भरि ।
 मोल्लल्लहि जमु, नोल्लल्लरि, बहलोल्लल्लिय धरि ॥ १६२ ॥
 लिय जित दिह्ठीको मुलुक, सिवसरजा जुरि जग ।
 भनि भूपति भूपति भजे, भगगगरव तिलग ॥
 भगगगरव, तिलगगगयउ, कलिगगगलि अति ।
 दुदिइवि दुहु, ददददलनि, मिलदददहसति ॥ लच्छ
 च्छिउन करि, म्लेच्छच्छय किय, स्वच्छच्छवि छिति ।
 ढाल्लल्लगि, नरपाल्लल्लरि, पराल्लल्लियजिति ॥ १६३ ॥

(उदाहरण—कवित्त)

ऐसे बाजिराज देत महाराज सियराज, भूपन जे वाजकी समाजै
निदरतु है । पौन पाँइ हीनहग घूँघटमें लीन मीन, जलमें त्रिलीन
क्यों वराजरी करतु है ॥ सत्रतें चलाक चित तेऊ बुद्धि आलमके,
रहै ऊर अतर ते धीर ना धरतु है । जिन चढि आगेंको चलायतु
तीर तीर, एक भरि तऊ तीर पीछे ही परतु है ॥ १७१ ॥

(अथसूची—छंद)

उपमा अनन्वय कहि बहुरि, उपमाप्रतीप प्रतीप ॥
वरनत सु उपमेयोपमा, मालोपमा कवि दीप ॥ १ ॥
ललितोपमा रूपक बहुरि, परिनाम पुनि उल्लेख ॥
स्मृति भ्राति अरु सदेह कह, अपहुति पुनि सुभवेप ॥ २ ॥
हेतूअपहुति बहुरि सुनि, पर्जस्तपन्हुति मानि ॥
भ्रातपूर्वअपहुत्यों, छेकाअपन्हुति जानि ॥ ३ ॥
वैतवअपन्हुति अरु सुनौ, उत्प्रेक्षा सुनखानि ॥
रूपकातिसयोक्ति, भेदकअतिसयोक्ति बखानि ॥ ४ ॥
अक्रमानिसयोक्ति, चचलअतिमयोक्ति सु लेप ॥
अत्यतअतिसैंउक्ति पुनि, पढिये समान्यविशेष ॥ ५ ॥
कहि तुल्य दीपकवृत्त, प्रतिवन्तूपमा दृष्टात ॥
सु निदर्सना व्यतिरेक पुनि, सहउक्ति वरनत सत ॥ ६ ॥
वीनोक्ति भूपन समासोक्ति, सु परिकरौ अहवस ॥
परिकरसुअतुर श्लेष त्यो, अप्रस्तुतोंपरसस ॥ ७ ॥
परजाउकत्ति गनाइये, व्याजस्तुती आक्षेप ॥
कहिये विरोध विरोधभास, विभावना सुखलेप ॥ ८ ॥
सु विसेसोक्ति असभयो, बहुन्यों असगति लेखि ॥
पुनि निपम सम सु विचित्र प्रहसन, औ त्रिपादन पेरि ॥ ९ ॥
कहि अधिक अन्योन्या विशेष, व्याघा(त) परस्परचाला
अरु गुफ एकावली मालादीपक हि पुनि सारु ॥ १० ॥

सुनि जथासंख्य उत्तानियै, पर्जाय पुनि परिवृत्ति ॥
 परिसंख्य कहत विकल्प है, जिनके सुमति सपत्ति ॥ ११ ॥
 बहुन्यो समाधि सगुचयो, अरु प्रत्यनीक उत्तानि ॥
 पुनि कहत अर्थापत्ति कविजन, काव्यलिंग मुजाणि ॥ १२ ॥
 अरु अर्थभतरन्याम भूपन, प्रौढउक्ति गगाइ ॥
 सभागा मिध्याध्यसिति, पुनि उल्लास हि गाइ ॥ १३ ॥
 अनशा अनुशा लेस तद्रुन, पूर्वरूप उरेखि ॥
 अनगुा अतद्रुन मिलित, उन्मीलित हिपुनि बुधलेखि १४
 सामान्य और विशेष पिहितो, प्रश्नउत्तर जानि ॥
 पुनि व्याजऊक्ति रु लोकउक्ति, सु छेऊक्ति उत्तानि १५
 वक्रोक्ति और स्वभावउक्ति, सु भाविकौ निरधारि ॥
 भाविकरुडवि सु उदात कहि, अत्युक्ति बहुरि विचारि १६
 बरने निरुक्ति र हेतु, अनुमानौ सु छेकनुप्रास ॥
 भूपन मनत पुनि जमक गनि, पुनरुक्तवदआभास ॥ १७ ॥
 इमि चित्र सफर एकसै, भूपन कहे अरु पाच (१०५) ॥
 सुनत वॉचत प्रथजिनको, मान सुकविनर सॉच ॥ १८ ॥

(अथरचनाकाल—दोहा)

सम सत्रहमै तीस (१७३०) पर, सुचि वदि तेरस भान ॥
 भूपन सिनभूपन कियो पढियो सुनो सुजान ॥ १ ॥

(उपसहार—कवित्त)

एक प्रभु ताको धॉम सजे तीयो वेद काम, रहै पचानन पडानन-
 राजी सर्वदा । सातौ बार आठौ जाम जाचरु निजाजे नर—, अवतार
 धिर राजे कृपान ल्यो हरिगदा । सिनराजभूपन अटल रहै तोलौ जोलौ,
 त्रिदस भुवन सर गग औ नरमदा । साहितनै साहसिक भौ-
 सिला सूरजप्रश दाशरथिराज तोलौ सरजा धिर सदा ॥ १ ॥

इति श्रीभूपणकविकृत शिवराजभूपण समाप्त

शिवराजदृष्टिपंचक.

(फविच.)

महा महागाधराज्य, रामराज्य थापनमें । जाहिर जगत जाहि, भूमि-
 फासी ताकीहे ॥ जोममगी ढिछीमाद,—शाहत उध्यपनमें । नाशक गुज
 शक्ति, त्रिजुगी छटासीहे ॥ रगभुगि राजकमलाके, धिरत्नेलिवकी ।
 राजगीति गति जामें, खेल्न पटाकीहे ॥ भूपन गिराकी, भूपनीय अरचा
 की हिद । वीरमदछाकीजाँकी, नजर सिवाकीहे ॥ १ ॥ आरज धरमतक
 सीचन घटासी टीमी । नासन जनासी, अजरगमासाकीहे ॥ जामधि
 यतग, अफ नह बहलोल जादि । नान अमीरनकों, दीपक शिराकीहे ॥
 मांगे विनु कविनका, दारिद मिशाय आश । पुरे मात्माकी शानि-
 वल्पलनिजाकीहे ॥ भूगन गिराकी, भूखनीय अरचाकी हिद । वीरमद-
 छाकीजाँकी, नजर सिवाकीहे ॥ २ ॥ समर समाज माँश, मूरमरदृष्टनिके
 जलधि उछाह जोनि, पदचट्टिकाकीहे ॥ भूक करे यवा, उल्लूक
 पातसाहनकों । अधरिवेमें कानि, रजिममताकीहे ॥ सकल निपच्छा
 दनावत रनामभरी । अग्निदेवतावि यह, दशहुँ दिसाकीहे ॥ भूपन
 गिराकी, भूपनीय अरचाकी हिद । वीरमदछाकीजाँकी, नजर सिवाकीहे ॥ ३ ॥
 यवन दनागि टग्ध, रजपूत राजनकों । तुरत जिवावें जामे, शक्ति
 सुधाकीहे ॥ सूना वादशाही पर, पच्छिकाके हेतु पुनि । कातिल कहर,
 शलाघल धरसाकीहे ॥ युद्धकला अजब, गिराते मरदृष्टनकी । सिद्धवे
 अनूप जामें, गतिप्रभुताकीहे ॥ भूखन गिराकी, भूपनीय अरचाकी हिद ।
 वीरमदछाकीजाँकी, नजर सिवाकीहे ॥ ४ ॥ रेंचें मुगलाही देश, चारहुँ
 दिमानमेंते । दच्छिन तरफ लोह,—चुनक दशाकीहे ॥ कुसमकलीसगान,
 दिल्लीरम चूसैलेत । गति बसे जामें देरतो, मधुपकलाकीहे ॥ मुगल मलेच्छ,
 परपच्छिटा अबूहेत । विधवापनेकी टैन,—हारी दच्छिटाकीहे ॥ भूखन गि-
 राकी, भूपनीय अरचाकी हिद । वीरमदछाकीजाँकी, नजर सिवाकीहे ॥ ५ ॥

॥ श्रीः ॥

यह विज्ञापन अवश्य वॉचिये

यदुवंशीयपुस्तकालय.

ठिकाना—भूलेश्वरवाजार, फिरगीके देवलका रस्ता, मुंबई

अभिनव पुस्तकसम्रहामांक्षी परमोदार पुरष तथा भगवद्भक्तिमती मानवती महिलाप्रति विनयपूर्वक विदित हो कि, मने नीचे लिखेभये प्राचीन अपूर्व ऐतिहासिक और स्तुतिपर, ग्रथ दोनागरी मुद्र टाईपके अक्षरोंसे मुद्रित कराय विक्रयार्थ प्रस्तुत किये ह आशा है कि इस दुर्गम कार्यको भोक्ता पुरष और स्त्रीवर्गसे पुस्तकें खरीदकर उत्तेजना करनेसे योग्य सहाय मिलेगी आगे औरभी उत्तमोत्तम पुस्तक छापनेका काम जारी हे

(सस्कृत ग्रथावली)

घटखर्परकाव्य मटीक

यह अल्कारग्रथ चक्रवर्ती विक्रमादित्यकी सभारक्षोंमेंके महाकवि घटखर्परकृत घटखर्परकाव्य, आवुनिक पंडितरत्नशिरोमणि वेदातभट्टाचार्य भारतमार्तंड श्रीगङ्गालालजीकृत चंद्रिकानामक टीकासमेत द्वितीय आवृत्ति उपकर तैयार है किमत आने १० डा म १ आ (जिस्में टीकाकारका चित्र और सक्षित चरित्र भी दिया है)

श्रीआनदरामायण

यह अपूर्वग्रथ आदिकवि वारमाकिमहर्षिप्रणीत शतकोटि रामायणान गीतमेंका श्लोक मरया १७००० का आजतक किसीको मालूम न था सो महत्प्रयाससे उपलब्धकर शुद्ध करवा सुंदर कागजपर उत्तम बडे टाईपके रूप छपानकर प्रसिद्ध किया है इसमें और प्रसिद्ध

रामायणोंसे श्रीरामचंद्रक अगुन क्षमिताका वर्णन किया है इसका मूला
वाचनेहीसे मालूम होगा (इसमेंका प्रिय और रामायणोंम न मिलेगा) कि
र ९ टा म ८ आना

श्रीविठ्ठलपचरत्न गुटका

यह श्रीभगवत्पचरत्नगीता जैसा ग्रन्थ किमीको निहित न था सो
प्राप्तकर उत्तमतासे उपाकर प्रसिद्ध किया है इसके निम्नलिखितमे पाठ
करनेवाले ईश्वरपरायण भाविक जन आर स्त्रीवर्गको बहुत उपयुक्त होनेके
सम्भवे रेशमी और सावी वैशाखके ऐसे दो प्रकार क्रियोगये हैं निम्न
सादेकी किमत ४ आना, और रेशमीकी ९ आ० डा म ॥ आ
और आ. १ है नीचे लिखी हुई अनुक्रमणिका बांचिये

- | | |
|--|-----------------------------------|
| १ श्रीविठ्ठलकवच, पद्मपुराणोक्त | ४ श्रीविठ्ठलष्टोत्तरनामशतक, पद्म० |
| २ श्रीविठ्ठलसहस्रनाम, ,, | ५ श्रीविठ्ठलस्वराज, स्कंदपुरा |
| ३ श्रीविठ्ठलहृदय, भविष्योत्तरपुराणोक्त | ६ जोत |

बृहत्स्तोत्रमरित्सागर भाग १ ला

इसमें मुख्य ११ आराध्यदेवताओंके पचरत्नोंका मोधनपूर्वक समावेश
करनेमें आया है पुस्तक मुद्रक कागजपर उत्तमटाईपके अक्षरोंसे छपनाकर
तैयार किया है इसकी वैशाखी बगीराकी उत्कृष्टता केवल अध्यापकोंकनसेही
मालूम होगी ईश्वरपरायण गृहस्थ और ब्राह्मणवर्गको सुलभ पढनेके वास्ते
किं र २। डा म आ ३ (ईश्वरस्तुतिपर ऐसा एकत्र रत्नोंका एकमी
ग्रन्थ आजतक नहीं छपा उदाहरणार्थ नीचे दी हुई अनुक्रमणिका
बांचिये इसमेंका कोई पचरत्न न्यारा नहीं मिलेगा।

१ श्रीगायत्रीपचरत्न	२ श्रीगणपतिपचरत्न	३ श्रीमहाविष्णुपचरत्न
१ गायत्रारहस्य	१ गणेशकवच	१ भगवद्गीता
२ गायत्रीकवच	२ गणेशस्वराज	२ विष्णुसहस्रनाम
३ गायत्रीस्वराज	३ गणेशहृदय	३ श्रीमस्वराज
४ गायत्रीहृदय	४ गणेशसहस्रनाम	४ अतुस्तुति
५ गायत्रासहस्रनाम	५ गणेशगीता	५ गजेन्द्रमोक्ष

४ श्रीशिवपचरत्न

- १ शिवकवच
- २ शिवस्तवराज
- ३ शिवसहस्रनाम
- ४ शिवगीता
- ५ शिवविराट् रूपस्तव

५ श्रीसूर्यपचरत्न

- १ सूर्यकवच
- २ सूर्यस्तवराज
- ३ सूर्य (आदित्य) हृदय
- ४ सूर्यसहस्रनाम,
- ५ सूर्यस्तोत्र

६ श्रीदेवीपचरत्न

- १ देवकवच
- २ देवीस्तवराज
- ३ देवीहृदय
- ४ देवीसहस्रनाम(दकारादि)
- ५ देवीगीता

७ श्रीदत्तात्रेयपचरत्न

- १ दत्तकवच
- २ दत्तमन्तराज
- ३ दत्तहृदय
- ४ दत्तमहस्रनाम
- ५ दत्तावधतगीता

८ श्रीरामचन्द्रपचरत्न

- १ रामकवच
- २ रामस्तवराज
- ३ रामहृदय
- ४ रामसहस्रनाम
- ५ रामगीता

९ श्रीसीतापचरत्न

- १ सीताकवच
- २ सीतास्तवराज
- ३ सीताहृदय
- ४ सीतासहस्रनाम
- ५ सीताविराट् रूपस्तव

१० श्रीहनुमान्पचरत्न

- १ एकमुखीहनुमतकवच
- २ पंचमुखीहनुमान्कवच
- ३ हनुमान्स्तवराज
- ४ हनुमान्सहस्रनाम
- ५ हनुमान्कल्प

११ श्रीसतीशिक्षापचरत्न

- १ सतीस्त्रीणामादिकम्
- २ त्रिवेणीकसतीशिक्षा
- ३ सतीशिक्षा
- ४ सतीधामाश्रुत
- ५ विषवाधमतभारजस्तव

१२ सकीर्णविषय

- १ विवेकपत्रक
- २ वादयाष्टकस्तोत्र
- ३ काशीदशकस्तोत्र
- ४ द्वादशाक्षरस्तोत्र
- ५ प्रथममात्रिका

बृहत्स्तोत्रसरित्सागर भाग २ रा

गोस्वामिवर्य श्रीदेवकीनदनान्चार्यजीके असल फोटोग्राफके चित्रसमेत, और पाच गोस्वामि बालकोंकी सम्मतिपुक्त अपूर्ण ग्रन्थ, जिस्मे श्रीबृहन्नाचार्यमप्रदायके निय पाठ करनेके, शान्न्चार्यके, वादके, और धर्मशास्त्रके मिलकर २३७ अपूर्व प्रथोका शोधनपूर्वक समावेश करनेमें आया है (ऐसा अपूर्व ग्रन्थ आजतक नही छपा) कि० र ३ डा म ०।० (स्थल-सकोचसे अनुक्रमणिका नहीं लिखी)

कृष्णाभिसारनामक काव्य सटीक तथा सटिप्पण

श्रीबालमुकुदस्तोत्र

यह ग्रन्थ भारतमार्तंड श्रीभद्रेदातभट्टाचार्य प्रसिद्ध पंडित श्रीगङ्गालालजीने श्रीकृष्णपरमात्माका अभिसारिका नायकाके भेदसे श्रीमहाराणा राधिका-

जीको छल करनेके विषयमें अत्युत्तम काव्यरूपमें बनाया और अपने से व्यस्वरूप श्रीगालमुकुन्दजीकी प्रार्थनाका अष्टक भी साथ दिया है जिसकी टीका उक्त पंडितजीके परमप्रिय शिष्य श्रीप्रकवि शास्त्री नदकिशोर रमेशमहजीने बनाई है किंमत रु १ टाका महसूल)४-

पुष्टिमार्गीय नित्यपाठके ३३ ग्रथ व्याससूत्रनसहित

इस पुस्तकमेंके ३२ ग्रन्थ प्रसिद्ध पंडित श्रीगङ्गालालजीने स्वमार्गीय अनेक ग्रथापरसे शुद्धतापूर्वक छपवाय प्रसिद्ध किये थे, वो वैष्णवोंको अनिप्रिय लगनेसे सूक्ष्माक्षरमें सदा मग रखनेकेगस्ते मुख्य प्रमाणव्य श्रीवेद व्यास प्रणीत व्याससूत्रोंसहित ३३ ग्रथ छपवाकर प्रसिद्ध किये हैं न्यो. रु ०। डा म -)

निर्भयरामभट्टकृतआशांचनिर्णय (सूतकनिर्णय)

यह प्राचीन ग्रन्थ अनेक धर्मशास्त्रोंके आधारसे जति उत्तम बनाया सो उपलब्ध कर ब्रजभाषा तथा गुजरातीभाषामें टीका करवा मूल सहित छपवाकर प्रसिद्ध किया है कि० रु ०॥ तथा डा० आना)३ है,

(भाषा ग्रंथावली)

श्रीभ्रान्तवारणदर्पण

इस ग्रन्थमें स्वामि श्रीदयानंदसरस्वतीजीके मतका खटन किया गया है भाषा हिन्दुस्थानी, और मस्कृत दृष्टान्तोंके साथ पुस्तकरूपमें छपाई कपडेकी जितरु बँधाभया किंमत रु १ डा म २ आने

शिवराजबावनी और छत्रसालदशक

यह वीररसप्रधान ग्रन्थ महाकविराज भूषणने हिन्दुस्थानी भाषामें हिन्दुधर्मरक्षक महाप्रतापी शिवाजीमहाराज छत्रपति सितारेगढवालेकी दिल्लीकी चढाईके शूरत्वके वर्णनका अपूर्व रचाया मो बडे परिश्रमसे उपलब्धकर कविराजके इतिहाससमेत उसीभाषामें उत्तम कागजपर बडे टाईपसे छपवाया है किंमत आ ९ डा म २ आ

श्रीबलभाचार्यजीकी विविधविषयालकृत गद्यपद्यात्मक
आजतक न लिखी न छपी ऐसी चौराशी वैष्णवोंकी
वार्ता शुद्ध ब्रजभाषामें

सुंदर कागज, बडे टाईप, मजबूत जिन्दमें ६०० पन्ना जिसमें मगला-
चरणाष्टक, सिद्धान्तरहस्य और पृथ्वीप्रदक्षिणागर्भित ५१ प्रसंगकी 'नि-
जन्तार्ता' शिक्षाश्लोक और श्री आचार्यजी तथा श्री गुमाईजीकी स्मृत
प्राकृत जन्मपत्रिका सहित १२ 'घरुवार्ता' श्री आचार्यजीके वनयात्रा-
गाभित 'चौराशी बैठकनके चरित्र' श्रीनाथजीकी जन्मपत्रिका पूर्वक
'चौराशी वैष्णवनकी वार्ता' और अष्टसखामेंके 'चारि सखानकी वार्ता'
गानेके १०६ पदोंसे अलकृत एकही पुस्तकमें उपके तैयार है जिसकी
किंमत रु ५। तथा टपालमहसूल वेल्सूपेवल समेत रु ०॥ ज्यादाह पडेगे

ब्रजभाषा भ्रमरगीत

प्रसिद्ध महासाधु श्रीतुलसीदासजीके भाई श्रीनददासजीका श्रीमद्भाग-
वत दशमस्कंधमेंके भ्रमरगीतका ब्रजभाषामें कियाहुआ पद्यरूप उल्था
पदच्छेदयुक्त उत्तम बडे टाईपके अक्षरोंमें उपकर तैयार है किंमत
आ ३ डा म ६॥ आ (इम प्रथम गोपीयोंको उद्धवना किया-
भया निराकार प्रका उपदेश हे)

किसनवावनी कवि कृष्णदासविरचित

यह पद्यबद्ध विविधबोधपर वाक्यनके मौक्तिकाकी मालारूप ग्रथित
शात और करणारसप्रधान ग्रथ सुंदरकागजपर बडे टाईपके अक्षरोंसे
छपवाकर प्रसिद्ध किया है की० आने ४३ डा० म० ॥ आना

शिवराजभूषण काव्य

यह काव्यरचनाका अपूर्वभल्कारग्रथ कविराज भूषणका रचाहुआ
जिसके अलकारोंके उदाहरणोंमें शिवाजीमहाराज छत्रपति सितारेगडवारेकी
शूरताका अतिउत्तम वर्णन किया है इसग्रन्थका महत्तम बौचनेसेही माह्य
होगा भाषा " कि० रु० १ डा० ख० १ आ०

धन्यवादपत्र.

॥ श्रीगोवर्धनधरो विजयतेतराम् ॥

॥ श्रीजीआगे सुधि करतहें ॥

श्रीकृष्ण

श्रीबिम्बो जयति

स्वसि श्रीममहाराजाधिराज गोस्वामि महाराज श्रीगोवर्धनलालजीणाम् स्व
कीयेपु परमवैष्णवेषु ठकरगोवर्धनदासलक्ष्मीदाससपरिवारेष्वाशिष्य शमत्र तत्रास्तु
सदा—
सेव्य स्मृतव्यश्च, अपरं च तुमारो विज्ञप्तिपत्र पढुच्यो स्वमागर्म तुमारी
भक्ति और अपने प्रथनकं प्रचारम प्रयत्न पंचनदी गट्टलालाजीके मुखसू सुनकें
चित्त प्रसन्न होय हे वैष्णवनको यह म्घमही है विद्याद्वारा सप्रदायोत्तेजन प्रथप्र
चार इत्यादि कायनम ओर ईहाके विषे भक्ति सेह प्रतिक्षण वर्धमान रासोगे कुशल
पत्र लिखोगे मिति प्रथमआपाठ शुद्ध २ सन्त १९५० क

॥ आज्ञापत्रमिदम् ॥

गोस्वामि श्रीबालकृष्णलालजी, टीकेत श्रीकाकरोलीघारे
गोस्वामि श्रीदेवकीनदनाचार्यजी, टीकेत श्रीकामवनघारे
गोस्वामि श्रीजीवनलालजी, टीकेत श्रीकाशीजीघारे गोस्वामि
श्री जीवनलालजी, पोरबदरघारे गोस्वामि श्रीविठ्ठलेशजी,
पोरबदरघारे गोस्वामिश्री पुनश्यामलालजी, मुवई घारे

इनके आदीसो यह सम्मति आर आज्ञापत्र दीयोहं जो यदुवशी भाटियातातीय
श्रेष्ठ ठकर लक्ष्मीदासात्मज गोवर्धनदासभाइ इने जो वर्तमानजालकों अगु
सरके हराकृत हेके प्रचीन प्रथनको जीणाद्वार होयवेकेलीये अति परिश्रमसा
पुरातन पुस्तक उपलब्धकर शुद्धकरवायके छपवाय प्रसिद्धकरवेको स्तुतिपात्र काम
माये उठायोहे वामेके इमे आज्ञापत्र मुद्रित कियेभये प्रथहमने अवलोकन कियेह ।
सो अयुक्तम समद्वरवक योग्यहैं ओरहु आश्रय मिटेसू उत्तमोत्तम प्रथ जो नष्ट
होवेजायह उनका पुनरुज्जीवन शुरु इस्तसा होयवेको समबहे । यायातसों हम
अत्यंत प्रसन्न होय या उत्तमकायकों प्रशसनाय और वर्णनाय जाति समस्त वैष्णव
ओर इतर विद्वान लोगनिं यो यह भला मन करहं जो या पृहस्थके सहयोगकों
इनके छपवायेभये पुस्तक सरीद अवरय आश्रय दनो उचित हे । कारण कुचीन

पिताकं गर्भश्रीमन्त पुत्रकौ अपावस्थाम् विश्वासघाती लोगने स्वहितार्थं जाल्म फसाय
लक्षावधि रुपैयानकी दोलत दुबोय दीनी। तोहु इमे ज्ञातगतिसु स्वधम्म दडता रास
सकटकों इश्वरीतन मानके सतोपयुक्त आर्ययमकी रक्षाको सर्वोत्कृष्टयोग हातम ली
थोहे । ताते इनकी धर्मम प्रवृत्ति पवित्रतुद्धि भार धमनायमें दक्षता देख महोत प्रसन
तापूर्वक या प्रहस्यकों धन्यवाद दे चह सम्मतियुक्त आज्ञापत्र दीचोहे किमधिक
मिति शम् । सवत् १९४६—४८—जेष्ठ, भाद्रपद आश्विन सु० सुवइ तथा भावनगर

॥ सम्मतियुक्त आज्ञापत्र ॥

गोस्वामि श्रीगिरिधरात्मज श्रीवालरुष्णलालजी, टीकेत श्रीकाक
रोलीचारे गोस्वामि श्रीगोविंदात्मज श्रीदेवकीनदनाचार्यजी, टीकेत
श्रीकामधनचारे गोस्वामि श्रीगिरिधरात्मज श्रीजीवनलालजी, टी
केत श्रीकाशीजीचारे गोस्वामि श्रीवल्लभात्मज श्रीजीवनेशाचार्यजी,
श्रीपोरदरवारे गोस्वामि श्रीद्वारकानाथजीसुत श्रीविठ्ठलेशजी, श्रीपो
रधरचारे गोस्वामि श्रीचिमनलालात्मज श्रीधनदयामलाल, मुचईचारे

श्रीमत्वल्लभाचार्यसंप्रदायके समस्तज्ञातके वेष्णवनको हमारी एसी
आज्ञा हे जो आजकाल अपने संप्रदायके बोहोत प्राचीनप्रथ लेखक दोप सों अशुद्ध
भये कोईके जानवेम देखवेम के वाचवेम भी आवे नहीं हैं तातें अपूव समृद्ध प्रथ
नकों नष्ट होते देखक बडे परिश्रमसों उपलब्धकर शास्त्रीनये पुद्ध करवाय उत्तम का
गदपे सुशोभित टाइपके अक्षरनसु सवमें श्रेष्ठ छापखानेम छपवाय प्रसिद्ध करवेको
महा दुष्टकाम वेष्णवश्रेष्ठ लक्ष्मीदासके चिरंजाव गोवर्धनदासभाई प्राचीन
ग्रथप्रकाशकने धर्माभिमानसों माथे उठायो हे वाम अवश्य निरुल पाठ करवेके, गात्रा
धके, ओर निर्णयके मिलके २३७ ग्रथ एकही पुस्तकम प्रसिद्ध करे हैं यह काय
बोहोतहा स्तुतिपात्र हे कारन जो अशुद्धलिखेभये प्रथ बोहोतसे दामनसो फुटकर
लेवेसु करपशुक्ष्णैसे एकही प्रथके सभही गरज पुरी पडसवे वा प्रथको नाम
उने "गृहस्तोत्रसरित्सागरको द्वितीयभाग" एखो राख्यो हे वो इमने तपास
पेगठे व्यवस्था बहोतही अच्छी करवेम आइहे मेहेनत देरते इमे रासीभई योछा
वर ह० ३ तीन कतु भडती नहीं हे सुवइत बहार मगायवेचारका टपालखच न्यारो
टीकहा हे ताव जिन गृहस्थनकों लिपत वांचत न आवतो हाय उनहुकू दूसरेनेपास
बनगायरे सुनवेकेलिये यह श्रीकृष्णमयप्रथ अपने घर हृदय पवित्रकरवेनेताइ और
बहुके साधकके लिये अवश्य सप्रमं राखनो एमे एकत्र रत्नसंग्रहको ग्रंथ आजदिन
ताइम कोईने भी उपाय प्रसिद्ध कियो नहीं हे तातें एख उत्तम परिश्रमको फल प्रथ

या प्रथमप्रकाशकों अवश्य देखो या प्रथको अवश्य समग्र हारवेनी हम साचे प्रेम भावपूर्वक समस्त वैष्णवनों मलामन करें हैं जामु प्रसिद्धरोंवारेहू उत्तेजन मिल अपन धर्मके नष्ट होते प्रथनको जीणाद्धार होय ओर अय हू अनेक प्रथ प्रसिद्ध करवेनी उमेद बडे या एहस्यके आडीसो आजताइम जो जो प्राचीन प्रथ प्रसिद्ध करवेमें आये हैं सो सब उत्तम होयवेसू अवश्य समग्र करवे लायक ह ओर यापीछेंहू ये अपनो येही प्रथन हमेशां सुरुहा राखेंगे ओर इनक हाथसु उत्तमोत्तम प्रथ प्रसिद्ध हायगे एसी पूर्ण आशा हे एसे सदुद्योगकरक आनदित होय या एहस्यकों धन्यवादयुक्त यह सम्मतियुक्त आज्ञापत्र हमो दियो हे सबत् १९४८ ज्येष्ठ, भाद्र-पद, शाश्विन सुक्लाम भावनगर और मुयइ

॥ श्रीद्वारकेशो जयति ॥

॥ हमारे आशीवाद ॥

स्वस्ति श्रीमद्रोस्वामि महाराज श्रीवालकृष्णलालजी टीकेत श्रीकांकरोली वारे शर्मणां स्वकीयेषु श्री २ ठा० गोवर्धनदास लक्ष्मीदास सपरिवारेषु शुभाशिष शमिह तत्र स्ताइ परं च तुमारो पत्र पोहोच्यो तुमो जो चोरासीवैष्णवनोंकी घार्ता की पुस्तके बाबत लिखी सो धार्मकी पु १२ (एकदशन) यहां वेल्युपेएबल भेजदीनो हम सपायदेगे हम वो पुस्तक देखचूकेहैं तासू चित्त भी प्रसन्न बोहोत भयो हे हम वाकू देखकें ही मंगायवेको विचार कररहे हते इतनेम तुमारो पत्र आयो सो बोहोत आछी भइ एसे जन तब कोद नयोप्रथ तुम छपवाओ तो यहाँ सूचन-देते रहोगे तुम हमारे हो यहांके विशे भक्ति थदा राखतहो तातें अभीक राखोगे कुशलपत्र लिखोगे किमधिकमिति कार्तिक वदी १ सबत् १९५२ के

॥ श्रीवृजराज सहाय ॥

मुस्यहमें

भाटिया लक्ष्मीदासात्मज गोवर्धनदास श्रेष्ठ भगवदीकों धन्यवाद हे इनका संसारमें जन्म लेना और भोटाही द्रव्य पाना जो दूसरोंके ज्यादेसुज्यादे हे ओर सफल हे क्युकि तिनने तन मन धनसे पुरा २ थम उठाकर पुष्टि भक्तिमार्गके पुराचीन प्रथ जो जीवोद्धारके लिये उत्तमोत्तम सर्वोपरि घरी, अर्घ, काम, और मोक्षवे देनेवाला मिलना अति दुर्लभ्य हे सो २३७ प्रथ इकडा कर्क १ पुस्तकम बहुत शुद्ध छपवाय विस्थात किये सो देवी जीवोंपर बडाही उपकार हुआहे आर केरभी मार्गके बडे २ नामी ग्रंथ बहोतसे छपवानेका मनोरथ हे सोभी आशा हे कि श्रीबलभवरकी कृपासे शीघ्र पूरा होगा इस उद्योगमें श्रीवल्लभकुलके वालकोंने (जिं जिनके नाम आपने लिखे है) पूरी २ सहायता दीवी व देनी कही सो तो उनका प्राकट्य ही देवी जीवोंके उद्धारार्थ होकर इस मार्गके धर्माभी बेही

ह तथा पंडितमुष्टमणि श्री गद्दुलान्नाजी पुरी मदद दिवी व दंगे ह व डेी
 का लिखा सोभी वतु महा उके विद्वान्पुनंघी तान मुष्टेस यदी जानत मइ कि
 मागकी हाति हाति देप कर इड रथोके लिये श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभुभक्तका
 जायत इनक इत्य ि रहता ह जिम्मे मारगका सिद्धति व रहस्य और मय साक्षाया
 दिक्का अजुमय रहनेसे अन्य मार्गोमनवादी दिग्गजािको ये निम्तर करते ह काइ
 सागना नदी कर गणा धीपरमात्मा आपको एगीही सुद्धिसे सुदी रने जिम्मे मागकी
 हडता व लोकोद्धारके लिये उद्योग प्रचरित रहे मिति वदात मुदि ५
 संवन १९४९

नथमलजी (मागीदावान राज जैसलमेर)

अजुदासल ता १० जून १८८४

प्रिय महाशय

आपकी प्रकाशित चूहत्तोप्ररिस्तागर पुस्तक के प्रथम और द्वितीयभाग
 आपसे मंगाकर मैं आधापान्ना शगीचीतासे देखे दोनोभाग धार्मिक जनोके लिए
 परतोपयोगी है पुस्तकोका आकार कागज अक्षर और छपाई देखनेसही मन अरतत
 प्रफुलित होजाताह । इनके पटात मुझे बहुत काम हुका है और जो आनन्दक
 अकम्य स्तोत्र जो इमे मुद्रित है पठकर एव विद्वान मनुष्यको होना
 समबई वह मयका अकमनीय है श्रीपरमेश्वर आपके इस-परम प्रसंतनीय उत्साहकी
 सवेदा हृदी करे शुभम् ।

आपका जयाभिलाषी,

पुरोहित गोपिनाथशर्मा एम ए वकील

श्रीम-महाराजसाहेब बहादुर घालीमे जयपूर मु० आबू

धार्मिक शु० ६ शनिवार मय १९५१

सुदर्शन छापखाना श्रीनाथद्वारा

गोवर्धनदास लक्ष्मीदान्म अनेक आशीवाद

आपके उत्साहको देखके मैं अत्यंत आनंदको प्राप्त हुवा आपसरीखे सज्जनोहिंस
 हम प्राश्नार्थाका धर्म इन कलियुगमें रहस्यकाह सबसे दुर्लभ विद्याया मिलना
 वह आपके उद्योगसे हमको सुलभ हुकाह घट २ व्यापी अतयामी परमेश्वर
 आपको धनवान्, पुत्रवान्, कीर्तिवान् और सब पृथ्वीक सुखोसहित अपनी भक्ति दे
 येही उत इश्वरध मरी प्रार्थना है—पुस्तक उपरलिखे पत्तेसे बहालुपिबल कर
 भेजोगे साथम सूचीपत्रभी भेजोगे

१ चूहत्तोप्ररिस्तागर भा१ प्र १ २ लघुसिद्धांत कौमुदी टिप्पणसहीत
 वेशवलालजीशी

राणापुर झाबुवा से

नं० ७४३

सहिधासुधाकर पाठशाला पुस्तकालय ता ३०/८/९३

रा ग गोवर्धनदास लक्ष्मीदास वयः

आपके पास जो जो आपुने प्राचीन ग्रन्थ गणनायाह उत्तका व अपर ग्रन्थका क्याट
लाक् शोयगा सो शीघ्र भेजीये क्यों जो यह शालाम हमने आनन्दरामायण मग-
बाया हैं और अपर सत्र ग्रन्थ मगनानेकी परवानगी दरबारस मिली ह आपु बडे
प्रशतनीय हो ओकोपयोगी परमोच्छ्रुत काय आपुने लिया ह जिरसे तारीरसे
(क्याटलाक्) भेजाये व और हमारे लिये आपुका छपवाहुवा ऐमा निम्नलिखित
ग्रहस्तोत्रसरित्सागर दोभाग एक २ प्रत विट्टल पचरत्त प्रत १
जीस्से सब ग्रन्थ मगवावनको सुलभ होय किंवहुना इति शुभम् ॥ मिती माद्रपद
वय ३ बुधवारे म १०५०

पत्ता-शास्त्रीव्यकटेश्वर बडोदेकर मु० झाबुवा राणापुर एजन्टी भोपाल
देश मालवा डि० सरकारी गडीमे ऋवा खजानची साहबके मकानम

श्रीयुत सकलगुणनिधान परोपकारैकतान रसिक

यदुवशीय गोवर्धनदास लक्ष्मीदास समीपेषु मुबई

महाशय आपो भेनेहुओ आनन्दरामायण, भ्रातचारणदर्पण, श्रीविट्टल-
पचरत्त ये तीनों ग्रन्थ आन पहुचे पत्रभी आपका आया पत्रम जो विशेषणादि
हमको लिखा है म उसलायकका तो सयथा नहीं ह आप सज्जन होनेसे सज्जनाका
काम नम्रता है हम इसीलिये केवल आपका कृपापात्र हैं आनन्दरामायणादि
ग्रन्थका मूल्य रु ९ जो लगताहै वह हम भेजदेवगे आपका उद्योग देवके मुझको
बडाही हर्ष हो गया मुझको क्या परेच सारा दुनियाको होगा आपको
कोटिबा धन्यवाद देताहूँ

जो जो पुस्तक हमको अपेक्षित थे उन सधोंना नाम इसीपत्रव पिउलेनर्क लिख
भेजा है उससे जो जो तयार है वह अभी भेजियेगा बाकीके तयार होनेपर
भेज दिजियेगा इन्मे लिखेसे अतिरिक्तभी हूँ मगवेगे

अपना क्षेम कुशलपूर्वक पत्र शाघ्र लिखियेगा किमधिनजल्पननगितशेषु शुभमस्तु
तारीख २३ दिसंबर १८८९ डि. वाटमाडु इन्द्रचाक नेपाठ

आ मि उदितप्रसाद (यादु)

Dighapatiya Rajbati, Benares, city 13-6-91

महाशय !

आपकी प्रेरित "शिखराजभूषण" एवं "शिखावाचनी" पायक बडे आरहा

दित हुये हैं। आशा करते हैं कि येतना ऐतिहासिक ग्रन्थ (यज्ञर) छापाई घबघा मूल्य लिखारके प्रकाश करनी करेंगे, उत्तर आगे पुस्तकभेजनेके लिये पत्रलिखेंगे। भगवान आपलोगकी कृपानि करे।

सत्यचरण शास्त्री।

विद्याविद्येकगुणाममी राजगमाने। वेदाज्यायिचिदुधि परमकिरीधे। शिष्टे सदा पठणपाठण्टेछागदी। श्रुतोयमे मम सवादिपस्तदु दमै ॥ सागुमयत्र भूयादिनि क्रिच धीमता भवतां चानि धीदशानि पुस्तकानि भागिकटे वनते। टिखानालम् ता० १४-४-१३

सिंधुदेवदायादित पंडित ताराचन्द्रशर्मा

॥ श्रीनाथो जयनितराम् ॥

सखि श्रीसुंवाईकृतनिवागस्थानश्रीयुतभगवत्सेवापरावधान करणपरमकार्णीक स्वधर्मप्रकाशक वैष्णवप्रणय श्री श्री ५ श्रीगोवर्धनदासजी श्रीलक्ष्मीदासजी योग्य० 'बडनगरसे' मुद्रियाजी श्रीहृणदासजीके पुत्र बह्मभदासविद्वल दासको भगवत्स्मरण पोहोचै अपरंच घतमानके आपने या समग्रमं धर्मउद्धारार्थ करन यांधी है सो सब वैष्णव आपको बडेही भागीवांद देंगे और अब हम आपसे विनति पूर्वक लिखेहै के हमको जो जो स्वमार्गीय ग्रन्थ छपेहै विनकी सूची तथा शास्त्रार्थके पत्र जोजो आपके यांहा छपेहैं और हू छपेंगे तो इनकी मासिकने मासिक हमको सूचना होतीरहे तो हम हू इन ग्रन्थको देननेकी इच्छा करेंह और हू नीचे लिखे प्रमाणे पुस्तक भेजेंगे येआपनाही पुण्यात्मक यश है किबहुनोजेन संवत् १९५०था० ६० ५ तुषवार

२ गोपीगीत तीनभाषामे समश्लोकी। १ स्वप्न तथा आयुष्यनिर्णय गुजरटीका। २ यज्ञभाषाममरगीत नददासजीकृत। ३ घटस्तोत्रसरित्सागरको द्वितीयभाग। ३ बह्मभाष्यान जाणो नवाख्यान गुजराती मूलभाष १ दोलोत्सवनिर्णय

आपके दाम शैल्यूपवल कैं भेजेंगे टिकानो-श्रीमदनमोहन लालके मंदिरमें मुख्यानी पास मुकाम 'बडनगर' जिला उज्जैन मालवा

राची २० जुई १९८४

महाशय

आपकी भेजीहुई एक प्रति शिवावाचनी और एक प्रति घटसर्परवाच्यकी मिठी अनेक धन्यवाद देताहू अत्र एक प्रति शिवराजभूषणमी कृपा करके भेज दीजिये। ये प्राचीन ग्रंथप्रकाश करके कारण आपको अनेक धन्यवाद देताहू और

इनमें मिलानेके सायक दोगार अर्धे कवित्त भूषण कवित्तन मेरेपास मी है सो भी भेज
धंगा मसंद हो सो छापियेगा। आपका सल हितैच्छु ।

पंडित भोलानाथ
मिशनस्कूल रांची (बंगाल)

स्वस्ति धी गांव मुबई नगरे शुभसंगो तत्र मध्ये विराजमान श्रीगंगाजलवद निर्मल
पवित्रपावन परोपकारी पद्मसंयुक्त अनेक सांख्यवान् त्रिकालदर्शी तीय दिश रविभ्यात
श्रीसर्वोपमालायक रा रा गोवर्धनदास लक्ष्मीदास परम वैष्णव योग्य लिखतग
व्यामदपुरसे माटिया लालचद की जयश्रीकृष्ण जानों उपरंत समाचार जानों
जो आजकाल मुबईमें छापसाता वहीत है परंतु हम्रा आपके छापमानेके सुचीपत्र
देखकर मनमेवहीत, आनंद भयो पुनः तो हम श्रीगंगाभावायविरचित प्रथ, अनेक
मगावेंगे, आर, अरही हमारा तुमारा मिलाप होयगा अथ कृपा कर्क पुस्तक इतो भेजो
१ बृहत्स्तोत्रसरित्सागरको द्वितीय भाग जिमें २३७ प्रथ है वो

१ उत्सर्वोकी टीप १ यमुनाष्टय १ १ कृष्णाश्रय

मिला यहावलपुर मुकाम आमदपुर लया स्टेशन सादिकायाद सिध
डेन पाग माटिया लालचदको पत्र लिखि मिति वैशाख वदि शनि सवत् १९५०

स्वस्ति श्री ६ मण्डिकुलकमलप्रकाशकमार्तण्डव-सुमुदप्रकाशकवद साखाध्यय
नाध्यापनतत्पर विद्वद्दाप्रगण्यदीनजनशरण महाशय श्रीगोवर्धनदास श्रीलक्ष्मी
दासजीके चरणसभिधमं दारानुदास भवशरणारविददशनोत्सुक भिखारीराम ठा
कुरप्रसादका साटांग प्रणय पहुचे आपके कृपासे यदा कुशल है आपके सदैव कुशल
चाहिये अपरंच आपके पास हमारा पत्र इस निमित्त जाता है की, आपकी यहा बृहत्स्तो
त्रसरित्सागरस्य द्वितीयभाग"श्रीवल्लभाचार्यसंप्रदायप्रथ एक और आपके छापे
खाका सूचीपत्र १ कृपा कर्के भेजियेगा जाश शुभ मि० भाद्रववदी १२ सवत् १९५०
आपका शुभचितक भिखारीराम ठाकुरप्रसाद गाजीपूर महो वल्लभदासनी
डेहुदीपर भेजियेगा ॥

श्रीयुत सक्लभुणनिधान यदुवशी गोवर्धनदास लक्ष्मीदास योग्य हैद्रावादस्थ
सेठ इमदमलस्य जयश्रीकृष्णवाच्या आपने बृहत्स्तोत्रसरित्सागरस्यद्वितीय
भाग बहुत सुदरतापूर्वक छपा है स्तुतियोग्य है जित्तिये श्रीमद्वल्लभाचार्यके संप्रदायके
प्रथ अवशेष मितता है सो आपने बहुत परिधम क्रियाह आपको धन्यवाद है अथ
कृपाकर्क दाम लिखना मिति आपाठ गु० ८ रविवार स १९५१

महाशय मेहेरयान गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

हमको पुस्तक भेने सो पोहोचे रु० ५१, दीर्घ आरपुस्तक देखके बोहोत प्रसन्न

दित हुये हैं। आशा करते हैं कि येतना ऐतिहासिक ग्रन्थ (बखर) छापाई, सबका मुख्य लिखकरके पूर्ववत् सुखी करेंगे, उत्तर आनेसे पुस्तकभेजनेके लिये पत्रलिखेंगे। भगवान आपनोंकी कृपति करे।

सत्यचरण शास्त्री ।

विद्याविवेकगुणनामभी राज्यमाने । वेदानुयायिविदुषि परभक्तिनिष्ठे । शिष्टे सदा पठणपाठणट्टेसनादी । इतोद्यमे मम राक्षाशिपस्तात्रु तर्क ॥ शमुमयत्र भूयादिनि किंच श्रीमता भवतां यानि कीदृशानि पुस्तकानि भवतिकटे वतन्ते । लिखनेनालम् ता० १४-४-९३

सिंधुहेद्रावादित पंडित ताराच द्रशर्मा

॥ श्रीनाथो जयतितराम् ॥

स्वस्ति श्रीमुवाइतनिवासस्थानश्रीयुतभगवत्सेवापरायणांत करणपरमकारुणिक स्वधर्मप्रकाशक वैष्णवाग्रगण्य धा श्री ५ श्रीगोवर्धनदासजी श्रीलक्ष्मीदासजी योग्य० 'बडनगरसे' मुखियाजी श्रीवृष्णदासजीके पुत्र बल्लभदासचिह्नल दासको भगवत्स्मरण पोहोचै अपरंच वतमानके आपने या समयमें धर्मउद्धारार्थ कमर बांधी है सो सब वण्णन आपको बदेही आशीर्वाद देंगे ओर अब हम आपसे विनति पूर्वक लिखेहू के हमको जो जो स्वर्गाग्र्य ग्रन्थ छपेहैं विनकी सूची तथा शास्त्रार्थके पत्र जोजो आपके याहा छपेहैं ओर हू छपेगे तो इनकी मासिककं मासिक हमको सूचना होतीरहे तो हम हू इन ग्रन्थको देखनेकी इच्छा करेंहैं और हू नीचे लिखे प्रमाणे पुस्तक भेजोगे येआपकाही पुण्यात्मक यशहै किबहुनोकेन सबत् १९५०था० वृ० ५ बुधवार

२ गोपीगीत तीनभाषामे समझोकी । १ स्वप्न तथा आयुष्यनिर्णय गुर्जरटीका । १ ब्रजभाषाम्रमरगीत नददासजीवृत्त । १ बृहत्स्तोत्रसरित्सागरको द्वितीयभाग । ३ बल्लभारव्यान जासो नवाख्यान गुजराती मूलमात्र १ दोलोत्सवनिर्णय

आपके दाम व्हॅल्यूपेबल बर्क भेजेंगे ठिकानो—गीमदनमोहन लालके मंदिरमें सुह्याजी पास मुकाम 'बडनगर' जिला उज्जैन मालवा

राची २० जुलई १९५४

महाशय

आपकी भेजीहुई एक प्रति शिवावावनी और एक प्रति घटसर्पेरकाव्यकी मिस्री अनेक धर्मग्रन्थ देताहूँ अब एक प्रति शिवराजभूषणभी कृपा करके भेज दीजिए। ये प्राचीन ग्रन्थप्रकाश करनेके कारण आपको अनेक धर्मग्रन्थ देताहूँ और

Srong Dt Bhopal

भगवतस्य जे श्रीकृष्ण पालागनदाम के प्रथम आपके तर्फसे १ पुस्तक नू०
 स्तो० २ भाग कि० ३० गगाय हजारो धन्यवाद पुस्तक हातमें लेते आपको
 देतेहैं अब विनति हे के चौरासी वर्षणवर्षी घातार्की पुस्तक जकी कि०
 ५॥ हे सुरत कीरपा कर नीचे पतेपर खाते करोगे वी पो मा

चुनीलाल मुखरालाल गुजराती मु० सिरॉज जिला भोपाल

I am very glad to state that Mr Govardhandass
 Laxmidass has for the last few years employed his time
 and energy in publishing rare and useful works in the
 Hindi, Marathi and Sanskrit language I hope he con-
 tinues his useful labours long and obtains public support
 that he deserves

M G DESHMUKH,

B Sc, B A M D, Justice of the Peace,
 Fellow of the University and Syndic in the
 Faculty of Arts, Bombay

Bombay, 18th September 1893

GOVLRDHANDASS LAXMIDASS Fsq

Bombay India

SMITHSONIAN INSTITUTION

UNITED STATES NATIONAL MUSEUM

S P JANGLY Secretary G BROWN GOODE Assistant

Secretary, in charge of U S National Museum

Washington, March 20, 1896

Dear Sir,

I have much pleasure in acknowledging with thanks,
 the receipt of the valuable work "Anand Ramayan"
 which you have been so good as to send to the National
 Museum, through the courtesy of Mr Valentine

Very respectfully yours

CYRUS ADLER, Librarian

SHAIKH MEMON STREET,

Bombay, 16th June, 1897

This is to certify that I have known shett Govardhan

भयो फेर श्रीदक्षीनंशनजीको विग बरया करि बात अजद भवो धीमदुरमी
 आपसी आगु वही करे हमेना एकीतीन पुस्तक छपाया करो और हम आपसे
 चौराशी घण्टायकी घाती गुमारा कारखपर लिख ना है सो पुस्तक और
 पठित गइलकी घर्पटिप्यर्णा १० मती करक भेजती छदाबिर पुस्तक
 दी होव ता टिपणा भज्या पैया उपरका गुमरग्याय मगाय कीबिधे यह विधि

२० आपसी सेवक

रुष्णदास हीरजी क यथायोग्य वाचोगे ता ५ पुत्रीक १८९४

साधनी मयाई गुम सुगो भाद श्रीगोवर्धनदासजी लक्ष्मीदासजी जोय
 श्रीधामगाम भुरामरागयण घोंगीको भगवतगुणरय मं जो वगद १ आपको काल
 रोज आयो तान पुस्तक १० की पाग बेजीया पुगेहे पुस्तक हन रल परगो मगाके
 दरया करे विग बात आदम हुवा धन्य आपरो हे सो आप हमगारिगे जोऊक
 उपर येगी कृपा कीनी अन्धकीक दरसन आपरो कराये हन आपको यहाई कांदा-
 ताई लीखे आप जसी नामा आग निउतेथे जिमी मुजब पुस्तक तीयाग हुवे हे
 ओर हमने आपको पत्र हू दायो ताने पुस्तककी जलदी लीगा तब आपका परिचरम
 हुवा तां माफ करोग हमनो आपको कारठ आये तापी जलदी जादे जीवापी पेउतो
 लीगा नही थाका हमरा कगुरमाफ करागे ओर कृपा रागो तंमी सदायवण राखोग,

ओर आपन श्रीमुकुन्दरायजीकी याताभो काम चालू लीखा या जानी पुस्तक
 ५ को नाम हमरो हासल करदीजा दाये चार दिनमें आपका २० भनदेवगे पुस्तक
 तीयाग हुवस २० पुस्तक मगाया आप कोईनी पुस्तक पुष्टीमारगको
 छपायो ताही सपर हमको लीग दीजो कृपापत्र दीजो संवत् १९५२ का अगाड शु
 १५ ओर सब भोन सुदर हे बडाई काहांतक लिखीये

खलि श्री गोंव मुर्हानगरे गुमव्यागे तयमये विराजमान सफलगुणगणालकृतेपु
 सवविद्वज्जनपदशिरोमणा सहायमालायक परमवर्णवेषु निरोमणी दिशदिशविख्यातेपु
 श्रेष्ठबुद्धिवान गोवर्धनदास लक्ष्मीदास वैष्णवयोग्य लिखत श्री अमरपुरलना से
 गुलामुमलपोपलि की जैधोकृष्ण वाचोगे अपरेव समाचार वाचो पुस्तक १ भाग
 २ जिसने वसेतवमारहे गो पुस्तक १ हमको भेजदना जरूर आरयानोका पुस्तक
 छोग आन १० जो होव सो भेजना फक्त मूल टिप २ सं १९५५ की भेजती
 जुमले पुस्तक २ भेजने जरूर मु आमदपुर लया ऐशन सादिकायाद जि
 घहावलपुर पास पोपलिगुलामुमलशीतलमल कोमिरे

मिति फाग वदी ६ तांति संवत् १९५४

class Luxmidass for the past fifteen years as a respectable and well-conducted Bhattin gentleman. The success of his various publications of old and unknown Sanskrit Books is in a great measure due to his indefatigable and continued researches. Mr Goverdhandass has thereby placed into a deep debt of obligations, the Hindu public in general and the Vaishnava sect in particular.

I wish Mr Goverdhandass every success in future in his Career as a Publisher of antique Books and sincerely trust to see his labours early appreciated by the leaders of his sect so conspicuously known for their munificence in the cause of encouragement and spread of the doctrines of the holy '*Pushti Manga*'

HARISCHANDRA N TOOLAJI

Late Clerk

Police Commissioner &

Bombay

EXTRACT FROM THE ANNUAL REPORT ON NATIVE PUBLICATIONS FOR THE YEAR 1895

"RELIGION — *Brihatstotra Saritsugarasya Drutya bhagah* or a large collection of hymns, is a handy conglomeration of 207 words by the founder and succeeding spiritual heads of the Vallabha sect of Vaishnatism on the daily duties of the sect, precepts or directions of the religious law, religious decisions, &c

विज्ञापन

ऊपर प्रकाशित धन्यवादपत्रोंकी भाषा यथाप्रत रखीगई है, वास्ते पाठक महाशय कोइ बातकी शक न करै। मैं पत्र प्रेरकोंके उपकार आजम तक नही भुलंगा

आपका अनुचर

गोवर्धनदास लक्ष्मीदास

